आभार : डा.देश दीपक.

मई १९६६

www.kissekahani.com

टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन

पराग

बच्चों का मधुर मासिक

४५ पैसे

औरंगाबाद होटल के एयरकण्डीशन्ड कमरे की शीतलता में आराम कीजिये

Aurangabad HOTEL

दुनिया की मशहूर अजन्ता और एल्लोरा गुफाओं के प्रेरणात्मक पर्यटन के बाद औरंगाबाद होटल आपको शांति और आराम देगा। इसके सभी कमरे सुसज्जित और आरामदेह हैं जिसमें तीन कमरे एयरकण्डीशण्ड हैं। उत्तम सेवा और स्वादिष्ट भोजन के साथ यह सभी पर्यटकों के लिए एक आदर्श वातावरण प्रस्तुत करता है।

विवरण और आरक्षण के लिये लिखें :

मैनेजर,

औरंगाबाद होटल
औरंगाबाद

तार :
"RAILHOTEL" औरंगाबाद
फोन : ३२९

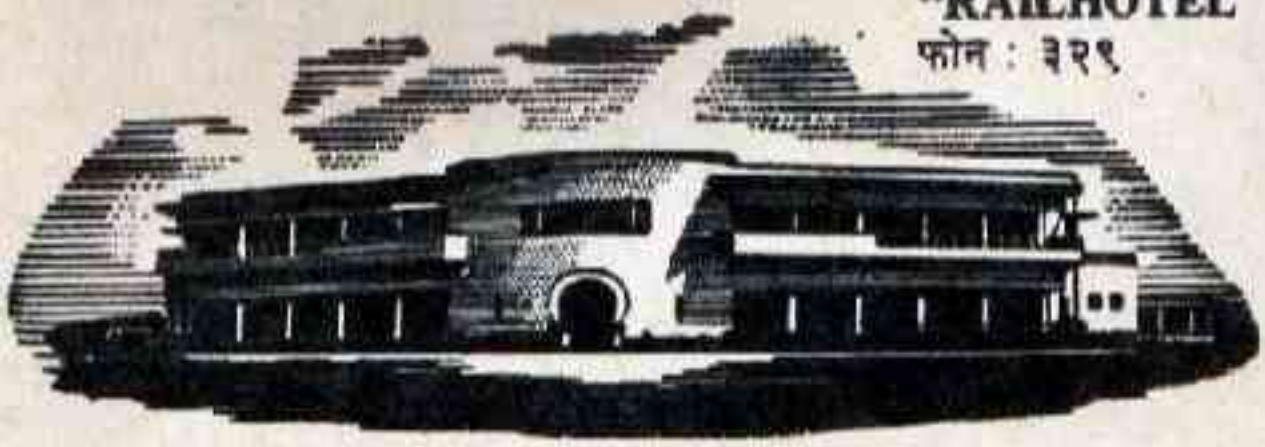

प्रचारक :

मध्य रेलवे

www.kissekahani.com

पराग

मई १९६९
९९वां अंक

वार्षिक शुल्क :
स्थानीय रु. ५·४०,
डाक से रु. ५·६०

अनुक्रमणिका

मुखपृष्ठका चित्र—
● सिर कटा देंगे चाय पी पीकर : राज : १

मजेदार कहानियां—
● जब खरगोशकी नानी मर गई : द्रोणवीर कोहली : ८ ● मैं तेंदुयेका बच्चा हूं : कैलाश भारद्वाज : ११ ● अपराधी कौन? : प्रियदर्शी प्रकाश : १२ ● डायरीकी हाय : विनोद सप्रा : १६ ● आओ मेरी खिड़कीमें बैठो : आशालता : २६ ● मक्खी-चूस सम्मेलन : पी. के. हरिवंश : २८ ● 'नाइन' : हरिश्चंद्रसिंह : ३१ ● वे बचपनके दिन : सोमा वीरा : ३९ ● नोटिस : जरासंध : ४० ● एक खिलौनेकी बात : हमीदुल्ला खां : ४४

चटपटी कविताएं—
● द्वार खोलो : बिलासबिहारी : ९ ● नया जमाना : सुधाकर दीक्षित : २७ ● मोटूराम : राष्ट्रबंधु : ४८ ● कूड़ेराम-शोभाराम : सरस्वतीकुमार 'दीपक' : ५६ ● तीन गप्पी : नारायणप्रसाद अग्रवाल ● कलकत्तेकी सैर : चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक' : ५७

मनोहर कार्टून-कथाएं—
● छोटू और लंबू : शेहाब : २४

धारावाही उपन्यास—
● बुद्धूमलके कारनामे : निकोलाई गोगोल : २०

अन्य रोचक सामग्री—
● खून भरी मांग : ४ ● कबूतर कैसे उड़ा : ५ ● मैट्रिकुलेशनके बाद क्या करें? (लेख) : देवेश ठाकुर : १८ ● ताजमहल (रंगीन चित्र) : चंद्रकांता : ३२ ● मिथिला के बीरबल—गोनू झा : शैलकुमारी : ३६ ● रवींद्रकी स्मृतिमें प्रकाशित डाक-टिकट : गजराज जैन : ४९

स्थायी स्तंभ—
● कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक : ६ ● छोटी छोटी बातें : सिम्स : २३ ● खेल-कूद—फुटबालकी कहानी—५ : हरिमोहन : ३८ ● बच्चोंकी नई पुस्तकें : गुप्त तथा देवसरे : ५१ ● खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार : ५२ ● रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४९ : ५९

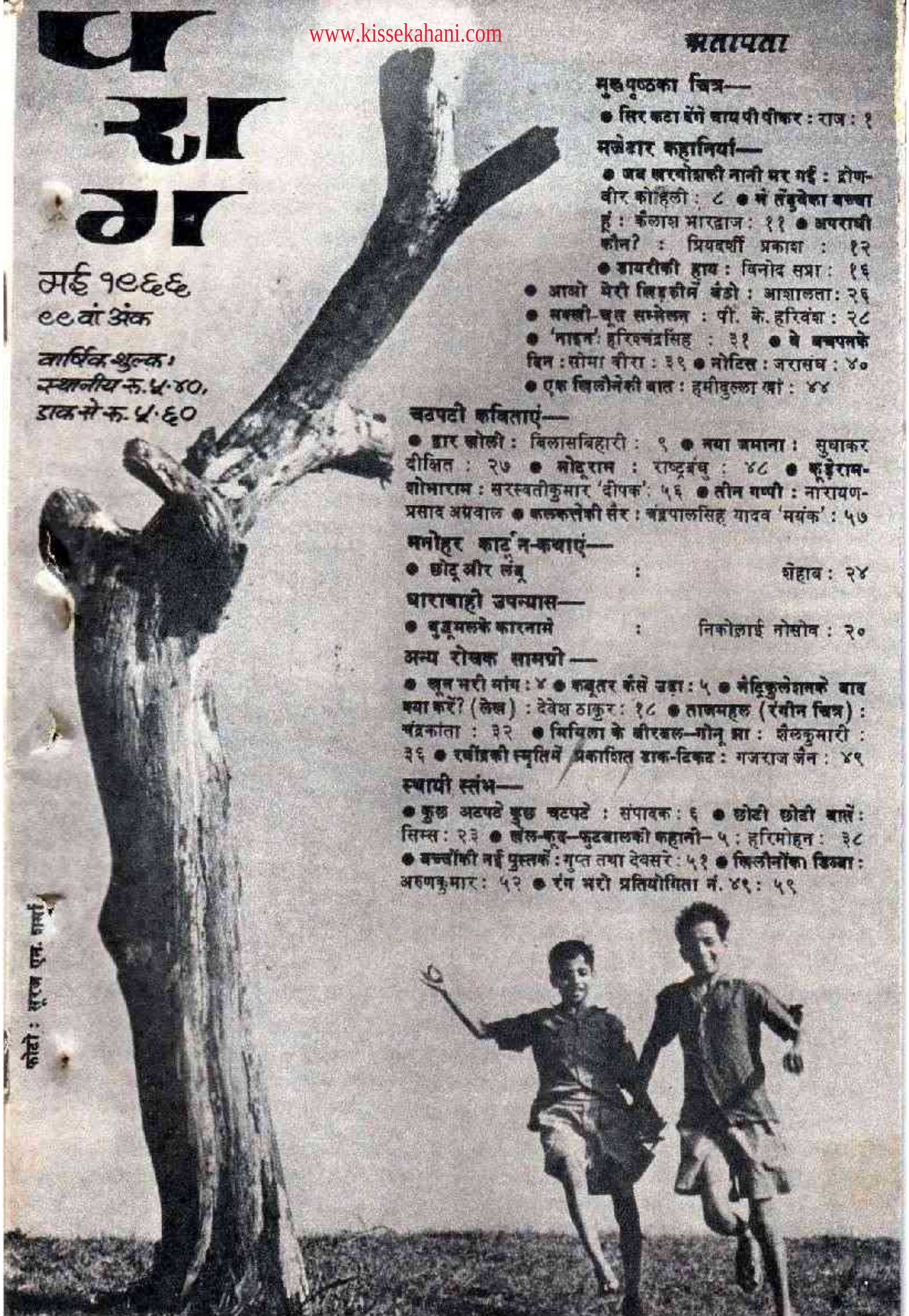

फोटो : सूरज एन. गर्ग

दृश्य निर्माण : सुशीला रजनी पटेल

खून भरी मांग!

कन्नौजका राजा जयचंद और दिल्लीपति पृथ्वीराज आपसी दुश्मन थे। किंतु राजा जयचंदकी कन्या संयुक्ता पृथ्वीराजको अपना पति बनाना चाहती थी। राजा जयचंदने संयुक्ताका स्वयंवर रचा और देशके बड़ेसे बड़े राजाओंको उसमें बुलाया, किंतु पृथ्वीराजके पास निमंत्रण नहीं भेजा। निमंत्रण भेजा संयुक्ताने गुप्त रूपसे। राजा जयचंदने पृथ्वीराजका अपमान करनेके लिए सभाके द्वारपर उसकी एक प्रतिमा दरबानके रूपमें खड़ी की। संयुक्ता वरमाला लेकर सभामें उपस्थित राजाओंके बीच चलती हुई द्वार तक आई। उसने पृथ्वीराजकी मूर्तिको वरमाला पहना दी। पास ही छिपे पृथ्वीराजने संयुक्ताको उठाकर घोड़ेपर बिठाया और घोड़ा दिल्लीकी ओर दौड़ा दिया।

पीछा करने वालोंसे भिड़नेके लिए रह गए दिल्लीके कुछ चुने हुए सरदार—छद्मवेशमें। सब एक एक करके कट गए, किंतु संयुक्ता दिल्ली पहुंच गई। उसकी मांग ही मानो उन योद्धाओंके रक्तसे भरी गई। राजा जयचंदके मनमें इस अपमानकी ऐसी आग सुलगी कि उसने विदेशी आक्रमणकारी मुहम्मद गोरीके साथ पृथ्वीराजके विरुद्ध सांठगांठ कर ली। गोरी और जयचंदकी सम्मिलित सेनाओंने दिल्लीकी सेनाओंको काट डाला और पृथ्वीराज मारा गया।

आज भी देशद्रोहियोंको जयचंदके नामसे पुकारा जाता है। ●

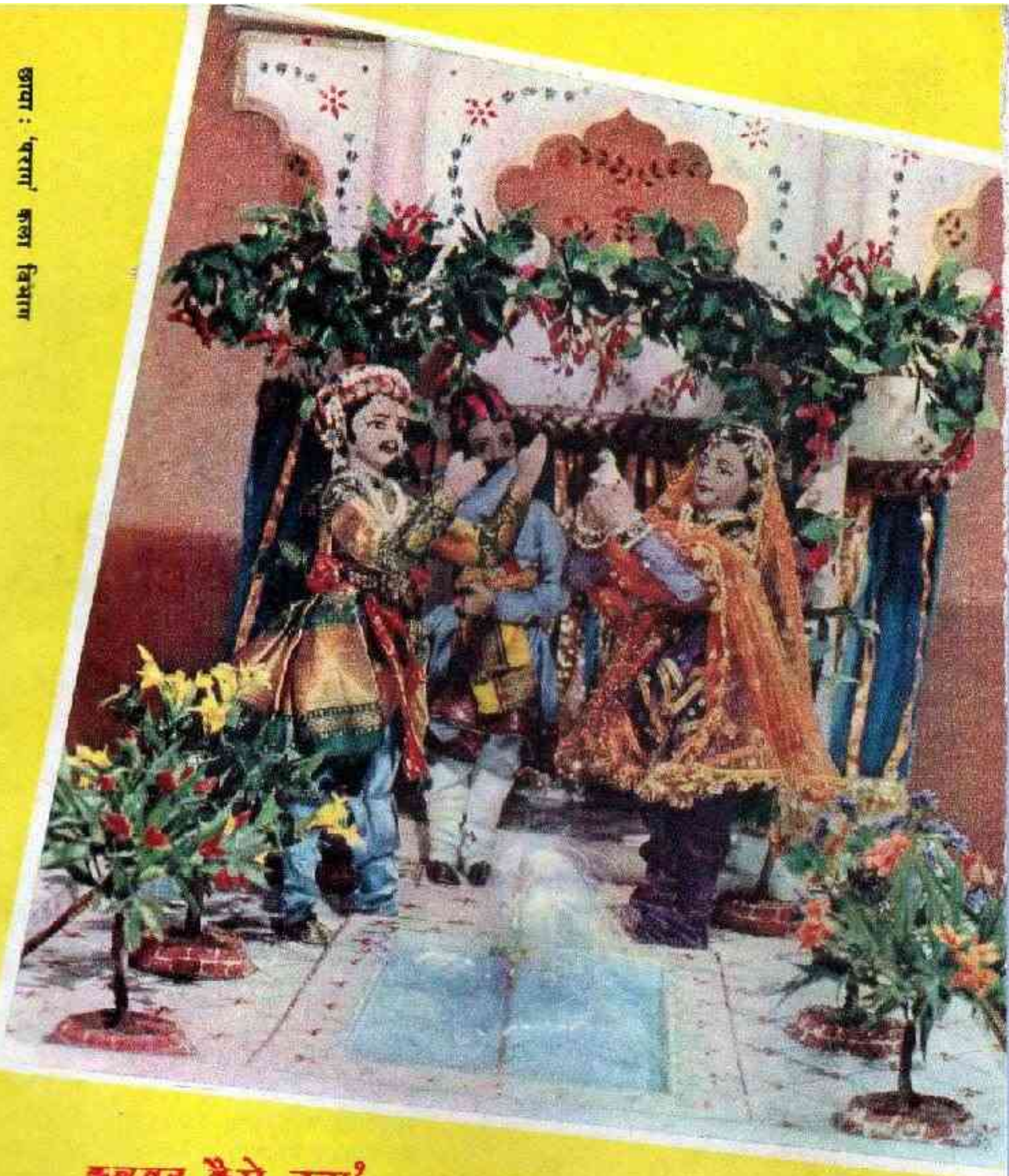

आया : 'परग' कला विभाग

कबूतर कैसे उड़ा?

नूरजहांका बचपनका नाम था मेहरुन्निसा और जहांगीरका सलीम। बागमें कबूतरबाजी हो रही थी। अचानक शहजादे सलीमकी महलमें पुकार हुई। हाथके दो कबूतर मेहरुन्निसाको थमाकर शहजादा महलमें चला गया। लौटकर आनेपर उसने देखा कि मेहरके हाथोंमें एक ही कबूतर है। उसने पूछा, "दूसरा कबूतर कहां गया?" उत्तर मिला, "उड़ गया।" नाराज होकर शहजादा बोला, "उड़ गया! कैसे उड़ गया?" "ऐसे," सीधा-सा जवाब मिला और मेहरने दोनों हाथ ऊंचे करके दूसरे कबूतरको भी उड़ा दिया।

सलीम मेहरका मुंह ताकता रह गया और मेहर हंस दी।

सलीमने निश्चय किया कि जो लड़की उसके प्रश्नका इतना सीधा-सच्चा उत्तर दे सकती है, वही उसके बादशाह होनेपर उसकी मल्का बनेगी। लेकिन अकबरको यह संबंध स्वीकार न था। मेहर उसके मामूलीसे सरदारकी बेटी थी। उसने मेहरका विवाह शेर अफगन नामक एक सरदारके साथ करके उसे बूरबराज इलाकेमें भेज दिया।

बादशाह बननेपर सलीमने शेर अफगनको मरवा डाला और मेहरुन्निसाके साथ निकाह करके उसे नूरजहांका पद दिया।

कुछ अटपटे चटपटे

राजेश्वरप्रसाद सिन्हा, सासाराम (शाहाबाद) :

आपकी अक्ल कब जवाब दे देती है?

हमारी अक्ल हमेशा जवाब देती है!

शिवकुमार सेक्सरिया, कलकत्ता–२९ :

कोई बिना बुलाए नहीं आता, फिर दुःख ही क्यों बिना बुलाए आ जाता है?

क्योंकि उस बेचारेके लिए हमेशा ही निमंत्रण-पत्र कम पड़ जाते हैं!

कु. उमा टंडन, नैनीताल :

यदि पहाड़ोंपर बर्फके स्थानपर चीनी बरसती, तो क्या होता?

सारे बच्चे नेफा और लद्दाखपर टूट पड़ते आइसक्रीम खानेके लिए!

सुधीर नामदेव सावंत, बम्बई–१२ :

बरसात किसे अच्छी लगती है?

छाते और रेनकोट बनाने वालोंको!

धर्मवीर साध, फर्रुखाबाद :

आप मझे इस महंगाईके जमानेमें भी 'पराग' खरीदनेको बाध्य क्यों करते हैं?

जिससे बुद्धि और ज्ञान तुम्हें महंगे न पड़ें!

ओमप्रकाश वर्मा, भरतपुर :

दिल भी अपना होता है और जबान भी अपनी, फिर दिलकी बात जबान तक क्यों नहीं लाई जा सकती?

क्योंकि ऐसा करते ही गधेपर डंडे पड़ने शुरू हो जाते हैं!

केशरीप्रसाद, सीतापुर :

जब मेरे पिताजी मझे शाबाशी देते हैं, तो मिट्टीका शेर क्यों कहते हैं?

जिससे तुम खुशीके मारे दहाड़ने न लगो!

लकड़ीपर कुल्हाड़ी चलाने वालेको लकड़हारा कहते हैं, लेकिन अपने पैरोंपर आप कुल्हाड़ी मारने वालेको क्या कहते हैं?

अकलका कुल्हड़!

दिलीप स्नेही, नई दिल्ली–१५ :

मच्छरको मलेरिया क्यों नहीं होता?

क्योंकि डाक्टरकी तरह वह भी स्वयं अपनेको इंजेक्शन नहीं देता!

उदयप्रतापसिंह सोलंकी, आगरा–२ :

खुदा गंजेको नाखून क्यों नहीं देता?

जिससे वह नेल-पालिशका शौक न पाल बैठे!

प्रेमवती गुप्ता, अहमदाबाद–१७ :

मनुष्यके शरीरका कर तथा राज्यका लगाया हुआ कर, इन दोनोंमें क्या फर्क है?

राजकर यानी तीसरा हाथ, जो शेष दोनों हाथोंकी कमाईके बोझसे मनुष्यकी जेबोंको बचाए रहता है!

मृत्युंजयकुमार, पटना–१ :

कहते हैं 'सुनी-सनाई बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए', तो फिर हम रेडियोके समाचारोंपर क्यों विश्वास कर लेते हैं?

उन रेडियो समाचारोंपर नहीं करते, जिनके मीटर झूठ बोलनेके लिए विख्यात हैं!

हरदेव सरल, हिसार :

मूर्ख बननेमें कब आनंद मिलता है?

जब बुद्धिमान दुखी दिखाई पड़ते हैं!

★ अनुराग अरोड़ा, पी. ११०, सी. आई. टी. रोड, कलकत्ता–१४ :

क्या कारण है कि हम सब 'फौज' शब्दका व्यवहार स्त्रीलिंगमें करते हैं, जबकि उनमें लड़ने वाले अधिकतर पुरुष ही होते हैं?

इस मान्यताके कारण कि विकटसे विकट शत्रु भी स्त्रीसे अवश्य डरता होगा!

विजयसिंह बैद, बीदासर :

अंगूर और लंगूरमें क्या अंतर है?

हो सकता है कि लंगूर तुम्हें काट खाए, पर अंगूर ऐसा कभी नहीं कर सकता!

सुरेशचंद्र, रिवाड़ी (पंजाब) :

पुलिसमैन और चोरका क्या संबंध है?

रोजी-रोटीका—चोर न हो, तो पुलिस भी गायब और पुलिसकी नौकरी भी!

अरुणकुमार महाजन, पठानकोट :

मनुष्य यह जानते हुए भी कि उसके पूर्वज बंदर थे, बंदर कहे जानेपर क्यों चिढ़ जाता है?

क्योंकि उसकी दुम गायब हो चुकी है!

गोपाल शिवदासानी, लश्कर (ग्वालियर) :

भाग्यकी रेखाएं कौन बदल सकता है?

जिसे अपने आपको बदलना आता है!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

यशवंत कुलकर्णी, इन्दौर :

यदि आदमीकी नाकमें बालकी जगह घास उगने लगे, तो क्या होगा?

होना क्या है—जो तुम्हारे लिए नाकके बाल हैं, वे मक्खी-मच्छरके लिए घास-फूस हैं!

अशोक अग्रवाल, वाराणसी–५ :

इस महंगीके समय हमें जरूरतकी चीजें खरीदनेमें पैसा खर्च करना चाहिए, तो हम 'पराग' क्यों खरीदें?

ठीक है—'पराग' केवल बुद्धिमान बच्चोंकी जरूरत पूरी करता है!

कु. सरला सैनी, इटारसी :

दुनियामें बेईमान मनुष्य न होते, तो आज क्या होता?

ईमानदारीकी बदहज्मी!

कु. सरस्वतीसिंह, लखनऊ :

आजकल लड़के व लड़कियां चुस्त कपड़े पहनना क्यों पसंद करते हैं?

कपड़ेकी तंगीके कारण!

कु. अन्जुम जाफरी, गोरखपुर :

सरकार भूख हड़ताल करने वालोंसे घबराती क्यों है, जबकि उनके द्वारा भूख हड़ताल करनेसे देशकी खाद्य-समस्या सुधरती ही है?

सरकार भूख हड़ताल करने वालोंसे नहीं, उनका ढोल पीटने वालोंसे घबराती है!

अरुणकुमार ब्रह्मण, जालन्धर शहर :

क्या अनुशासन गुलामी है?

यदि अनुशासनहीनताको आजादी माना जाए, तो!

सुभाषचंद ओसवाल, जबलपुर :

मां बेटेको जन्म देती है, किंतु नाम बापका चलता है—ऐसा क्यों?

जिसकी लाठी उसकी भैंस!

विजयकुमार लिमये, कोतमा कालरी (शहडोल):

यदि सारा संसार एक हो जाए, तो आप प्रधान मंत्री पदके लिए किसे वोट देंगे?

जो सारे संसारको 'एक आंख' से देखता होगा!

राजीव वैद, जम्मू (तवी) :

हम अपनी एक दिनकी पढ़ाई सुरक्षा-कोषमें देना चाहते हैं। आपका क्या खयाल है?

नहीं, इतना बड़ा दान न दो कि स्वयं ही 'कंगाल' हो जाओ!

पहले हमारे गुरु 'ग' से 'गणेश' पढ़ाते थे, लेकिन अब 'ग' से 'गधा'—क्या कारण है?

कारण यह कि गणेशजी पढ़-लिखकर पाठशाला छोड़ गए, अब जो रह गए सो पढ़ेंगे!

विनयकुमार रघुवंशी, जयपुर :

अगर गधेका दिमाग मनुष्य जैसा होता, तो?

तो बहुतसे मनुष्योंके दिमाग गधों जैसे न होते!

विज्ञानकी इतनी तरक्की होनेपर भी मनुष्य सुखी नहीं है—क्यों?

क्योंकि लोग सुखी न रहनेके विज्ञानमें अधिक पारंगत हैं!

★ अशोककुमार जाजू, द्वारा अशोककुमार शिवकिसनजी जाजू, पो. आर्वी, जिला वर्धा :

पाप किसे कहते हैं?

'पापड़' में से 'ड़' निकाल देनेपर जो बच रहता है!

घनश्याम गर्ग, बरेली :

क्या आपके पास कोई ऐसी दवा है जिसके सेवनसे मनुष्य झूठ बोलना छोड़ देता है?

दवा तो है, मगर उसके साथ 'लालच' का परहेज है, जो कोई रख नहीं पाता!

सुरेश चांदवानी, लखनऊ :

दुनियामें सबसे बड़ा बर्तन कौनसा है?

आदमीकी खोपड़ी!

शीवेन्द्र श्रीवास्तव, भिलाई नगर :

कहते हैं कि ईंटका जवाब पत्थरसे देना चाहिए—यदि मारने वालेने पत्थरसे मारा, तो?

तो उसने तुम्हारी ईंटका सही जवाब दिया!

विजय सक्सेना, भोपाल :

दुःखकी घड़ियां कौनसे देशमें बनती हैं, और कहांसे खरीदी जा सकती हैं?

यह एक कुटीर उद्योग है और ये हर कहीं बड़े सस्तेमें मिल जाती हैं!

गजेन्द्रसिंह, हरदा :

घूस और घूंसामें क्या अंतर है?

घूस नरम-दिल होती है, घूंसा जरा कड़े स्वभावका होता है! ●

www.kissekahani.com

जब खरगोश को भूख लगी!

कहानी

किसी समय बड़ा भयानक सूखा पड़ा। पानी न मिलनेसे मनुष्य, पशु-पक्षी—सब छटपटाने लगे।

तब एक खरगोश और एक हिरनने मिलकर कुंवां खोदनेका फैसला किया। हिरनने कहा, "खरगोश भाई, चलो, खाना-पीना खतम करके काम शुरू करें।"

खरगोश बोला, "नहीं, भाई हिरन, पहले काम शुरू करते हैं, जब थक जाएंगे, तब चैनसे बैठकर भोजन करेंगे।"

हिरन मान गया और बोला, "ठीक है। चलो, खाने-पीने की चीजें कहीं छिपाकर रख देते हैं, बादमें आकर खाएंगे।"

अपनी खाने-पीनेकी चीजोंको एक जगह छिपाकर वे चल पड़े और नियत जगहपर जाकर कुंवां खोदने लगे। अभी थोड़ा समय ही बीता था कि खरगोशने काम छोड़ दिया और कहा, "देखो, शायद मेरे घरवाले मुझे बुला रहे हैं।"

"नहीं, मुझे तो कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ती," हिरनने कहा।

"नहीं, वे मुझे बुला रहे हैं। मुझे अभी जाना चाहिए। आज मेरी बीवी बच्चे देगी। मुझे उनके नाम रखने हैं।"

हिरन बोला, "तो ठीक है। जाओ, पर जल्दी लौट आना।"

खरगोश दौड़कर उस जगह पहुंचा, जहां उन्होंने अपनी-खाने-पीनेकी चीजें छिपा रखी थीं। जल्दी जल्दीसे कुछ खाकर वह कामपर लौट आया।

हिरनने उससे पूछा, "पहले बच्चेका क्या नाम रखा है तुमने?"

"थोड़ा!" खरगोशने कहा।

"बड़ा विचित्र नाम है, भाई!"

फिर दोनों काममें जुट गए। थोड़ी देर बाद खरगोश फिर बोला, "शायद मेरे घरवाले मुझे फिर बुला रहे हैं। मुझे तुरंत जाना चाहिए।"

हिरण खड़ा देखता रह गया और खरगोश भागता हुआ फिर उसी जगह पहुंचा, जहां खाने-पीनेकी चीजें रखी थीं। उसने पेट-भरकर खाया-पिया और बचा-खुचा सामान ढककर लौट आया। हिरनने पूछा, "अब दूसरे बच्चेका क्या नाम रखा है?"

"अधूरा!"

"अरे, यह भी कोई नाम है! अच्छा, छोड़ो फिजूलकी बातें। आओ, काममें हाथ बटाओ।"

थोड़ी देर उन्होंने फिर काम किया। पर, खरगोश फिर कहने लगा, "सुनो, वे लोग मुझे फिर बुला रहे हैं। इस बार मैं बहुत जल्दी लौट आऊंगा।"

खरगोश दौड़ा दौड़ा गया और बचा-खुचा सारा माल हजम करके लौट आया। हिरनने पूछा, "तीसरे बच्चेका क्या नाम रखा है?"

खरगोशने डकार लेते हुए कहा, "पूरा!"

"बड़े अजीब नाम रखते हो, तुम लोग!"

दोनों फिर काममें जुट गए। जब सांझ हो गई, तो काम अगले दिनपर छोड़कर वे चल पड़े। रास्तेमें हिरनने कहा, "भाई खरगोश, भूख-प्यासके मारे मेरी तो जान निकली जा रही है। जल्दीसे जाकर खाना निकाल लाओ।"

जल्दीसे खरगोश उस जगह पहुंचा, जहां दोनों ने अपनी खाने-पीनेकी चीजें छिपाकर रखी थीं। बेचारा हिरन आशा लगाए बैठा था। तभी उसके कानोंमें खरगोशकी आवाज पड़ी, "अरे भाई हिरन, गजब हो गया! कोई चुड़ैल बिल्ली सारा माल उड़ा गई। देखो आकर जरा, सारे बर्तन-भांडे साफ पड़े हैं . . ."

हिरनकी हालत खराब हो रही थी। वह मन मसोसकर रह गया और भूखा-प्यासा ही जाकर सो गया।

अगले दिन, फिर उससे भी अगले और फिर उससे भी अगले दिन खरगोशने फिर यही चाल चली। इस तरह कई दिन बीत गए काम करते करते। बेचारा गरीब हिरन दिन-भर मेहनत करता और खरगोश चुपकेसे जाकर सारा माल उड़ा जाता। पर, सौ दिन चोरके, तो एक दिन साहका। हिरन ताड़ गया कि खरगोश ही हर रोज सारा माल उड़ा जाता है। एक दिन वह बोला, "मैं नहीं मानता कि बिल्ली आकर हमारी चीजें खा जाती है। जरूर तुम ही रोज रोज जाते हो और जाकर चोरी चोरी सब खा लेते हो।"

खरगोश गुस्सेमें भरकर बोला, "तुम मुझे चोर बताते हो। इतने सच्चे हो, तो चलो, लो जुलाब।"

हिरनने कहा, "ठीक है, हम दोनों जुलाब लेते हैं। जिसकी पूंछ पहले गीली हो जाएगी, वही

'द्वार खोलो'

देशके भावी सपूतो, तुम नयनके द्वार खोलो!
जगमगाता आ रहा है
पूर्वसे फौलाद सूरज;
तुम जगतके कर्म-पथपर शौर्यकी किरणें संजोलो!

जागरण के गीत गाते,
द्वार पर दस्तक लगाओ।
हर हृदय के पास जाकर
मुंदी पलकों को जगाओ।
गा रहे निज नीड़ से,
ये भोर में पाखी प्रभाती;
भक्तिसे इस देशकी तुम वंदनाके शब्द बोलो!
देशके भावी सपूतो, तुम नयनके द्वार खोलो!

जागते रहना हमेशा
और लोगों को जगाना।
शत्रु सीमा पर न आए,
रात-दिन पहरे लगाना।
आज ऐसे संकटों में,
भूल कर सब भेद अपने—
एकताके फूलसे तुम देशकी माला पिरो लो!
देशके भावी सपूतो, तुम नयनके द्वार खोलो!

सांसकी अंतिम घड़ी तक,
तुम नहीं रुकना कभी भी;
शत्रु के भय से न उसके
सामने झुकना कभी भी।
वीर की संतान हो तुम,
यह हमेशा याद रखना—
पूर्वजोंकी जिंदगीके मंत्रसे तन-मन भिगो लो!
देशके भावी सपूतो, तुम नयनके द्वार खोलो!

—बिलासबिहारी

'पराग' के लिए लिखने वालों से

- यदि आप अपनी रचना खोना चाहें, तो उसकी प्रतिलिपि कभी न रखिए।
- यदि आप अपनी रचना वापस मंगाना न चाहें, तो उसके साथ वापस लौटाने-के लिए पर्याप्त डाक टिकट न भेजें। हम आपका मतलब समझ जाएंगे।
- यदि आप चाहते हैं कि संपादक आपकी रचना न पढ़े, तो उसे गहरी स्याहीके रिबनसे टाइप करानेका या कागज-की एक ओर स्पष्ट अक्षरोंमें लिखनेका कष्ट मोल न लें।

दोषी समझा जाएगा।"

"ठीक है," खरगोशने कहा।

सो, खरगोशने भी और हिरननेभी जुलाब लिया। दोनों जाकर अपने अपने बिस्तरोंपर लेट गए। जब खरगोशपर दवाईका असर होने लगा, तो उसने घबराकर कहा—"हिरन, देख तेरी पूंछ गीली हो रही है!"

"नहीं, कौन कहता है?"

"हां, मैं कहता हूं।"

"मेरी हो न हो, पर तेरी पूंछ जरूर गीली हो गई है। देख, जरा हाथ लगाकर!"

सचमुच, खरगोशकी पूंछ गीली हो रही थी। यह देखकर वह डरके मारे थर थर कांपने लगा। पर हिरनने कहा, "खरगोश, डरो नहीं। मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा। पर एक शर्त है—आज से तुम मेरे कुंवेंका पानी भूलकर भी न पीना और मेरी-तुम्हारी दोस्ती एकदम खतम।"

उस समय तो खरगोश अपना-सा मुंह लेकर चला गया, पर चोरी करनेसे वह बाज नहीं आया।

●

एक दिन एक पक्षीने आकर हिरनसे कहा कि खरगोश रोज आकर तुम्हारे कुंवेंका पानी पीता है। हिरनको बड़ा गुस्सा आया। सोचने लगा—'यह बदमाश इस तरह नहीं मानेगा। मैं इसे सीधा करता हूं।'

सो हिरनने लकड़ीका एक जानवर बनाकर कुंवेंके पास जमीनपर रख दिया और उसपर लासा लगा दिया।

जब खरगोश वहां पानी पीने आया, तो वहां किसी और जानवरको बैठा देखकर बड़ा लाल-पीला हुआ कि यह कौन है जो यहां रोज रोज पानी पीने आता है।

वह अकड़कर उसके सामने जाकर खड़ा हो गया और गुस्सेमें भरकर बोला, "क्यों जी, कौन हो तुम? यहां क्यों बैठे हो?"

पुतलेने कोई जवाब नहीं दिया।

इससे खरगोश और भी गुस्सेमें भरकर बोला, "अच्छा, तेरी यह मजाल! बोल, नहीं तो ऐसा झापड़ मारूंगा कि..."

गुस्सेमें आकर खरगोशने दाएं हाथसे पुतलेके मुंहपर एक जोरका झापड़ मारा, तो उसका हाथ लासेमें चिपक गया।

"अरे! यह क्या?" खरगोश हैरान होकर हाथ छुड़ानेकी कोशिश करने लगा, "छोड़ दे मेरा हाथ, वरना...वरना एक और झापड़ आता है..."

कहते कहते उसने दूसरे हाथका भी एक झापड़ रसीद कर दिया। वह हाथ भी पुतलेके साथ चिपक गया।

"अरे! अरे! मैं कहां फंस गया?" खरगोश चिल्लाया। फिर उसे गाली-गलौज सुनाने लगा, "मुझे छोड़ दे, नहीं तो ऐसी लात मारूंगा, कि..."

कहते कहते उसने जो दाईं लात मारी, तो वह भी लासेमें जाकर चिपक गई। अब तो खरगोश-के क्रोधकी सीमा न रही। इस बार उसने बाईं लात मारी, तो वह भी चिपक गई। फिर घबरा कर उसने पहले सिर और फिर पेटसे उसे मारा। इससे खरगोशका सिर और पेट भी पुतलेके साथ चिपक गए।

अपनी यह दशा देखकर खरगोश डरके मारे जोर जोरसे चीखने-चिल्लाने लगा। आवाज सुनकर हिरन दौड़ा आया। हिरनको देखते ही खरगोशकी नानी मर गई।

उसकी यह दुर्दशा देखकर हिरन उसपर हंसने लगा। फिर उसने खरगोशको पकड़कर उसके कान और पूंछ काटकर उसे सारे जंगलमें घुमाकर छोड़ दिया। (कांगो की लोक-कथा: प्रस्तुतकर्ता: द्रोणवीर कोहली)

कहानी

मैं तेंदुवे का बच्चा हूं

मुझे पड़ोसके बच्चे 'टाइगर' कहते हैं, मगर मैं टाइगर नहीं, तेंदुवा हूं। मेरी गिनती शेरोंमें ही होती है। दुम सहित तेंदुवेकी लंबाई करीब साढ़े छह फुट होती है। मेरी लंबाई अभी दो फुटसे भी कम है, क्योंकि मैं लगभग दो महीने का हूं।

महीने भरकी बात है। मेरी मां शिकार ढूंढने गई हुई थी और मैं लंगूरके बच्चोंके साथ खेल रहा था। खेलते खेलते हम लोग सड़कपर निकल आए।

वहां कुछ मजदूर लोग सड़ककी मरम्मत कर रहे थे। उनमेंसे एक आदमीने लंगूरके बच्चों-को भगा दिया। जब मैंने भी भागनेकी कोशिश की, तो दो-तीन आदमियोंने मुझे घेर लिया और पकड़ना चाहा। मैंने काफी पंजे मारे, मगर मेरी एक न चली और मैं पकड़ा गया।

आजकल मैं एक आदमीके घरमें रहता हूं। वह मुझे बहुत प्यार करता है। बच्चोंकी शीशीसे दूध पिलाता है। इधर-उधर घुमाता है। अपने साथ सुलाता है।

अगर मैं किसीके साथ कोई शरारत करूं, तो मारता भी है। एक दिन मैंने उसके कुत्तेका कान नोच लिया। इसपर उसने मुझे मार मार-कर अधमरा कर दिया।

पास-पड़ोसके बच्चे भी मुझे बहुत प्यार करते हैं। मगर मेरा मन नहीं लगता। मुझे अपनी मां की याद आती है। उस जंगलकी याद आती है, जहां मैं लंगूरोंके साथ खेला करता था। फिर जो दूध मुझे पिलाया जाता है, वह मुझे पचता नहीं। मेरी तबीयत बराबर खराब रहती है।

कल डाक्टर नामके एक आदमीने मेरे शरीर-में एक बहुत ही चुभने वाली चीज लगाई थी। तबसे मैं और भी निढाल हो गया हूं। मेरी आंखों-की रोशनी भी कम हो गई-सी लगती है। मुझे अपने बचे रहनेकी अधिक आशा नहीं है।

न जाने ये बड़े अपने सारे अत्याचार हम बच्चों पर क्यों करते हैं?

—कैलाश भारद्वाज

कहानी

अपराधी कौन ?

www.kissekahani.com

एक घना जंगल था, जिसमें विभिन्न पशु-पक्षी काफी बड़ी तादादमें रहते थे। एक बार पशुओंके राजाने सभी जीव-जंतुओंको बुलाकर कहा, "तुम सब हिलमिलकर रहो। नियम और कानून मानकर चलो, तभी तुम्हें शिकारियोंके भयसे छुटकारा मिल सकेगा। इस बातका ध्यान रहे कि इस वनकी अपनी सीमाके भीतर हममें से कोई किसीपर आक्रमण न करे।"

वनके सभी प्राणियोंने राजाकी बात मान ली। राजाने वनके भूचर, नभचर एवं जलचर आदि प्रत्येक जीवको जुदा जुदा जिम्मेदारियां सौंपते हुए कहा, "जिस किसीपर संकट आ जाए, वह तुरंत संकेत करे। इसके बाद शेष प्राणियोंको शीघ्र ही अपने कर्त्तव्यका पालन करना होगा। कर्त्तव्य-पालनमें अगर किसीने लापरवाही की, तो उसे इस वनसे निकाल बाहर किया जाएगा।"

इस व्यवस्थाके बाद वनमें शांति फैल गई। कोई पशु-पक्षी न आपसमें लड़ता और न बाहरसे ही उनपर कोई आक्रमण हुआ। इसका कारण यह था कि जिस किसीपर भी विपदा आती, संकेत पाते ही बाकी पशु-पक्षी अपने साथीको बचा लेते। वनके सिंह, बाघ आदि मांसाहारी पशुओंने भी अपने वनमें आहार लेना बंद कर दिया और दूसरे वनोंमें जाकर शिकार करने लगे। सारे वनके सबल और दुर्बल पशु-पक्षी अपने बाल-बच्चोंके साथ सुखपूर्वक रहने लगे।

उसी वनमें एक सियार हिरनके साथ रहता था। सियार पानीमें तैर सकता था और उसे मछलियां खाना बहुत भाता था। एक दिन प्रातः काल वह हिरनसे बोला, "बंधु, कई दिन बीत गए ताजा मांस खानेको नहीं मिला। आज बड़ी इच्छा हो रही है कि नदी-किनारे मछलियोंका भोज उड़ाऊं। मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं, जब तक मैं वापस न आ जाऊं, तुम इनकी देख-भाल करना।"

हिरनने उसकी बात मान ली।

सियारके चले जानेके थोड़ी देर बाद ही कठफोड़वा पक्षीकी आवाज गूंज उठी 'ठक्-ठक्! ठक्-ठक्!' यह एक प्रकारका युद्ध-घोष था।

युद्ध-घोष सुनते ही हिरन उन्मत्त होकर उछल पड़ा। जैसे जैसे युद्ध-घोष तीव्र होता गया, हिरनका उछलना-कूदना तेज होने लगा। इस उछल-कूदमें उसे यह भी भान न रहा कि नीचे सियारके कोमल कोमल बच्चे सो रहे हैं, जो उसके पैरोंसे दबकर मर चुके हैं। उसकी उछल-कूद तब समाप्त हुई, जब कठफोड़वाने अपनी

प्रियदर्शी प्रकाश

आवाज बंद कर दी।

इसी समय सियार भी खिन्न मनसे वापस आ रहा था। उसे एक भी मछली न मिल सकी थी। वह घरमें जैसे ही दाखिल हुआ, उसने अपने बच्चोंको कुचला-मरा पाया। वह जोरोंसे चीख पड़ा और उसने हिरनसे पूछा, "भाई, मेरे बच्चों-को इस निष्ठुरतासे किसने मारा है? सच बताओ, यहां कौन आया था?"

हिरनने अत्यंत कातर स्वरमें कहा, "भाई, तुम तो जानते हो कि मैं इस वनका युद्ध-नर्तक हूं। लड़ाईका संकेत पाते ही कठफोड़वाकी आवाजपर उछल पड़ा। तुम्हारे बच्चोंकी बात मैं भूल गया। वे मेरे पैरोंके नीचे कुचले गए। लेकिन तुम सोचो, क्या इसका अपराधी मैं हूं?"

सियार काफी दुखी हुआ। उसने सोचा, यहां कुछ भी कहने-सुननेसे बेहतर है, राजाके पास चला जाए। वह राजाके पास जाकर बोला, "मेरी गैर मौजूदगीमें मेरे घरपर दुष्ट हिरनने मेरे बच्चोंको पैरों-तले कुचलकर मार डाला। आप इसका कृपापूर्वक न्याय करें, महाराज।"

राजाने हिरनको बुलाया। उसने आंखोंमें आंसू भरकर, हाथ जोड़कर कहा, "महाराज, सियार सवेरे शिकारकी खोजमें गया हुआ था। मैं उसके घरपर बच्चोंकी देखरेख कर रहा था। तभी कठफोड़वेका युद्ध-घोष सुनाई दिया और मैं उछलने-कूदने लगा। आपने मुझे इस वनका युद्ध-नर्तक नियुक्त किया है। इसलिए मैंने अपने कर्त्तव्यका सच्चाईसे पालन किया है। ऐसे संकटके समय मुझे बच्चोंका ध्यान न रहा, इसीसे वे मेरे पैरों तले कुचले गए। यह अपराध मैंने जानबूझकर नहीं किया है, राजन्। आप ही न्याय करें।"

राजाने कठफोड़वाको बुलाया। उसके आनपर राजाने पूछा, "तुमने असमय और अकारण युद्धका डंका क्यों बजाया?"

कठफोड़वेने सिर झुकाकर अभिवादन करते हुए कहा, "महाराज, आज सवेरे ही मैंने बन-बिडालको युद्धोन्मत्त देखा था। उसकी सांस तेज चल रही थी और वह इधर भागा आ रहा था। उसकी आंखोंसे युद्धकी लपटें निकल रही थीं। उसे उत्तेजित देखकर मुझे लगा कि अवश्य कहीं विपदा आ पड़ी है। इसीसे मैंने डंका बजा दिया था, ताकि सभी पशु-पक्षी तैयार हो जाएं। मैं निरपराध हूं, महाराज।"

राजाने बन-बिडालको बुलाकर पूछा, "तुम आज सवेरे उत्तेजित क्यों थे और क्या कारण था कि आंखोंसे युद्धकी लपटें निकाल रहे थे? शीघ्र बताओ, क्योंकि इसीसे सियारके बच्चे मरे हैं। बच्चोंकी मौतके जिम्मेदार तुम्हीं हो। तुम्हें इस अपराधका दंड भुगतना पड़ेगा।"

दिलीप और उसके साथी मछली पकड़ने गये

बन-बिडाल बोला, "धर्मावतार, मैंने अकारण ही युद्धकी सूचना नहीं दी थी। हुआ यों कि मैंने देखा कि बारहसिंगा अपने मजबूत सींगोंवाले सिरको जोरोंसे पटक रहा है। समझते देर न लगी कि कहीं युद्ध आरंभ होने जा रहा है। आप ही कहिए, इसमें मेरा क्या अपराध है?"

राजाने कहा, "पकड़कर लाओ उस नालायक बारहसिंगेको।"

राजाके प्रश्नके उत्तरमें बारहसिंगेने अपने सींगोंको एक बार हवामें उछाला और कहा, "महाराज, आज सुबह जब सूरजकी रोशनीसे नदीकी जलधारा चमक रही थी, उस समय मैं नियमानुसार वहीं खड़ा था। एकाएक मैंने नदीमें कछुए भाईकी चमकती पीठ देखी।

"कछुए स्वभावसे ही सौ सौ वर्षों तक नदीके तलमें रहने वाले होते हैं और इतने सुस्त होते हैं कि शरीरको जरा-सा हिलाते तक नहीं। ऐसी हालतमें जब कछुएको मैंने ऊपर तैरते देखा और गर्दन निकालकर इधर-उधर ताकते देखा, तो लगा कि जलचरोंमें कहीं युद्ध छिड़ गया है। तत्काल तैयारीके लिए तब मैंने युद्धका संकेत किया था। इसमें मेरा क्या कसूर है!"

राजाने कहा, "ठीक है, तुम्हारा कसूर नहीं है। तुमने तो अपने कर्त्तव्यका पालन ठीक ही किया है। लेकिन शीघ्र ही उस कछुएको बुलाया जाए। मुझे लगता है, युद्धका भ्रम उसीने फैलाया था।"

सभी पशु जाकर वृद्ध कछुएको पकड़कर लाए।

कछुएने कहा, "मैं क्या करता, राजन्! नदीके तलपर मैं सोया हुआ था। भगदड़ मची, तो देखा कि केकड़ा अपने त्रिशूलको ताने ऊपर की ओर भागा जा रहा है। मुझे शंका हुई कि अवश्य किसी शिकारीने हमारे जल-क्षेत्रपर हमला कर दिया है। इसी लिए मैं घबड़ाया-सा ऊपरकी ओर भागा था।"

राजाने सोचा कि केकड़ा सुबह सुबह त्रिशूल ताने ऊपरकी ओर क्यों भागा। हो न हो वही अपराधी है। उन्होंने केकड़ेको तलब किया।

हत्याके अपराधकी बात सुनकर केकड़ा अवाक् रह गया। उसके त्रिशूल नीचे लटक गए। वह कातर स्वरमें बोला, "महाराज, अपने त्रिशूल तानकर मैं ऊपरकी ओर अवश्य भागा था, पर इससे मैं सियारके बच्चोंकी मृत्युका जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। मेरे विचारसे इसकी जिम्मेदारी मछलियोंपर है, जो इधर-उधर भाग रही थीं। वे आज सुबह ही तीर-धनुष निकालकर युद्धकी तैयारीमें थीं। उनकी उत्तेजना देखकर मेरे त्रिशूल भी तन गए थे और मैं ऊपरकी ओर भागा था।"

राजाने कहा, "ठीक है। मछलियोंकी सरदार सोन-मछलीको बुलाओ।"

राजाके कई सैनिक सोन-मछलीको पकड़ लाए।

राजाने कहा, "सोन-मछली, क्या कारण था कि आज सुबह तुम सभीमें बड़ी उत्तेजना थी! इसके कारण कितने निरीह बच्चोंके प्राण गए हैं। तुम्हें इसके फलस्वरूप दंड भुगतना पड़ेगा।"

सोन-मछली फिर उत्तेजित हो उठी। वह अपना विकराल सिर ऊपर उठाकर क्रोधसे फूट पड़ी:

"क्यों? हमें दंड क्यों भुगतना पड़ेगा? मछलियोंने अगर उत्तेजना दिखलाई है, तो क्या बुरा किया है? हमने तीर-धनुष निकालकर युद्धकी तैयारी की है, सो ठीक ही है। यह भाग्यकी बात है कि सब समय रहते ही चेत गई। नहीं तो हममेंसे आज कितनी मछलियां मर चुकी होतीं। कितने ही हमारे बच्चे इस सियारके पेट में जा चुके होते। महाराज, यह सियार आज सवेरे ही नदीमें तैरकर मछलियोंकी टोह ले रहा था। ऐसी हालतमें हमने अपने बचावके लिए कोई तैयारी की, तो बुरा क्या किया?"

सभी पशु-पक्षियोंकी दृष्टि सियारकी ओर उठ गई।

सियार शर्मसे जमीनमें गड़ा जा रहा था। राजाने उसकी ओर देखकर कहा, "अपने बच्चोंकी मृत्युके उत्तरदायी तुम खुद हो। तुमने अगर आज मछली-पुत्रोंकी ओर आंख न उठाई होती, तो तुम्हारी संतान भी जीवित रहती। अतः आज की घटनाका अपराधी तुम्हें ठहराया जा रहा है।"

इस फैसलेके पश्चात् सभा विसर्जित हो गई। ●

कहानी

डायरी की हाय

१ जनवरी १९६४ : आज पहला दिन है स्कूलमें। बिना मम्मीके दिल नहीं लगता। मुन्ने और रेखाकी भी बहुत याद आती है। आज सारा दिन बड़ा उदास-सा बीता।

५ जनवरी १९६४ : चार दिन बाद आज डायरी लिखने बैठा हूं। घरकी यादमें रोना आ जाता है। बोर्डिंग हाउसकी मेट्रन कितनी अच्छी हैं; हर समय मुझे दिलासा देती रहती हैं। कहती हैं— 'सुरेन्द्र तुम रोते क्यों हो? विद्या तब तक भला किसे आती है, जब तक कि उसको पानेके लिए कोई श्रम और त्याग न करे। इसलिए उठो, आगेसे मैं कभी तुम्हें रोता हुआ न पाऊं। जब भी रोना आए, तो सोचो कि घर तो तुमने विद्या ग्रहण करनेके लिए छोड़ा है। फिर रोना कैसा?'

१४ जनवरी १९६४ : अब भी घरकी याद बराबर आती है, लेकिन मेट्रनके दिलासा भरे शब्द याद करके रोनेपर काबू पा लेता हूं। सारा दिन राजेन्द्र (मेरा नया मित्र) के साथ खेलने या पढ़नेमें ही बीत जाता है।

हॉस्टलके सब लड़के तो अच्छे हैं, लेकिन अखिल और भुवनेश बहुत उद्दंड हैं। बस सारे दिन जूनियर लड़कोंपर धौंस जमाते रहते हैं।

१ फरवरी १९६४ : अब तो घरसे आए एक महीना हो चुका है। हफ्तेमें दो बार घर चिट्ठी डालता हूं, तो भी चैन नहीं आता। यहांके वातावरणमें ऐसा लगता है मानो स्वप्न लोकमें विचर रहा हूं—अपने साथियोंमें ही रहना, मनमानी करनेपर भी कोई रोक-टोक न होना—क्या यह स्वप्नके समान नहीं?

१० फरवरी १९६४ : आजका दिन बहुत उदास बीता। अखिलने मुझसे पेन मांगा और मना करनेपर उसने और भुवनेशने मिलकर मुझसे चाबी छीन ली और अलमारी खोलकर खुद ही पेन ले लिया।

राजेन्द्र मेरा सच्चा मित्र है। बोला—'सुरेन्द्र, तुम अभी तक बोर्डिंगमें रहना नहीं सीखे हो। जब तक सीनियर लड़कोंसे मेल नहीं रखोगे, तुम यहां नहीं रह पाओगे।'

२० फरवरी १९६४ : पिछले आठ-दस दिनोंमें अखिल और भुवनेशसे कोई तीन बार झगड़ा हो चुका है। एक बार तो हाथापाई तक नौबत जा पहुंची। हर बार 'सीनियारिटी' ही उनकी रक्षा करती है और उन्हें जिताती है।

जब भी किसीसे लड़ाई होती है, तो मम्मी की याद आ जाती है। उन्होंने तो कहा था कि सबसे मेलसे रहना, पर . . .

१३ मार्च १९६४ : देखता हूं राजेन्द्र ठीक ही कहता है। बिना अखिल और उसकी पार्टीको

— विनोद सप्रा

प्रसन्न किए हॉस्टलमें रहना मुश्किल हो जाएगा। वे अपनी शक्तिका नाजायज फायदा उठा रहे हैं। खैर एक साल ही तो और है। मैं भी अपना समय आनेपर एक एकको देख लूंगा। तब देखूं कौन रोकता है मुझे मनमानी करनेसे!

१ अप्रैल १९६४ : इतने दिन इम्तिहान होनेके कारण डायरी ही नहीं लिख पाया। आजसे हमारी गर्मीकी छुट्टियां हो रही हैं। पहली जुलाईको स्कूल खुलेगा। आज ही रात मैं घर चला जाऊंगा।

१ जुलाई १९६४ : आज स्कूलमें पहला दिन है। स्कूलका नक्शा ही बदला हुआ-सा लग रहा है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली छाई हुई है।

हृदयमें स्फूर्तिकी एक तरंग-सी उठती है; अखिल और भुवनेश स्कूल पास करके चले गए ना! मैं भी एक सालमें पास कर ही लूंगा। अभी तो मेरे पढ़नेके लिए पूरा साल पड़ा है। पिछले साल तो मैं दूसरी 'टर्म' में आया था, इस कारण परीक्षामें बैठनेके लिए साल भरका कोर्स तीन महीनोंमें ही पढ़ना पड़ा। अब तो मैं भी सबसे ऊंची क्लासमें हूं। साल भर मस्ती मारूंगा।

४ जुलाई १९६४ : आज विमल नामका एक नया लड़का आया है। बड़ा भोला-सा दिखता है। कोई बात नहीं। महीने भरमें लड़के उसके भी

'पर' उगा देंगे।

१ अगस्त १९६४: महीना भर हो गया विमलको आए लेकिन अभी तक हॉस्टलमें रहना नहीं सीख पाया। आज मुझसे ही उलझ पड़ा। मैंने स्याही मांगी, तो मना करने लगा। लेकिन मेरी एक ही धमकीने उसे रास्तेपर ला दिया। झटसे 'सॉरी' कहकर पूरी बोतल ला दी। मैंने भी सोचा, क्यों न ले लूं। मांगी है एक बार पेनमें भरनेको और मिल गई पूरी बोतल!

२ अगस्त १९६४: आज राजेन्द्रसे मेरी अनबन हो गई। विमलकी तरफसे वकालत करने आया था। बोला—'सुरेन्द्र तुम छोटे लड़कोंपर धौंस क्यों जमाते हो?'

मैंने जवाब दिया—'जो मुझपर गुजरी है, उसकी सजा कौन भुगतेगा?'

'जिन्होंने तुम्हें मारा-पीटा, उनका कुछ न बिगाड़ सकनेपर अपनी हेकड़ी इन छोटे लड़कों पर जतानेमें कौनसी शान है? खिसियानी बिल्ली तो खंभा ही नोचती है'—राजेन्द्र चीखा। गुस्सा तो उसपर बहुत आया, पर सोचा कि जाने दो।

७ अगस्त १९६४: कलकी बात रह रहकर याद आती है। विमलसे मैंने एक कापी मांगी। उसने मना कर दिया। मैंने उससे छीन कर कापी ले ली। वह रोने लगा। एक क्षणको तो मैंने भी सोचा कि वापस कर दूं, लेकिन फिर विचार आया, रोना-धोना तो चलता ही रहता है, किस-किसके आंसू पोंछूं।

८ अगस्त १९६४: आज मेरे पास पहननेको स्कूलकी नीकर नहीं थी। जबसे राजेन्द्रने विमलकी तरफदारी की है, तबसे मैंने विमलको और तंग करनेकी ठान ली है। इसलिए जाकर उससे नीकर मांगी। बेचारेने बिना चूं तक किए दे दी। स्कूलमें देखा, तो वह स्कूली ड्रेसमें नहीं था।

खाना खाकर ज्यों ही मैंने रूमाल निकालनेको नीकरकी जेबमें हाथ डाला, तो रूमालके साथ एक डायरी बाहर निकलकर गिर पड़ी। खोलकर देखा—पहले पृष्ठपर लिखा था: विमल सक्सेना। मैंने यूं ही एक पृष्ठ खोल कर पढ़ा। ६ अगस्तकी तारीखमें लिखा था: 'आज सुरेन्द्रने मुझसे जबरन ही कापी छीन ली। उस दिन भी इंक छीन ली थी। न जाने क्यों वह मेरे पीछे पड़ा हुआ है। 'सीनियॉरिटी'का नाजायज फायदा उठा रहा है। खैर, मेरा भी जमाना आएगा। मैं भी तब एक एक को देख लूंगा।'

मुझसे आगे पढ़ा नहीं गया। डायरी हाथसे छूट गई। बरबस ही आंखोंसे आंसू टपक पड़े। सोचता हूं, क्या करूं? मुझपर मुझसे बड़ोंने जोर-जबरदस्ती की, मैं भी अपनेसे छोटोंपर कर रहा हूं, और वे भी अपनेसे छोटोंके साथ यही व्यवहार करेंगे। जो कभी मेरी मनःस्थिति थी, वही आज मुझसे छोटोंकी है।

काश! मैं अपने ऊपर बीतीको दूसरोंपर न बीतने देता। न जाने मुझ जैसे और कितने ही विमल इसी क्रमको जारी रखेंगे! 'अतीत' के अपराधका दंड 'भविष्य' मालूम नहीं कब तक भोगेगा! ●

आज हमारा देश आजाद है। हम आजाद देशके नागरिक हैं। हमें अपनी आजादीकी रक्षाके लिए योग्य बनना है। यह योग्यता अच्छी और उपयोगी शिक्षाके द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

आजादीके बाद हमारे देशमें शिक्षाका विकास बड़ी तेजीसे हुआ है। आज बच्चोंके मां-बाप उन्हें ऊंचीसे ऊंची शिक्षा दिलाना चाहते हैं। वास्तवमें ऊंची शिक्षासे उनका मतलब कालेजों और विश्वविद्यालयोंमें दी जाने वाली शिक्षासे होता है। ऊंची शिक्षा प्राप्त करना एक बड़ी चीज है, लेकिन इससे बड़ी चीज है उसका उपयोगी होना। हमें शिक्षाकी उपयोगिताको ही विशेष महत्व देना चाहिए।

हमारा देश गावोंका देश है और साथ ही गरीब देश है। इस देशमें सामान्य माता-पिताओं-के पास इतना धन नहीं होता कि वे अपने बच्चों-को ऊंची शिक्षाके लिए शहरोंमें भेज सकें। गांवों-में बड़े कालेज हैं नहीं। तब यह समस्या उठती है कि हमारे बच्चे मैट्रिककी पढ़ाईके बाद क्या करें?

यहांपर रुककर यदि हम थोड़ी-सी सावधानी और बुद्धिमानीसे काम लें, तो इस 'क्या करें' की समस्याको बड़ी अच्छी तरहसे सुलझा सकते हैं।

हममेंसे उन लोगोंको जो ऊंची शिक्षाके लिए पैसा खर्च नहीं कर सकते, उन छोटे छोटे धंधों और प्रशिक्षणों (ट्रेनिंग) की ओर देखना चाहिए, जहां सुविधाके साथ जीवन-निर्वाहका रास्ता खुला हुआ है। हमारा देश औद्योगिक विकासकी दिशामें आगे बढ़ रहा है। अतः तक-नीकी (टेक्नीलक) शिक्षाका महत्व अपने आप बढ़ जाता है। हमारी सरकारने प्रत्येक राज्यमें तकनीकी शिक्षाके लिए विद्यालय खोल दिए हैं, जहां मैट्रिकके पश्चात् एक वर्षसे लेकर तीन वर्ष तककी तकनीकी शिक्षा देनेकी व्यवस्था है।

आज देशमें नए नए उद्योगोंकी स्थापना भी हो रही है। नई नई फैक्ट्रियां और मिलें खुल रही हैं। नए निर्माण हो रहे हैं। नए वैज्ञानिक तरीकोंसे खेती, सिंचाई और बुवाई-कटाईकी दिशामें प्रयत्न चल रहे हैं। इन सबके लिए तकनीकी शिक्षाकी आवश्यकता है। देशकी जरूरतोंको ध्यानमें रखकर ही इन स्कूलोंमें विभिन्न प्रकारकी तकनीकी शिक्षा देनेकी व्यवस्था है। इन विद्यालयों-में लगभग आधेसे अधिक विद्यार्थियोंको छात्र-वृत्तियां (स्कालरशिप) मिलती हैं। कहीं कहीं मुफ्त खाने-रहनेकी भी व्यवस्था होती है। ये विद्यालय 'पॉलिटैक्निक्स' कहलाए जाते हैं। हर राज्यके शिक्षा-निर्देशकसे इन विद्यालयोंके विषयमें विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। यहां हम एक लड़के हरभजनका उदाहरण लें।

हरभजनने पॉलिटेक्नीकका अच्छा लाभ उठाया है। उसने अपने गांव रायपुरसे मैट्रिक की परीक्षा पास की। फिर वह देहरादूनके पॉलि-टेक्नीकमें भरती हो गया। वहां उसे वजीफा मिला। उसने खूब मेहनत की और कारपेन्टरीका सर्टिफिकेट लेकर जब वह बाहर निकला, तो देहरादूनमें ही चकरौता रोडपर एक फर्नीचर मार्टमें उसे २०० रुपयेकी नौकरी मिल गई। वह खुश है और उसे उम्मीद है कि अगले दो-तीन सालोंमें उसकी अपनी दूकान हो जाएगी। उसके साथी जिनके पास आज बी. ए. की डिग्रियां हैं, १५० रुपयेकी नौकरी पानेके लिए टाइपिंग

सीखनेकी जरूरत महसूस कर रहे हैं। फिर भी वांछित नौकरी पानेके लिए उन्हें एक कठिन प्रतियोगितामेंसे गुजरना होगा।

अब बहुतसे सामान्य विद्यालयोंने भी अपने यहां तकनीकी शिक्षाकी कक्षाएं खोल दी हैं। इससे उन बालकोंको विशेष लाभ होता है, जो आगे चलकर तकनीकी शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं। तकनीकी शिक्षाके अन्तर्गत सिविल, मैके-नीकल और इलैक्ट्रिकल इन्जिनियरिंगमें डिप्लोमा तककी शिक्षा तो मिलती है, लेकिन इसमें ३ वर्षका समय देना होता है, जो कुछ अभिभावकों-के लिए बहुत अधिक हो सकता है। उनके लिए छोटी अवधिके पाठ्यक्रम भी होते हैं। मिलों और फैक्टरियोंमें विविध पाठ्यक्रमोंका प्रशिक्षण दिया जाता है। उनकी अवधि ६ महीनेसे लेकर डेढ़ साल तककी होती है। उनमें लुहारका काम, टर्नर, फिटर, बिजलीका काम, मशीनें चलानेका प्रशिक्षण आदि अनेकों दिशाओंमें शिक्षा दी जाती है। प्रशिक्षण पूरा करनेके बाद प्रायः

वहीं नौकरी भी मिल जाती है। वेतन भी कम नहीं होता। एक वर्षके प्रशिक्षणके बाद अच्छी फैक्टरियोंमें २०० रुपयेसे कहीं अधिक ही मिल जाते हैं।

तकनीकी-शिक्षा सामान्यतः लड़कोंके लिए सुविधाजनक होती है। लड़कियोंको अपने स्वभाव और शारीरिक कोमलताके कारण इसमें असुविधा अनुभव हो सकती है। वैसे आजकल लड़कियां उच्चतर इन्जीनियरिंगकी शिक्षाके लिए भी आगे आ रही हैं और उसमें सफलता प्राप्त कर रही हैं। लेकिन छोटे पाठ्यक्रम पूरा कर लेनेके बाद जिस वातावरण और परिस्थितियोंमें काम करना होता है उसे लड़कियोंके अनुकूल नहीं कहा जा सकता। मिल और फैक्टरियोंका वातावरण काफी कठिन और शुष्क होता है और लड़कियोंके कोमल-स्वभावके लिए वहां कोई स्थान नहीं रह जाता। उनके लिए कुछ दूसरे पाठ्यक्रम हैं, जहां वे अपनी प्राकृतिक

के बाद क्या करें?

—देवेश ठाकुर

शक्तियों और गुणोंका पूरा पूरा उपयोग कर सकती हैं।

शिक्षाको स्वस्थ-दिशा देनेके लिए आरंभसे ही बच्चोंकी पढ़ाईपर ध्यान देना आवश्यक हो जाता है। हमारे देशमें शिशु-शिक्षाकी कोई अच्छी व्यवस्था अभी तक नहीं हो पाई है। इसका कारण यही है कि इन श्रेणीके बच्चोंके लिए प्रशिक्षित अध्यापक नहीं मिलते। मैट्रिककी परीक्षा पास करनेके बाद लड़कियां इस जिम्मेदारीको अपने ऊपर ले सकती हैं। आज देश भरमें मान्टेसरी-प्रशिक्षणके केंद्र खुले हुए हैं। इनके विषयमें भी विस्तृत जानकारी अपने राज्यके शिक्षा-निर्देशकसे आसानीसे प्राप्त की जा सकती है। उनमें ९ महीनेका पाठ्यक्रम होता है। उस पाठ्य-क्रमको पूरा करनेके बाद लड़कियां अपना निजी शिशु-केंद्र खोलकर पास-पड़ोसके बच्चोंको योग्य शिक्षा दे सकती हैं तथा साथ ही उनकी जीविकाकी समस्या भी हल हो जाती है। आज देशमें शिशु-केंद्रोंका विकास हो रहा है। लगभग सभी जगह प्रशिक्षित अध्यापिकाओंकी कमी बनी रहती है।

आज योरुपके देश बहुत अधिक उन्नतिशील हैं। वहां खूब धन है। सभी क्षेत्र विकसित हैं। कहीं कोई अभाव नहीं खटकता। वह इसलिए कि उन्होंने बहुत पहले ही यह महसूस कर लिया था कि केवल कालेजों और विश्वविद्यालयोंकी ऊंची डिग्रियों द्वारा जीवनको सफल नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने औद्योगिक दिशामें छोटे-बड़े प्रशिक्षणोंको ही अधिक महत्व दिया। योरुपमें आज कालेजकी शिक्षाके लिए कोई बड़ी होड़ नहीं है। तकनीकी शिक्षाका वहां विशेष महत्व है। पुरुष मिलों, फैक्टरियों और कारखानोंमें कार्य करते हैं, महिलाएं दुकानों, दफ्तरों, स्कूलों और अस्पतालोंमें। नर्सका प्रशिक्षण भी इसी संदर्भमें उल्लेखनीय हो जाता है। पुरुष-नर्स बहुत कम होते हैं। इसमें अधिकतर महिलाएं ही आती हैं। 'ए' ग्रेड नर्सिंगमें मैट्रिकके बाद प्रवेश मिलता है। ३ वर्ष तक सामान्य नर्सिंगका प्रशिक्षण प्राप्त करनेके बाद ९ महीने तक 'मिडवाइफरी' का प्रशिक्षण लेना होता है। इसके बाद अस्पतालमें 'स्टाफ-नर्स' के रूपमें नियुक्ति हो जाती है। यही स्टाफ-नर्स आगे चलकर नर्सिंग सिस्टर, और मैट्रन बनती है, यद्यपि उसके लिए और एक वर्षका सिस्टर-ट्यूटर तथा प्रशासकीय प्रशिक्षण लेना पड़ता है।

आज हमारे देशके सभी बड़े अस्पतालोंमें नर्सिंगका प्रशिक्षण देनेकी व्यवस्था है। प्रशिक्षणके दौरान उन्हें निःशुल्क कपड़े खाना और आवास तो मिलता ही है, साथमें जेब-खर्चके लिए ४५ रुपयेसे ७५ रुपये तक प्रति महीने और मिलता है। आज देश भरमें प्रशिक्षित नर्सोंकी अत्यधिक आवश्यकता है। इसमें केवल जीविका उपार्जनकी समस्या ही हल नहीं होती, बल्कि उन्नतिके लिए तथा विदेश जानेके लिए सुनहरे अवसर मिलते हैं। जर्मनी, अरब तथा अफ्रीकी देशोंमें भारतीय नर्सोंकी स्थायी मांग है।

जो लड़कियां नौकरी करनेके बजाय अपना स्वतंत्र व्यवसाय करना चाहती हैं, उनके लिए अनेक राज्योंमें सरकार-मान्य सिलाई और कढ़ाईके प्रशिक्षणालय हैं, जिनमें एक सालसे दो साल तकका कोर्स है, जिसे पास करनेपर 'प्रमाण-

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

परियोंके देशमें बसे एक नगरमें कुछ बौने रहा करते थे। आदमीकी तरह वे भी दो जातियोंके थे—बौने लड़के और बौनी लड़कियां। बौने लड़कोंमेंसे एक थे बुद्धूमल।

पिछले अंकोंमें तुमने पढ़ा था कि बुद्धूमल अपने साथियोंके साथ एक गुब्बारेमें बैठकर आसमानकी सैर कर रहे थे कि तभी गुब्बारा अचानक जमीनसे आ टकराया। नतीजा यह हुआ कि बुद्धूमल छिटककर कहीं और गिरे और बाकी साथी कहीं और। लेकिन सबकी जान बच गई। जान बचाने वाली थी बौनी लड़कियां। बुद्धूमल बहुत जल्द उनमें हीरो बन गए और जब उन्हें पता चला कि उनके बाकी साथी भी पासके अस्पतालमें पड़े हैं, तो वह तुरंत कुछ बौनी लड़कियोंके साथ वहां आ पहुंचे और किसी तरह डाक्टरनीको राजी किया कि वह उन्हें नंबरवार अस्पतालसे छुट्टी दे दे। सबसे पहले छुट्टी मिली तानप्रकाश बांसुरीवादक और कुंजीराम चित्रकारको, इसके बाद छोड़े गए मेठूमल और मोडूमल टिनसाज, और फिर बारी आई शावर्डसिंह और झटपटरामके छूटनेकी।

इन सबने बाहर आकर क्या किया—यह तुम पिछले कुछ अंकोंमें पढ़ चुके हो। अब कुछ दूसरे बौनोंकी अस्पतालसे रिहाई और उनकी कारगुजारियोंका हाल पढ़ो।

(२३)

सारा काम बड़े मजेसे चल रहा था। फलोंके ढोनेमें उन दोनों कारोंके इधरसे उधर दौड़नेसे फलोंकी ढुलाईका मशीनीकरण हो गया था। सेब और नाशपाती एक बारमें एक-एक और बेर एक बारमें चार-चार पांच-पांच ले जाए जा रहे थे। इस मशीनीकरणसे बहुतसे बौने-बौनियां बेकार हो गए थे। लेकिन हाथपर हाथ धरे बैठे रहनेके बजाए उन्होंने सड़कपर दो स्टाल लगा लिये थे। एकमें सोडावाटर और शरबतका प्रबंध हो गया था और दूसरेमें केक, बिस्कुट तथा अन्य मिठाइयोंका। फलों की ढुलाईपर काम करने वाले अब जब भी फुरसत पाते, फौरन वहां पहुंच जाते और मजेसे हल्का-फुल्का नाश्ता कर आते। कहना न होगा कि गोलारामने मिठाइयोंवाला स्टाल संभाला था। एक तरहसे वह वहांसे चिपक ही गए थे। उन्हें वहांसे हटाया ही नहीं जा सकता था। दूसरी ओर, शरबत और सोडावाटरके स्टालपर शरबतीलालके सिवा और कौन हो सकता था? उन्हें भी वहांसे हटा पाना संभव नहीं था।

अचानक एक बिल्कुल ही अद्भुत घटना घटी। कुछ दूरीपर शोरशराबा सुनाई दिया। सब लोगोंकी निगाहें उधर उठ गईं। उन्होंने ताज्जुबसे देखा कि डाक्टर गोलीचंद आगे आगे और डाक्टर मधुपी तथा अस्पतालके सारे कर्मचारी उनके पीछे पीछे बगटुट भागे चले आ रहे हैं। डाक्टर गोलीचंदने सिर्फ जांघिया पहन रखा था और चश्मा लगा रखा था। बाकी कपड़े उनके बदनसे नदारद थे। ज्यों ही वह एक पेड़के नजदीक पहुंचे, झट उसपर चढ़ बैठे।

"इसका क्या मतलब है, मरीज महाशय?" मधुपीने नीचेसे चिल्लाकर कहा।

"मैं अब मरीज आपका नहीं हूं, जी," डाक्टर गोलीचंदने पेड़पर और भी ऊपर चढ़नेकी कोशिश करते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो? जरूर हो। अभी तुम्हें

धारावाही उपन्यास

बुद्धूमल के कारनामे

मूल लेखक: निकोलाई नोसोव

www.kissekahani.com

अस्पतालसे खारिज कहां किया गया है?" डा. मधुपीने कहा।

"कर दिया गया है," डा. गोलीचंदने हंसते हुए कहा। "मैं खुद हो गया हूं," और उन्होंने जीभ निकालकर डा. मधुपीको चिढ़ाया।

"मक्कार!" डा. मधुपीने बड़बड़ाते हुए कहा। "अब तुम्हें तुम्हारे कपड़े वापस नहीं मिलेंगे, समझे?"

"मैंने कब मांगे हैं?" डा. गोलीचंदने कहा।

"तुम्हें ठंड लग जाएगी!"

"बलासे—पर अस्पताल लौटकर नहीं जाऊंगा।"

"तुम्हें शरम आनी चाहिए," डा. मधुपीने कहा। "डाक्टर होकर दवाइयोंकी इतनी बेइज्जती!"

और वह यह कहकर, सिर ऊंचा करके सैंडिल फटकारती हुई वापस चली गई।

जब खतरा टल गया, तो डा. गोलीचंद पेड़से नीचे उतरे। सब लड़कियोंने उन्हें घेर लिया और उनके बारेमें चिंता प्रकट करने लगीं।

"तुम्हें ठंड नहीं लग रही है क्या?" उन्होंने पूछा। "निमोनिया हो जाएगा। कहो तो तुम्हारे लिए कुछ कपड़ों-शपड़ोंका इंतजाम किया जाए?"

"जरूर किया जाए," डाक्टरने कहा।

फुफ्फी घर दौड़ गई और उनके लिए एक सफेद पोशाक लाई, जिसपर हरी धारियां पड़ी हुई थीं।

"यह क्या है?" डाक्टर गोलीचंदने आंखें फाड़ते हुए पूछा। "क्या मैं यह पोशाक पहन सकता हूं? हर कोई मुझे लड़की समझ बैठेगा!"

"समझ बैठेगा, तो क्या हुआ? क्या लड़की होना इतना खराब है?"

"जरूर है।"

"वह कैसे? अच्छा, तो तुम्हारा खयाल है कि लड़कियां बुरी होती हैं?"

"अ....अ... नहीं, आप लोग तो सब बहुत अच्छी हैं—अर—पर लड़के ज्यादा अच्छे होते हैं," हकलाते हुए डाक्टर गोलीचंद बोले।

"ज्यादा अच्छे कैसे होते हैं, बताइए तो जरा।"

"इसलिए, इसलिए——अच्छा, मिसालके लिए तानप्रकाशको ही ले लो, कितना अच्छा संगीतज्ञ है। जब वह बांसुरी बजाता है, तब सुनो उसे, मजा आ जाएगा।"

"सुन लिया है। हममेंसे बहुतसी लड़कियां सारंगी बहुत अच्छी बजाती हैं।"

"कूंचीराम कितने अच्छे चित्र बनाता है!"

"देख लिया है। लेकिन कूंचीराम तुम्हारे यहां सिर्फ एक कलाकार है। हमारे यहां सबकी सब रंगीन धागोंसे कपड़ोंपर सुंदर डिजाइनोंकी कढ़ाई कर सकती हैं। मेरी फ्राकपर यह जो लाल गिलहरी कढ़ी हुई है, क्या तुम ऐसी गिलहरी कपड़ेपर काढ़कर दिखा सकते हो?"

"यह तो, भई, हमसे न होगा," डाक्टर गोलीचंदको अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी।

"देखा? लेकिन हममेंसे हर कोई काढ़ सकती है—गिलहरी ही नहीं, बल्कि चिड़िया, तितली—कुछ भी।"

"अच्छा, तो जैसी आप लोगोंकी मरजी," कहते हुए डाक्टर गोलीचंदने पोशाक उन लोगोंके हाथोंसे ली और उसे टांगोंकी ओरसे पहनने लगे। जब पहन ली, तो इधर-उधर गरदन मोड़कर देखने लगे कि कैसी लगती है। बद्धूमलने बड़े जोरका ठहाका लगाया,और लोग भी हंसने लगे।

"तुम लोगोंको शरम आनी चाहिए," किटीने कहा। "इसमें हंसनेकी क्या बात है?"

लेकिन उन लोगोंके ठहाके और भी ज्यादा हो गए। डा. गोलीचंदने पोशाक उतार दी।

"ओह! लेकिन तुम ये कपड़े नहीं उतारोगे।"

"जरूर उतारूंगा," डा. गोलीचंदने निश्चयके साथ कहा। "मुझे अपने ही मिल जाएंगे।"

"मधुपी कभी तुम्हें तुम्हारे कपड़े वापस नहीं देगी। वह इन मामलोंमें बहुत सख्त है।"

डा. गोलीचंद केवल एक भेदभरी मुसकान मुसकरा दिए।

जब डाक्टर मधुपी और अस्पतालके अन्य कर्मचारी वापस अस्पताल पहुंचे, तो उन्होंने पाया कि रूखाराम भी चम्पत हो चुके थे। वे फौरन अलमारीकी तरफ दौड़े। वहां निशानाचंदके कपड़ोंके अलावा सब कपड़े गायब थे। रूखाराम अपने कपड़ोंके साथ साथ डा. गोलीचंदके कपड़े भी लेता गया था।

इससे यह एकदम साफ हो गया कि अस्पतालसे भागनेकी योजना दोनोंने मिल कर सावधानीके साथ बनाई थी। कपड़े लेकर रूखाराम एक घनी-सी झाड़ीमें छिपकर बैठ गया था। डाक्टर मधुपी और अस्पतालके कर्मचारी बहुत देर तक उसे ढूंढ़ते रहे। लेकिन वह कहां मिलने वाला था। निराश होकर जब डाक्टर मधुपी अपने सब साथियों सहित फिरसे अस्पतालके भीतर चली गई और अस्पतालके फाटक बंद हो गए, तो रूखाराम झटसे झाड़ीके अंदरसे निकल आए और डाक्टर गोलीचंदके पास पहुंचकर उनके कपड़े उन्हें पकड़ा दिए। अपनी इस मुसीबतके दौरान रूखारामने मन ही मन इरादा कर लिया था कि वह अब कभी नहीं बड़बड़ाएगा और न ही दूसरोंकी बातोंका रुखाईसे जवाब देगा।

डा. गोलीचंदने चटाक्पटाक् अपने कपड़े पहन लिए।

चंचलराम, शायदसिंह, मोड़मल आदि अन्य सभी लड़के उन दोनोंके चारों तरफ जुट गए। उन लोगोंने दोनोंको अस्पतालसे भाग निकलनेके लिए बधाइयां दीं। सबके सब चकित थे कि रूखाराम इतना प्रसन्न कैसे नजर आ रहा है। गोलारामने कहा– "आज पहली बार हम रूखारामको हंसते हुए देख पा रहे हैं।" लड़कियां भी रूखारामके चारों तरफ इकट्ठी हो गईं।

"तुम्हारा नाम क्या है?" फुफ्फीने पूछा।

"रूखाराम।"

"नहीं, मजाक कर रहे हो!"

"नहीं, मजाक बिल्कुल नहीं—ऐसा क्यों सोचती हो?"

"तुम इतने विनम्र और अच्छे स्वभावके लग रहे हो! यह नाम तो तुम्हें कतई नहीं फबता।"

रूखारामके होंठ एक कानसे दूसरे कान तक फैल गए। उसने और भी विनम्र बनकर कहा, "नहीं, मैं ही इस नामके लायक नहीं हूं।"

"तुम पेड़पर चढ़ना चाहते हो?"

"मैं चढ़ सकता हूं?"

"क्यों नहीं। हम तुम्हें एक आरी लाए देते हैं। तुम भी हमारे काममें शामिल हो जाओ।"

"मेरे लिए भी एक आरी लेती आना," डाक्टर गोलीचंदने कहा।

"तुम इसके काबिल तो नहीं हो क्योंकि लड़कियोंके बारेमें तुम्हारे विचार बड़े खराब हैं," किटीने कहा, "लेकिन हम माफ कर देंगे।"

इस तरह ये दोनों कामसे लग गए। रूखारामका विचार था कि पेड़पर चढ़ना मजेका खेल रहता है और डाक्टर गोलीचंदका खयाल था कि इससे स्वास्थ्य उन्नत होता है। जितना ही ऊंचे चढ़ते चले जाओगे, उतनी ही हवा शुद्ध मिलेगी। इसलिए वह और रूखाराम पेड़की सबसे ऊपरवाली फुनगी तक जा पहुंचे।

(२४)

अगले दिन भी सेबों और नाशपातियोंकी ढुलाई-कटाई चलती रही। फिर एक आठ पहियोंवाली भापकी ट्रक और आ गई। यह थी नलकू भाईकी। बात यों हुई :

पतंगपुरके निवासी खरखरे भाईके गायब हो जानेसे परेशान होने लगे थे। उन्हें यह मालूम

था कि वह मोड़मल और मेठूमलको छोड़नेके लिए अपनी कारमें हरा गांव तक गया था। लेकिन जब वह वापस नहीं लौटा, तो उन्होंने नलकू भाईसे प्रार्थना की कि उसकी खोजखबर लेकर आए। लेकिन हरा गांव आकर जब नलकू भाईने देखा कि खरखरे भाई बड़े मजेसे अपनी कारमें सेब और नाशपातियां ढोनेका काम कर रहे हैं, तो उसका भी जी ललचा गया और वह भी अपनी ट्रक लेकर इस काममें मंढ गया।

पतंगपुरमें लोगोंने खरखरे और नलकू भाई-का अगले दिन तक इंतजार किया। जब नलकू भाई अकेले भी नहीं लौटे, तो पतंगपुरमें तरह तरहकी अफवाहें फैलने लगीं। कुछने कहा कि वह खप्परभरनी पुरानी चुड़ैल फिरसे सड़कके बीचोंबीच आकर बैठ गई। जो भी उधरको गुज-रता है वह उसे एक-ही निवालेमें हड़प कर जाती है। कुछ लोगोंका खयाल था कि वह खप्परभरनी चुड़ैल न होकर गजदंत राक्षस है, जो आधे ही निवालेमें एक समूचे इनसानको हजम कर जाता है। इसके खिलाफ, कुछ लोगोंका तीसरा ही खयाल था—कि न तो वह खप्परभरनी चुड़ैल थी, न ही गजदंत राक्षस है, बल्कि तीन भयानक सिरोंवाला राक्षसराज कड़कखोंखों है, जो तीन इनसानोंको एक ही साथ, एक ही सपाटेमें पेटके भीतर पहुंचा सकता है। वह हर रोज कमसे कम एक बौनी लड़कीका कलेवा करता है, लेकिन जिस दिन उसके कब्जेमें कोई बौना लड़का आ जाता है, उस दिन वह उसीका कलेवा कर लेता है।

अफवाहें इतनी डरावनी थीं कि किसी भी बौनेकी हिम्मत नहीं होती थी कि जाकर अपने दो खोए हुए साथियोंका पता लगाकर आए। सबसे ज्यादा अकलमंदी चुपचाप घर बैठे रहनेमें थी, लेकिन आखिर एक बौना लड़का अपनी जानपर खेल जानेके लिए तैयार हो गया। उसने पतंगपुरमें घोषित कर दिया कि वह इन तीनों तरहके खयाली प्रेतोंसे नहीं घबराता है।

यह वही शैतान लड़का चंचल था, जिसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। हर बौना लड़का जानता था कि चंचल ऐसा लड़का है, जो किसी राक्षसके जबड़ोंमें अपने आपको फेंक देनेमें कतई हिचक नहीं दिखाएगा। साथ ही, उस साहसी लड़केका विचार था कि जब तक वह उस राक्षस-राजकी पूंछपर थूककर नहीं आएगा, तब तक

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"क्यों जी, तुमने मेरी लिखी कहानी किससे पढ़वाई थी—तुम्हें तो पढ़ना आता ही नहीं!"

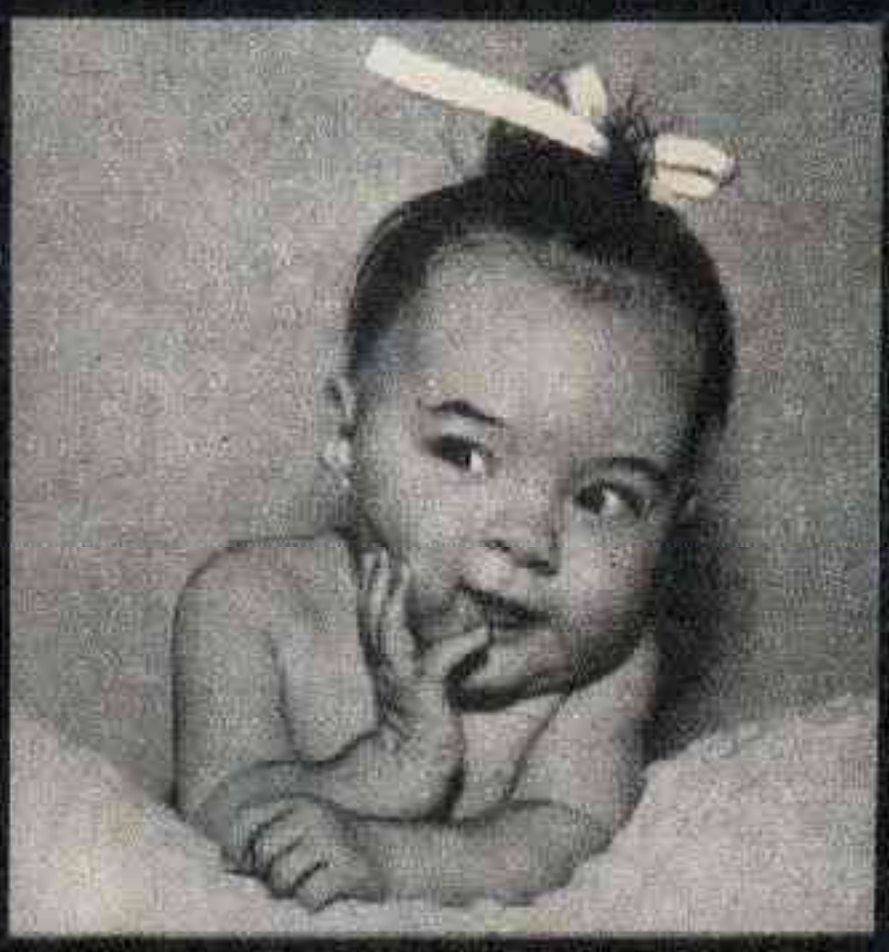

"उसीसे पढ़वाई थी, जिससे तुमने लिखवाई थी—तुम्हींसे लिखना कहां आता है?"

www.kissekahani.com

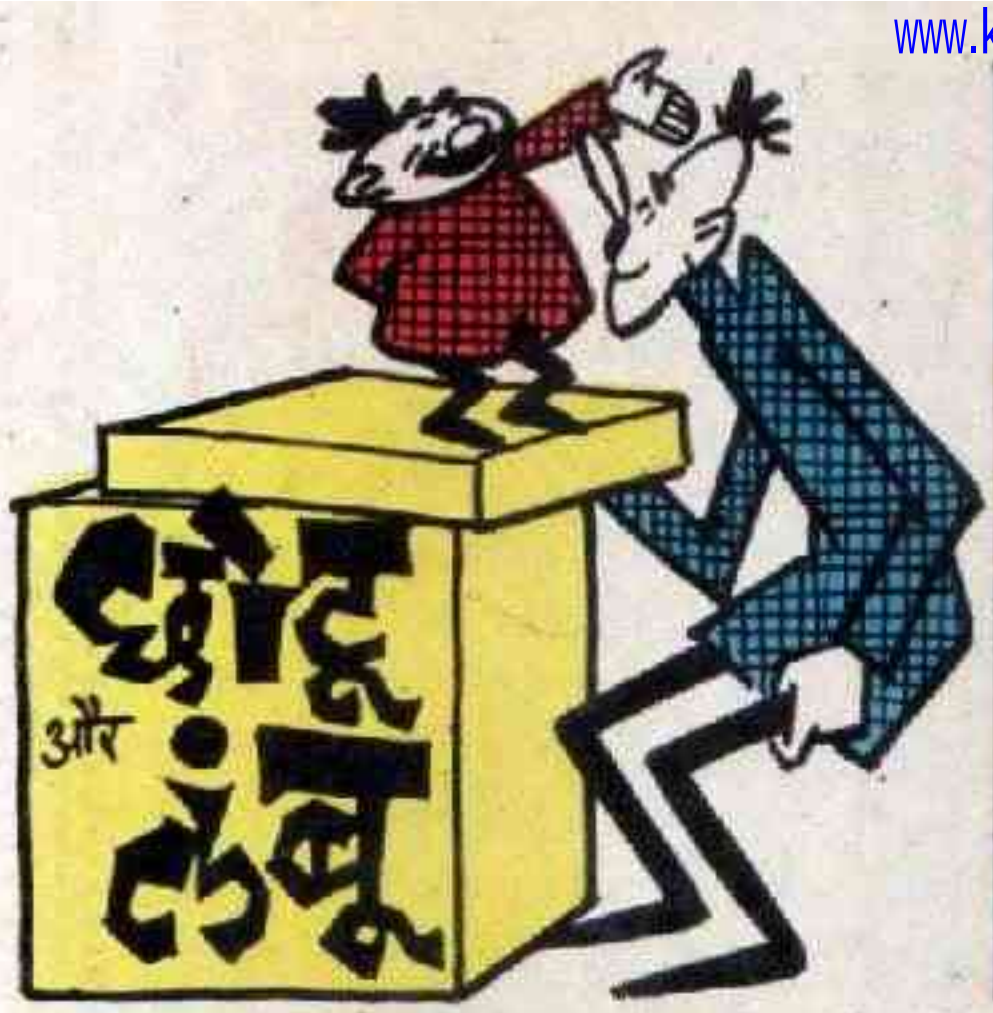

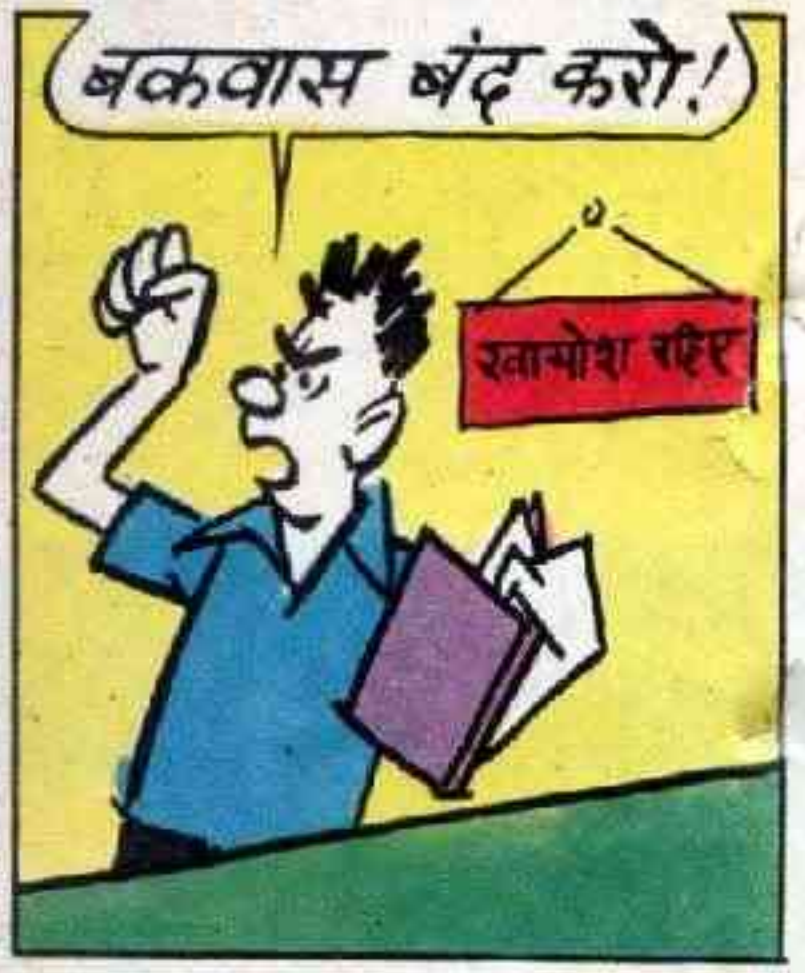

तुमने चीख-चीख कर मेरी पढ़ाई बरबाद कर दी!

लेकिन तुमने उस पर हाथ क्यों उठाया?
यह क्या!

देखते ही देखते लाइब्रेरी के अधिकांश लोग एक दूसरे पर पिल पड़े। इनमें लाइब्रेरियन भी शामिल था।

लेकिन एक ऐसा जरूर बचा था जिसे शायद कुछ खबर ही न थी!

थोड़ी देर बाद लड़-लड़ाकर कुछ लोग बेहोश हो गए!
हा, हा, हा! देखो तो लोग क्या से क्या कर बैठे!

फिर लगातार पढ़ने वाले को बैठा गया!
देखा आपने गर्म दिमाग लोगों का परिणाम!
ही, ही!

और अब देखो मूर्ख होने का परिणाम — तुमने मेरी सारी पढ़ाई चौपट कर दी!

बच्चो, तुम्हें याद होगा कि कभी अपनी खिड़की-में बैठकर आशालता बहन तुम्हें बड़ी सुंदर सुंदर झांकियां दिखाया करती थीं। कुछ कारणोंसे वह खिड़की कुछ समयके लिए बंद हो गई थी। अब अपने बाल पाठकों-के आग्रहपर आशाजी फिर अपनी खिड़कीमें पधार गई हैं। जरा उनके साथ देखो तो कि नीचे क्या हो रहा है।

—संपादक

(१२)

सुशी खबर लाई कि नत्थू सचमुच ही होशियार है।

पिछले महीने फीसके लिए वह दस रुपये घरसे ले गया था, जो पता नहीं, कहां खो गए। उसने सोहनसे कहा, "तुम मुझे दस रुपये दे दो, कल मैं तुम्हें दे दूंगा।" सोहनने रुपये दे दिए।

www.kissekahani.com

तभी गोपाल नत्थूके पास आया : "तुम्हारे रुपये खो गए हैं, नत्थू? ये लो फीस भर दो। पर गुरुवार तक मुझे वापस कर देना।"

और दस रुपये गोपालने भी दे दिए। नत्थूने पांच रुपये साठ पैसे फीसके दे दिए, चालीस पैसे चाटके चुका दिए, एक रुपयेकी पेंसिल, कापी, रंग ले आया, और तेरह रुपये अब भी जेब-खर्चके लिए बचा लिए।

घर आकर नत्थूने इतिहासकी किताब खोली, तो उसमें उसका खोया हुआ दसका नोट रखा हुआ था।

उसे देखते ही नत्थू बहुत खुश हुआ और दूसरे दिन जाते ही उसने वह दस रुपये सोहन-को दे दिए।

होते होते गुरुवार आ गया। जेब-खर्चके सारे पैसे तो वह खर्च कर चुका था, गोपालके रुपये कैसे देता? नत्थू फिर सोहनके पास गया, "तुम मुझे दस रुपये दे दो, मैं सोमवारको लौटा दूंगा।"

सोहनने रुपये दे दिए और वे ही नत्थूने गोपालको लौटा दिए।

फिर आ गया सोमवार। अब सोहनके रुपये कहांसे दे? नत्थूने गोपालसे कहा, "क्या मुझे गुरुवार तकके लिए दस रुपये दे सकते हो?"

"क्यों नहीं!" गोपालने नत्थूको दस रुपये दे दिए, जो नत्थूने सोहनको लौटा दिए। फिर तो यह तरकीब काम कर गई। हर गुरुवारको नत्थू सोहनसे लेकर गोपालको रुपये देता और सोमवारको गोपालसे लेकर सोहनको दे देता। उन दोनोंको भी नत्थूके वादेपर भरोसा हो गया था, क्योंकि नत्थू वादेका पक्का था और वक्तपर पैसे लौटा देता था।

आशालता

इधर नत्थू खुश, उधर गोपाल खुश और उधर सोहन भी खुश।

मगर उस दिन बड़ा बखेड़ा हुआ। सोहन-ने नत्थूके घर आवाज दी और नत्थूके बाहर निकलते ही रुपये मांग बैठा। नत्थू बोला, "स्कूल-में रुपये ले लेना।"

सोहनने कहा, "मैं तो आज स्कूल नहीं जा रहा। तुम मुझे यहीं रुपये दे दो।"

नत्थू चक्करमें पड़ा। उसने अभी गोपालसे रुपये लिये नहीं थे, सोहनको क्या लौटाता! अचा-नक जाने उसकी समझमें क्या आई कि वह सोहन-को वहीं चबूतरेपर बिठाकर कहीं चला गया।

थोड़ी ही देरमें नत्थू गोपालको साथ लेकर आ गया और दोनोंको आमने-सामने बैठाकर बोला, "देखो, भाई, हर सोमवारको मैं गोपालसे रुपये लेकर सोहनको दे देता हूं और हर गुरुवार-को सोहनसे लेकर गोपालको दे देता हूं। क्या ही अच्छा हो कि तुम लोग मुझे बीचसे हटाकर आपसमें ही निबट लिया करो! आज सोमवार

है, इसलिए, हे गोपाल, तुम सोहनको दस रुपये दे दो, गुरुवारको तुम्हें रुपये वापस मिल जाएंगे।" इतना कहकर नत्थू सीधा घरके अंदर चला गया।

बेचारे लड़के! एक दूसरेका मुंह ताकते बैठे रहे। फिर गोपाल अपने घर चला गया और सोहनने चिल्ला चिल्लाकर आवाजें लगानी शुरू कीं : "नत्थू, ओ नत्थू, बाहर निकलो, यह यह क्या मजाक है?"

नत्थू भला क्यों बाहर आता! पर निर्मला चाची बाहर निकल आईं, "क्या बात है? कौन हो तुम?" उन्होंने सोहनसे पूछा।

"मैं सोहन हूं। नत्थूके साथ पढ़ता हूं। नत्थूने मुझसे दस रुपये लिये थे।"

तभी नत्थू खुद ही बाहर निकल आया, बोला, "हां, अम्मां, मैं तुम्हें बताना भूल गया। असलमें मेरे दस रुपये खो गए थे, तो फीस भरनेके लिए मैंने सोहनसे रुपये लिए थे।"

निर्मला चाचीने चुपचाप सोहनको तो दस रुपये दे दिये, पर उसके जाते ही नत्थूका कान पकड़ा। नत्थू कान छुड़ाकर भागा और निर्मला चाची बेलन लिये लिये उसके पीछे भागीं।

•

पर, बात इतनेसे खत्म हो जाती, तो अच्छा था। अभी कसर बाकी थी कि गुरुवारको गोपाल आ गया और 'नत्थू नत्थू' चिल्लाने लगा। नत्थू बाहर आया, तो गोपालने कहा, "उस दिन तुम्हारे कहनेपर मैं सोहनको दस रुपये दे गया था। तुमने कहा था, गुरुवारको रुपये वापस मिल जाएंगे। आज गुरुवार है, लाओ मेरे रुपये।"

"अरे वाह! उस दिन तो सोहन मुझसे रुपये ले गया था।"

"पर तुम्हारे कहनेपर मैंने जो उसे रुपये दिए थे! मैं तो अब तुमसे रुपये लूंगा। नहीं दोगे, तो अभी निर्मला चाचीसे कहूंगा . . . ओ निर्मला चाची, ओ निर्मला चाची..." गोपालने दो-तीन आवाजें लगा ही दीं।

नत्थूने फौरन उसके हाथ जोड़े और कहा, "अम्मांको मत बुलाओ, गोपाल, मैं अपने जेब खर्चसे बचाकर तुम्हारे दस रुपये दे दूंगा। अम्मांसे कुछ मत कहना; सोमवारको वे रुपये दे ही चुकी हैं और मेरी मरम्मत भी कर चुकी हैं। अब कहीं उन्हें पता चल गया कि तुमने भी मुझे रुपये दिए थे तो... तुम तो मेरे दोस्त हो न!"

गोपाल दोस्तीका तकाजा मानकर अगले सोमवारका पक्का वादा लेकर चला गया और मैंने देखा नुक्कड़पर जाते ही उसने छिपे हुए सोहनसे हाथ मिलाया।

इधर नत्थू सिरपर हाथ रखे चबूतरेपर ही बैठा था : उसकी समझमें नहीं आ रहा था कि गड़बड़ क्या हुई, जो दस रुपये लेकर बीस देने पड़ रहे हैं! छब्बे बनते बनते चौबेजी दुबे कैसे हो गए?

(क्रमशः)

व्यंग्य कविता

नया जमाना

चाचा बोले, "सुनो, भतीजे,
मानो बात हमारी;
इम्तिहान के दिन आए हैं
कर लो कुछ तैयारी।

कर लो कुछ तैयारी, बेटा,
छोड़ो सैर - सपाटा,
रोओगे, बैठेगा जिस दिन
सौ अंकों का घाटा!"

हंसकर बोला गुणी भतीजा,
"हम हैं तीरन्दाज!
नए जमाने में पढ़ने के—
नए नए अन्दाज!

नए नए अंदाज हमारे,
पक्की है तैयारी,
कांपें सभी परीक्षक हमसे,
हावी फौज हमारी!"

—सुधाकर दीक्षित

मक्खीचूस सम्मेलन

— पी.के.हरिवंश

www.kissekahani.com

मेरे पास जो डाक आती है, उसमें दिल्लीका एक प्रमुख समाचार-पत्र 'कंजूस समाचार' भी रहता है। संसार भरके कंजूसोंकी गतिविधियोंका विवरण उसमें रहता है। अभी हाल हीमें उसमें एक समाचार प्रकाशित हुआ था कि दरियागंजके 'कृष्ण भवन' में मक्खीचूसोंका सम्मेलन होगा और उसमें संसार भरके मक्खीचूस सामूहिक रूपसे अपनी समस्याओंपर विचार करेंगे। अपने रामको यह सम्मेलन देखनेकी लालसा इतनी तीव्र हुई कि परिश्रम करके, गली-बाजारोंकी खाक छानते हुए निश्चित तिथिपर 'कृष्ण भवन' की तलाश करनेमें आखिरकार सफल हो गए। भीतर घुसनेपर जब मेरी दृष्टि मंचपर गई, तो वहां लाल रंगके कपड़ेपर रंगीन अक्षरोंमें लिखा था—'अन्तरराष्ट्रीय मक्खीचूस महासम्मेलन'। इधर-उधर और भी कई पोस्टर लगे हुए थे। उनमें दो ऐसे थे जिन्हें देख और पढ़कर मैं अपनी हंसी न रोक सका। एकपर लिखा था—'मक्खीचूसो, कीटाणुचूस बनो'। दूसरेपर लिखा था—'चमड़ी जाए, पर दमड़ी न जाए'।

मैं निश्चित समयसे कुछ बाद पहुंचा था। कार्रवाई आरंभ हो चुकी थी। दर्शकोंके लिए निर्धारित स्थानपर मैं भी जा बैठा। कार्रवाई देखने लगा। ब्रिटेनके मक्खीचूसोंके प्रतिनिधि श्री सैमुअल पैन बड़ी ऊंची आवाजमें कह रहे थे कि सम्मेलनकी अध्यक्षताका प्रश्न वोटोंसे नहीं तय होना चाहिए। उपस्थित प्रतिनिधियोंको अपने अपने बुजुर्गोंके कारनामे सुनाने चाहिएं। जिसके बुजुर्गों के कारनामे आप सब मक्खीचूस महान समझें, उसे अध्यक्ष बना दें।

श्री पैनका सुझाव एकमतसे स्वीकार किया गया और उपस्थित मक्खीचूस अपने अपने बुजुर्गोंके कारनामे सुनानेके लिए बारी बारीसे माईकके सामने आने लगे।

फ्रांससे आए हुए श्री मेस्यू ऐल कहने लगे : "दूसरे महायुद्धकी बात है। हमारी सरकारने एक कंपनी बनाई थी। उस कंपनीका काम उन लोगोंका पता लगाना था, जो अमीर होनेके बावजूद गर्वोंपर माल ढोते थे और भिखारियोंका-सा जीवन व्यतीत करते थे। कुछ ही दिनोंमें इस कंपनीने सैकड़ों मक्खीचूसोंका पता लगा लिया। इस प्रकार दुनियाके सामने आने वालोंमें मेरे बुजुर्ग पिताजी भी थे। उनका नाम था मेस्यू डैक। वह वर्षों तक 'अपाहिज घर' में रहकर मुफ्त खाना खाते रहे हैं। उनकी

एक आदत थी जिसके कारण वह पकड़ लिए गए। वह आदत यह थी कि जब कभी वह कपड़े धोते, तो अपनी जाकेटको बहुत संभाल कर रखते। कंपनीके आदमियोंको संदेह हुआ, तो उनकी और उनके घरकी तलाशी ली गई। उनके पास १६,००० पौंड निकले। और यह भी पता लगा कि उनकी और भी बहुत बड़ी रकमें विभिन्न बैंकोंमें जमा हैं। मैं अपने पिताजीके पद-चिन्होंपर चलकर मक्खीचूसोंके हितोंकी रक्षा करूंगा। मुझे अध्यक्ष बनाया जाए।"

तालियां बजीं और इसके बाद तुर्कीसे आए हुए एक मक्खीचूस प्रतिनिधि उठे और कहने लगे—"मैं भी अपने बुजुर्ग दादाकी आपको कहानी सुनाने आया हूं। मेरे दादा ८१ वर्षों तक भीख मांगकर अपना निर्वाह करते रहे हैं। एक बार जब वह बीमार हुए, तो उन्होंने यह कहकर डाक्टर बुलानेसे इनकार कर दिया कि वह बहुत ही गरीब हैं। डाक्टरी सहायता न मिलनेसे वह बेचारे ईश्वरको प्यारे हो गए। उनके मरनेके बाद जब उनके कमरेकी तलाशी ली गई, तो उनके एक थैलेमेंसे सोनेके हजारों सिक्के मिले, जिनका मूल्य ६ लाख पौंडसे भी अधिक था। इसके अतिरिक्त उनके पास डाकघरकी कुछ किताबें भी थीं, जिनसे पता चला कि सेविंग फंडमें भी १५ सौ पौंड जमा हैं।"

सब लोग जोरसे हंसे और तालियोंसे सारा भवन गूंज उठा। उन्होंने कुछ और भी कहा, परंतु वह मुझे हो-हल्लेमें सुनाई नहीं दिया।

शिकागोसे आए हुए मक्खीचूस प्रतिनिधिने कहा: "मेरी बात और भी महत्वपूर्ण है। मेरे दादाजीसे उनके मालिक-मकानने गलतीसे किरायेमें एक रुपया अधिक वसूल कर लिया था। इससे उन्हें बहुत ही सदमा पहुंचा और उन्होंने कुएंमें कूदकर आत्महत्या कर ली।"

इसके बाद ग्रीनविचसे आई हुई एक श्रीमती मक्खीचूसने कहा: "जिस मांकी मैं बेटी हूं, वह मक्खीचूसोंकी सजीव मूर्ति थी। उसका पति मर गया, तो उसने उसके कपड़ोंको बचानेके लिए उन्हें स्वयं धारण कर लिया। उसने आम जनतासे सहायताकी प्रार्थना की और प्रकट किया कि मैं भूखों मर रही हूं। लोगोंने जब उसकी सहायता की, तब जाकर कहीं उसने पतिकी लाश दफनाई। इस महिलाको प्रायः कूड़ा-करकट टटोलनेकी आदत थी। जब वह मरी, तो कंजूसोंका पता लगाने वाली कंपनीको पता चला कि उसके विभिन्न बैंकोंमें ६० हजार पौंड जमा थे।"

इसके पश्चात् रोमकी एक महिला उठीं और अपनी दादीके कारनामोंपर प्रकाश डालती हुई कहने लगीं—"मेरी दादी बाहरसे इतनी गरीब दिखाई देती थी कि उसके पड़ोसी उसके रोटी-पानीका प्रबंध करते थे। नगरके उच्चाधिकारियोंपर भी उसकी गरीबीका प्रभाव था, और वे उसकी सहायता बराबर करते रहते थे। परंतु जब वह मरीं, तो उनके पास ९४ हजार पौंड निकले।"

पाकिस्तानके मक्खीचूसोंका प्रतिनिधित्व करनेके लिए रावलपिंडीसे एक मौलवी साहब भी आए थे। उन्होंने अपने बुजुर्ग मक्खीचूसकी कहानी सुनाते हुए कहा—"मेरे नाना मौलवी साहब बहुत बड़े मक्खीचूस थे। वह लोगोंकी खैरातपर गुजारा किया करते थे। जब मरने लगे, तो पड़ोसियोंने अपनी ओरसे डाक्टरको बुलाया। संबंधियोंने मौलवी साहबसे मरते वक्त कुछ खैरात करनेको कहा। इस पर मौलवी साहबने बड़े जोरसे अपने माथे पर हाथ मारकर कहा—'मेरे पास रखा ही क्या है जो मैं खैरात करूं।' परंतु जब वह मरे, तो उनके तकिएके नीचेसे कई हजारके करेंसी नोट मिले थे।"

वैन्डर®

फाउनटैन पैन निब

यह विदेशी स्टील से विदेशी सूक्ष्म मशीनों द्वारा बनाई जाती है। वैन्डर फाउन्टैन पैन की निबें खरौंच रहित और सरल प्रवाह लिखावट के लिये सर्वोत्तम है। भारत के अधिकृत श्रेष्ठ पैनों में हमारी निर्मित निब का प्रयोग किया जाता है। चिरकाल तक काम देने वाली यह निबें हर प्रकार के पैनों के लिये उपलब्ध है।

पैंसिल शार्पनर

अच्छी लिखाई के लिये अच्छी बनी हुई पैंसिल आवश्यक है। वैन्डर शार्पनर नोकीली पैंसिल बनाने में सर्वोत्तम हैं। क्योंकि इन के ब्लेड विदेशी स्टील के बने हुए हैं जो कि काफी तेज़ होने के अतिरिक्त चिरकाल तक काम देते हैं। स्कूल आफिस, ड्राफ्टस्मैन व आर्टिस्टों के लिये आदर्श हैं।

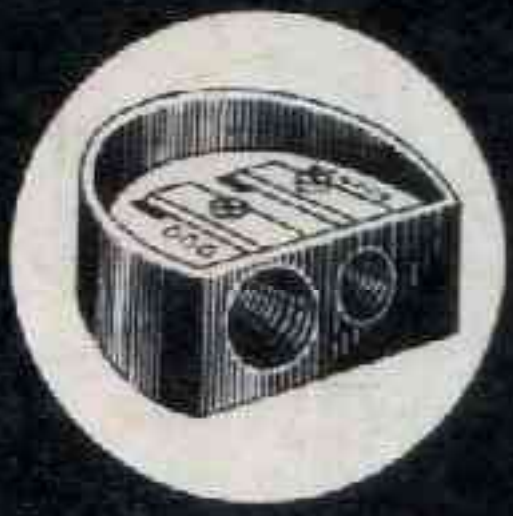

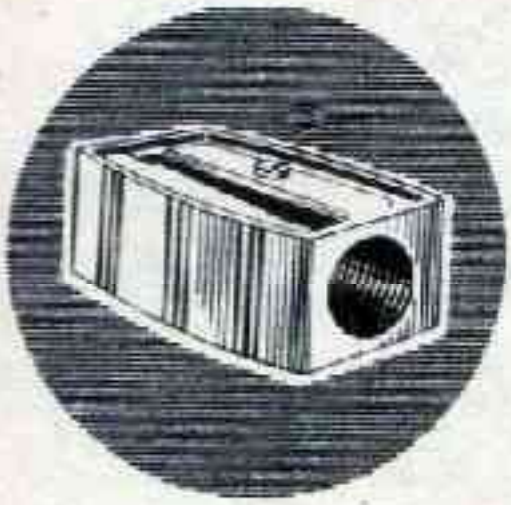

निर्माता

सुरेन्द्रा प्राडक्ट्स कम्पनी दिल्ली-८

एकमात्र वितरक :

ब्रटेन एण्ड कम्पनी ११५, चाँदनीचौक, दिल्ली-६

इसके बाद पेरूसे आए हुए एक प्रतिनिधि कहने लगे—"मेरी मां (जिसने मुझे अपना धर्मका बेटा बनाया था) का नाम मीरा राबर्टसन था। वह पेरूके एक मुहल्लेमें रहती थी। उसने सारी उमर विवाह नहीं किया। वह कहती थी कि मेरे पास विवाहपर खर्च करनेके लिए पैसे नहीं हैं। वह अपाहिज थी, इसलिए उसकी देखभाल करनेके लिए 'अपाहिज आश्रम' की ओरसे एक औरत नियुक्त कर दी गई थी। उसकी मृत्युके पश्चात् एक सरकारी अधिकारीने अकस्मात् उसका मकान देखा, तो वहां उसे कुछ थैले प्राप्त हुए। उन थैलोंको खोलनेपर उसे ४५०० पौंडके नोट और ४३० पौंडके पोस्टल आर्डर प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त ५ सौ पौंडके लगभग विभिन्न बैंकोंमें भी जमा निकले।

इसके बाद श्री सैमुअल पैनकी बारी आई। उन्होंने कहा: "सबने अपने बाप-दादाओंकी बातें कही हैं और मैं अपनी सुनाता हूं। मेरे पास १५ लाख पौंड थे, फिर भी मैं गधोंपर माल ढोया करता था। एक दिन मेरा एक पौंड जंगलमें कहीं गिर गया। इससे मुझे इतना सदमा पहुंचा कि मैंने आत्म-हत्या करनेका निर्णय किया। आत्म-हत्या करनेके लिए मैं एक दूकानपर रस्सा खरीदनेके लिए गया। दूकानदारसे रस्सेके दामपर मेरी चख चख भी हुई। दूसरी दूकानोंपर भी कम कीमतका रस्सा खरीदनेमें मैं विफल रहा। मुझे किसीने सस्ता रस्सा नहीं दिया और अंतमें मुझे आत्म-हत्याका विचार छोड़नेके लिए विवश होना पड़ा।"

श्री सैमुअलकी कथा सुनकर मक्खीचूसोंने जोर जोरसे तालियां बजाईं और ठहाके लगाए। सबसे अंतमें भारतके मक्खीचूसोंके प्रतिनिधि सरदार बंतासिंह कहने लगे—"मेरे बापको एक दिन सांपने डस लिया। घंटों टोने-टोटके होते रहे, परंतु उन्हें चेतना न लौटी। मैं और मेरी मां रोने लगे। ओझाओं की सहायतासे मेरे बापको चौकमें लिटाया गया। उसके सिरहाने लोगोंके कहनेपर मेरी मांने थोड़ा-सा गेहूं, थोड़ा-सा चावल रख दिया और गेहूंकी ढेरीपर आटेका दिया जला दिया। इतनी देरमें वहांपर एक पंडितजी आ गए। उन्होंने कहा कि इस समय कुछ दान-पुण्य भी हो जाना जरूरी है। रोती रोती मेरी मां अंदर चली गई और निकिल वाला रुपया ले आई। उसने जैसे ही रुपया मेरे बापके हाथपर रखा कि उसकी चेतना लौट आई। मेरे बापने पूछा, 'यह रुपया कैसा?' मेरे मांने कहा कि सब लोग कहते हैं कि जिसे सांपने काटा हो, उससे कुछ दान जरूर कराना चाहिए। मेरे बापने हाथ झटककर रुपया दूर फेंक दिया और कहा—'पहले तो मुझे सांपने नहीं काटा था, पर अब तुमने मेरे हाथपर यह रुपया रखकर मुझे सांपकी तरह काट खाया!"

सभी मक्खीचूस एक स्वरमें बोले कि सरदार बंतासिंहको ही सम्मेलनका अध्यक्ष बनाया जाए। श्री बंतासिंहने अपने चुनावपर समस्त मक्खीचूसोंको धन्यवाद देते हुए कहा, "आपने मेरा गौरव बढ़ाया है। मैं भी पूरा यत्न करूंगा कि मक्खीचूसोंकी प्रगति मक्खियों तक ही न सीमित रहे, बल्कि वे आगे बढ़ें और कीटाणु-चूस बन जाएं।"

सबने एक आवाजसे कहा—"मक्खीचूसोंके अध्यक्ष सरदार बंतासिंहकी जय!"

सम्मेलनसे घर वापस आते हुए सोच रहा था कि ये कंजूस मक्खीचूस बड़े ही विचित्र होते हैं, परंतु यदि ये कीटाणु-चूस बन गए, तो इनसे खतरा बहुत अधिक बढ़ जाएगा। भगवान ही बचाए इनसे! ●

'नाइन'

एक था नवयुवक। वह जर्मनीमें रहता था। अभाग्यवश उसे नौकरीके लिए अपना देश छोड़कर अमेरिका जाना पड़ा।

वह जहाजसे न्यूयार्क में उतरा। जांच-पड़तालके लिए उसे कस्टम अधिकारियोंके पास लाया गया।

एक अधिकारीने उसे बैठाकर अंग्रेजीमें पूछा, "तुम कितने लोगोंको यहां पर जानते हो?"

उसने कहा, "नाइन!"

इसी तरह उससे बहुतसे प्रश्न पूछे गए। नवयुवकने सबका उत्तर 'नाइन' कहकर दिया।

वह अधिकारी प्रत्येक सवालका उत्तर 'नाइन' सुनकर बड़े असमंजसमें पड़ गया। वह उसकी ओर आंखें फाड़ फाड़कर देखने लगा।

उसके पास ही एक स्वास्थ्य-अधिकारी खड़ा था। वह अपने साथीको संकटमें देखकर बोला, "मित्रवर! वह जर्मन बोल रहा है। जर्मन भाषामें 'नाइन' का मतलब अंग्रेजीमें 'नो' जैसा होता है।" यह सुनकर वह अधिकारी ठहाका मारकर हंसने लगा।

बच्चो, यह नवयुवक था कार्ल स्टीनमिट्ज, जिसने अपने कठोर परिश्रमसे बिजलीके ए. सी. करेन्टका पता लगाया था। यह करेन्ट सीधे टेढ़े-मेढ़े सब तरहसे आ-जा सकता है, जब कि डी. सी. करेन्ट केवल सीधे चल सकता है।

—हरिश्चंद्रसिंह

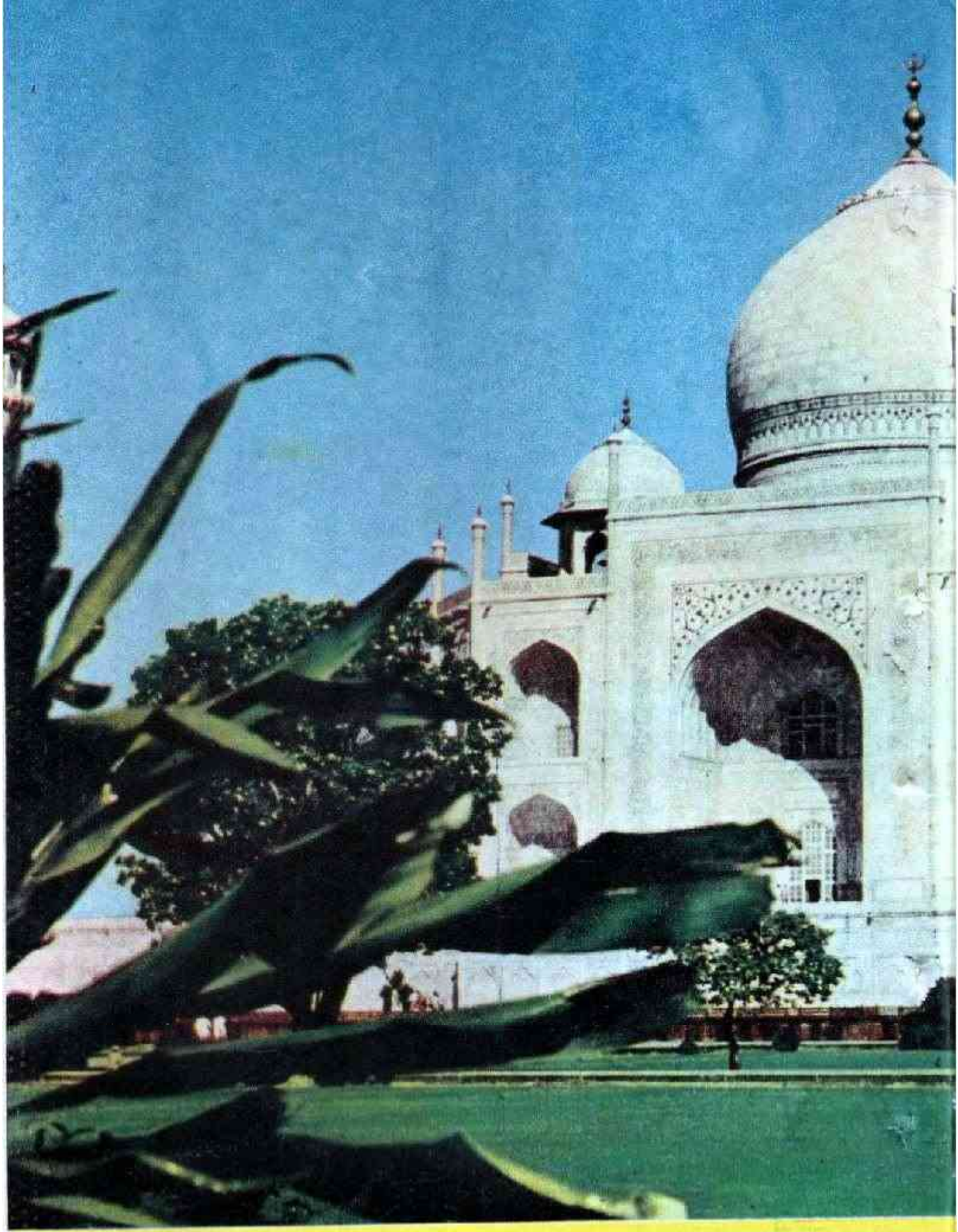

ताज

'पराग'की ओरसे नन्हे-मुन्ने
पाठकोंको विशेष उपहार

ग्रीष्मावकाशकी चांदनी रात

छाया : चंद्रकांता

महल

में बच्चे इसे देखने जाते हैं

मई १९६६

बुझूमलके कारनामे (पृष्ठ २३से आगे)

वह राक्षसराज मरने वाला नहीं है। न जाने किसने कब उसके दिमागमें यह बात घुसा दी कि बड़ेसे बड़े राक्षस इनसानका थूक अपनी पूंछपर पड़ते ही नरकधाम सिधार जाते हैं।

खैर, लोग लाख कहें, मगर जिसे जाना था वह तो गया ही। बहुत से लोगोंने उसके जानेका गम उसके मरनेके मातमके रूपमें पहले ही मना लिया। जाहिर था कि उन लोगोंने उसकी शैतानियोंका स्वाद नहीं चखा था। जिन लोगोंने चखा था उन्होंने सोचा कि चलो, बला टली।

जैसे पहले जाने वाले वापस नहीं आए थे, वैसे ही चंचल भी वापस नहीं आया। पतंगपुरके निवासियोंने समझ लिया कि वह भी राक्षसराजकी भेंट चढ़ गया। कहानी होंठों चढ़ी और कोठों चढ़ी—यहां तक कि राक्षसराजके तीन सिरोंके स्थानपर सौ सिर हो गए!

जिसके थोड़ा-सा भी दिमाग होगा, वह आसानीसे समझ जाएगा कि चंचल हरा गांव जाकर वापस क्यों नहीं आया। राक्षसके निगल जानेका तो खैर सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि कोई राक्षसका पुत्तर वहां मौजूद नहीं था। वह नलकू भाई और खरखरे भाईकी तरह स्वयं भी सेब और नाशपाती ढोनेमें जुट गया था। इसके अलावा वह लड़कियोंके दिमागसे अपनी पहली शैतानियोंके असरको भी निकाल बाहर करना चाहता था। पेड़ोंपर चढ़ना लड़कोंके लिए खुशीकी बात होती है और थोड़ी खतरनाक भी होती है। लेकिन कौन लड़का ऐसा है, जिसे खतरनाक खेलोंमें आनंद न आता हो।

इस दौरान अगर कोई घर बैठा काम करता रहा, तो वह थे श्री कूंचीरामजी, जो दनादन लड़कियोंकी तसवीरें बनानेपर जुटे हुए थे। तसवीरें भी कैसी कि किसी लड़कीको इस बातसे कोई मतलब ही नहीं था कि उसकी तसवीर उसकी शकलसे मिलती-जुलती है या नहीं। बस, खूब बड़ी बड़ी आंखें, धनुषाकार भौंहें, लंबी लंबी पलकें और नन्हा-सा मुंह। जब तक किसी चित्रमें यह सब न हो, तब तक वह किसी लड़कीका चित्र हो ही नहीं सकता। कूंचीरामने लाख समझानेकी कोशिश की कि हर लड़की अपने अपने तौर तरीकोंसे खूबसूरत होती है—लेकिन वहां कौन सुनने वाला था।

जब सारी तसवीरें लगभग एक सी ही बनानी ठहरीं, तो इसका एक और भी तरीका हो सकता है—कूंचीरामने सोचा। क्यों न बड़ी बड़ी आंखें, लंबी पलकों और टेढ़ी भौंहों और घुंघराले बालोंके स्टेन्सिल काट लिए जाएं। बस, उसने यही किया। गत्तेका एक टुकड़ा लेकर उसने उसके भीतर खूब बड़ी बड़ी आंखें काटीं, लंबी लंबी पलकें बनाईं, नन्ही-मुन्नी-सी नाक बनाई, छोटा-सा मुंह और गालपर नन्हा-सा तिल—दो छोटे छोटे हाथ और उनकी लंबी लंबी उंगलियां, छोटेसे कान और घुंघराले बाल—हो गया स्टेन्सिल तैयार। वह स्टेन्सिलको कागजपर रखता और मुंहके छेदपर लाल रंगका ब्रश मारता, आंख, नाक, कान, हाथ आदिपर त्वचाका रंग, सुनहरा या काला रंग बालोंकी जगह और काला या नीला रंग आंखोंकी जगह—फटाफट तसवीरें तैयार होने लगीं। बालों व आंखों आदिके रंगोंमें जरा-सा हेरफेर करनेसे ही वह तसवीर किसी भी लड़कीकी बन जाती थी। इससे काम इतनी तेजीसे होने लगा, जैसे पेंटिंगकी मशीन चल पड़ी हो। इसके साथ ही उसने शायदसिंहको भी इस धंधेमें अपने साथ लगा लिया। कागजोंपर स्टेन्सिलोंसे रफ शकलें बनानेका काम उसके जिम्मे रहा और उन रंगोंके ऊपर फाइन काम कूंचीराम कर देते।

अब तो शायदसिंह अक्सर यही कहता, "हम दोनों कलाकार मिलकर ये तसवीरें चुटकियोंमें तैयार कर लेते हैं।" लेकिन कूंचीराम इस तरहके कामको घटिया काम समझता था। उसके अनुसार, इन तसवीरोंसे पंसारीकी दूकानकी पुड़ियाएं ज्यादा अच्छी तरह बंध सकती थीं। लेकिन जिन लड़कियोंकी तसवीरें इस तरह फटाफट तैयार हो रही थीं, उन्हें इससे ज्यादा खुशी कोई नहीं थी कि उनकी तसवीरें वैसी ही हू-ब-हू बनीं, जैसी वे थीं—यानी अत्यंत सुंदर। शकल न मिले, कौन परवाह करता है! अपनी अपनी दृष्टि—अपना अपना दृष्टिकोण! (क्रमशः)

(रूपांतरकार : विनोदकुमार)

द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार २५० रु., दूसरा पुरस्कार १५० रु., तीसरा पुरस्कार १०० रु.

हिन्दीमें बाल-एकांकियोंका बहुत अभाव है। स्कूल-कालिजोंके बच्चोंको अपने वार्षिक समारोहोंमें मंच-पर खेलनेके लिए सुंदर एकांकी प्रायः नहीं मिलते। इस अभावको दूर करनेके लिए 'पराग' की ओरसे यह दूसरी बाल-एकांकी प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगी लेखकोंके लिए निम्नलिखित नियमों-का पालन आवश्यक माना जाएगा :

१—एकांकी मंचपर खेलने योग्य हों तथा पांचसे दस मिनिटमें समाप्त हो सकें।

२—विनोदपूर्ण एकांकियोंको तरजीह दी जाएगी। एकांकीमें किसी प्रकारका नैराश्य-भाव न हो। उन्हें एक सेटपर बिना बहुत अधिक सामान जुटाए खेला जा सके।

३—पात्रोंकी वेशभूषाओं, विशेषताओं आदिका क्रमबद्ध परिचय अलग कागजपर आना चाहिए, जिनके आधारपर उनके चित्र बन सकें। निर्देशक, मंच-व्यवस्थापक, सूत्रधार तथा लाइट-मैन आदिके लिए क्रमबद्ध निर्देश भी एक अलग कागजपर होने चाहिएं।

४—लिफाफेके ऊपर बाएं कोनेपर 'द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए।

५—रेडियो अथवा ध्वनि-एकांकी कृपया न भेजें।

६—एकांकी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होने चाहिएं। अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओंमें उपलब्ध एकांकियोंके आधारपर आने वाले एकांकी स्वीकार नहीं किए जाएंगे।

७—प्रत्येक एकांकीकी पांडुलिपिके ऊपर एक कोरा कागज अलगसे लगा होना चाहिए, जिसपर लेखक-का पूरा पता, एकांकीका शीर्षक, भेजनेकी तिथि आदि दर्ज हों। ऊपर बाएं कोनेपर 'द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए। पांडुलिपिके अंतमें भी लेखकका पूरा पता होना चाहिए।

८—जिन एकांकियोंपर पुरस्कार नहीं दिया जा सकेगा, किंतु जो 'पराग'में प्रकाशित करने योग्य समझे जाएंगे, उनकी सूचना अलगसे लेखकोंको दे दी जाएगी तथा उनपर नियमानुसार पारिश्रमिक दिया जाएगा। संपादकको शीर्षक बदलनेका अधिकार होगा।

९—अस्वीकृत एकांकियोंको उसी दशामें वापस किया जाएगा, जबकि प्रेषकका पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा।

१०—पांडुलिपि कागजकी एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरोंमें लिखी अथवा टाइपकी हुई होनी चाहिए। कृपया टाइपकी मूल प्रति ही भेजनेका कष्ट करें।

११—समस्त पांडुलिपियां हमें अधिकसे अधिक १८ मई १९६६ तक मिल जानी चाहिएं। पुरस्कार-विजेताओंके नाम 'पराग' के अगस्त १९६६ के अंकमें प्रकाशित होंगे। इस प्रतियोगिताके संबंधमें किसी प्रकार-का पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। अतः पांडुलिपिके साथ कोई पत्रादि न रखें।

१२—पुरस्कृत व स्वीकृत एकांकियोंका प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग' का होगा। इसके बाद कापी-राइट लेखकका रहेगा। तदनुसार मंच आदिपर खेलनेकी अनुमति देनेका अधिकार भी उन्हें ही होगा।

१३—एकांकी इस पतेपर भेजे जाएं—**संपादक, 'पराग' (द्वितीय 'पराग' बाल-एकांकी प्रतियोगिता)**, पोस्ट बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

मैट्रिकुलेशन के बाद ... (पृष्ठ १९ से आगे)

पत्र' मिल जाता है। बम्बईकी पोस्टल कालोनी-की सुश्री सावित्री वासवानीने सिलाईका काम सीखा और उनके पास इतना काम आने लगा कि जिस मकानमें वह रहती हैं, वह उनका अपना है।

लड़कोंके लिए रेडियो रिपेयरिंग आदिके कोर्स हैं, एक या दो सालका प्रशिक्षण प्राप्त करनेके बाद वे स्वतंत्र रूपसे अच्छी कमाई कर सकते हैं।

इस प्रकार जब हम देखते हैं कि स्कूली शिक्षा पूरी करनेके बाद हमारे लिए विकासके अवसर खुले हुए हैं तब ऐसी अवस्थामें अल्प साधनोंवाले बच्चोंके लिए केवल बी. ए. और एम. ए. की डिग्री लेकर बेकारी बढ़ानेकी अपेक्षा कहीं अच्छा यह है कि हम मैट्रिकके बाद किसी विशेष क्षेत्रमें प्रशिक्षण लें। बड़ा आदमी डिग्री लेकर नहीं बना जाता, बड़ा आदमी बननेके लिए सफल आदमी बननेकी आवश्यकता होती है और सफल आदमी वही बन सकता है जो शिक्षाका पूरा पूरा उपयोग कर सके। ●

गोनू झाके गांवका एक अमीर आदमी एक हफ्तेकी यात्राके बाद गांव लौटा था। उससे काफी लोग मिलने आ रहे थे। गोनू झा भी आए। दोनोंमें बातचीत होने लगी। गोनू झाने अमीर-से पूछा—"कहिए, कैसी रही यात्रा? किन किन दर्शनीय चीजोंको देखकर आप आ रहे हैं?"

वह आदमी सारे हफ्ते व्यस्त रहनेका ढोंग रचते हुए कहने लगा—"सनो, मैं सारा हफ्ता इस बुरी तरह फंसा रहा कि कुछ भी देखनेका समय न मिला। मैं तुम्हें हफ्ते भरका कार्यक्रम ही सुनाए देता हूं :

सोमवार—उस शहरमें आग लग गई। बहुत सारे आदमी अपने अपने घर छोड़कर भाग गए। काफी जान-मालका नुकसान हुआ।

मंगलवार—एक पागल कुत्तेने काफी लोगों-को काट खाया। पूरे शहरमें घबराहट फैल गई।

बुधवार— दरियामें खूब जोरोंकी बाढ़ आई। शहरके कई इलाके बह गए।

बृहस्पतिवार—शहरमें एक भेड़िया आया। कई बच्चोंको उठाकर ले गया। जिसके कारण शहरमें काफी भय फैल गया।

शुक्रवार—पड़ोसका एक आदमी पागल हो गया। उसने अपने बीवी-बच्चोंकी हत्या कर दी।

शनिवार— एक घरकी छत गिर पड़ी। कई लोग दबकर मर गए।

रविवार—अपने पतिसे तंग आकर एक औरतने आत्महत्या कर ली।"

"तो ये सारे काण्ड आपके चरण-कमलोंके उस नगरमें पड़नेकी बदौलत हुए। अच्छा हुआ आप जल्दी ही लौट आए। अगर कुछ दिन आप और वहां ठहर जाते, तो हम लोगोंके देखनेके लिए उस शहरमें कुछ न बचता!" गोनू झा बोले।

•

वर्षाका मौसम था। बारिश हो रही थी। गोनू झा अपने घरके दरवाजेमें खड़े खड़े बाहरका दृश्य देख रहे थे। इतनेमें एक आदमी दौड़ता हुआ सामनेसे गुजरा। गोनू झाने उसे अपने पास बुलाया और पूछा—"भाई, इस तरह बेतहाशा क्यों भागे जा रहे हो?"

"देखते नहीं कि बारिश शुरू हो गई है। इसी लिए दौड़ा हुआ घर जा रहा हूं कि कहीं भीग न जाऊं," उस आदमीने कहा।

"बारिश तो इंद्र भगवानकी कृपा है। भला देवताकी कृपासे भी कोई इस तरह जी चुराकर भागता है!" गोनू झाने कहा।

कुछ दिनों बाद एक दिन फिर बारिश हो रही थी। गोनू झा उस आदमीके घरके नजदीकसे सिरपर कपड़ा रखे हुए घरकी ओर दौड़े चले जा रहे थे। वह अपने घरके दरवाजेमें खड़ा था।

"क्यों, आप उस दिनका अपना ही उपदेश भूल गए?" वह बोला।

"नहीं तो।"

"फिर आज आप क्यों भागे जा रहे हैं? यह

मिथिला के बीरबल

गोनू झा

बारिश थोड़े ही है, यह तो इंद्र भगवानकी कृपा है!"

"और मैं भगवानकी कृपाको अपने पांवसे नहीं रौंदना चाहता, इसी लिए भागा जा रहा हूं!" गोनू झाका उत्तर था।

•

एक बार गोनू झा बाल मुंडवा रहे थे। नाईकी गलतीसे सिर कई जगह कट जानेके कारण खून बह रहा था। उसने उन कटी हुई जगहों पर रुईके फाहे जमा दिए। गोनू झाने

आइनेमें अपने सिरको देखकर कहा —"यह क्या किया तुमने?"

"उस्तरा लग जानेके कारण मैंने रुई जमा दी," नाई बोला।

"अच्छा, बस रहने दे। अब घर जाकर मैं शेष भागमें गेहूं बो दूंगा!" इतना कहकर गोनू झा घरकी ओर चल पड़े।

•

एक बनियेसे गोनू झाने कुछ रुपये कर्ज लिये थे। बहुत दिनोंसे उसका रुपया अटका हुआ था। गोनू झाके पास न रुपया होता था, न वह उस बनियेकी दूकानकी ओर जाते थे। एक दिन किसी आवश्यक कामसे गोनू झाको उस ओर जाना

(बच्चो, अकबर बादशाहके मित्र व मंत्री बीरबलका नाम तुमने जरूर सुना होगा। कितने हाजिर-जवाब और जिंदादिल थे वह। आज भी उनके चुटकुले लोगोंको हंसा हंसाकर लोटपोट कर देते हैं। कई सौ वर्ष पूर्व मिथिलामें भी बीरबल जैसे ही एक महाशय हुए हैं—गोनू झा। कैसा भी अवसर हो, गोनू झा अपने हंसोड़ स्वभावके कारण ऐसा वातावरण पैदा कर देते थे कि हंसते हंसते लोगोंके पेटमें बल पड़ जाते।

'पराग' के पिछले अंकोंमें तुमने उनकी बहुत-सी रंगीन फुलझड़ियां पढ़ी थीं। लो, अब उनकी कुछ और नई फुलझड़ियां पढ़ो।)

पड़ा। बनियेने उन्हें देख लिया। वह वहींसे चिल्लाने वाला था कि गोनू झाने उसे हाथके इशारेसे मना किया और झपटकर उसकी दूकान पर पहुंच गए और उसीके नजदीक बैठ गए। बनिएने कहा—"यह कैसी बात है? इतने दिन हो गए और आपने मेरा रुपया वापस नहीं किया। आज जैसे भी हो, मैं आपसे वसूल करके ही रहूंगा। आज नहीं दीजिएगा, तो बहुत बुरी बात होगी। आप इज्जतदार आदमी हैं, कहे देता हूं, हां!"

तभी उसके कानके नजदीक मुंह सटाकर गोनू झाने कहा—"बताओ, साहूजी, तुम्हारे कितने रुपये मेरी तरफ निकलते हैं?"

"पचास रुपये," उसने कहा।

"तो इसमें से २५ रुपये कल देता हूं और २१ रुपये परसों। ठीक है न?"

"हां।"

"अब तुम्हारे कितने रुपये रहे?"

यह प्रश्न गोनू झाने जरा जोरदार आवाजमें पूछा।

बनिया गोनू झापर क्रोधित तो था ही, उसने भी जोरसे कहा, "चार रुपये।"

"तो क्या तुम सिर्फ चार रुपयोंके लिए मेरी इज्जत उतार लोगे?" काफी जोरसे गोनू झाने कहा, "तुम्हारी यह हिम्मत!"

गोनू झाकी चिल्लाहट सुनकर बाजारके आते-जाते आदमी रुकने लगे। थोड़ा-सी देरमें एक भीड़ इकट्ठा हो गई। अब तो गोनू झाकी बन आई।

वह और जोर जोरसे गरजकर बोले, "देखो, लोगो, यह बनिया चार रुपये के लिए मेरी इज्जत उतार रहा है!" सब बनियेकी लानत-मलामत करने लगे। वह बेचारा अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

•

गोनू झा एक दिन अपने मित्रोंके बीच बैठे हुए थे। सभी खाने-पीनेके बारेमें बातचीत कर रहे थे। गोनू झाने भी अपनी इच्छा जाहिर की।

उन्होंने कहा, "कई दिनोंसे हलुवा खानेकी इच्छा हो रही है, पर पूरी नहीं होती।"

एक मित्र बोले—"यह कोई बहुत बड़ी बात तो नहीं है। हलुवा बनवाकर खा लीजिए।"

"इतना तो मैं भी जानता हूं। पर यह भी संयोग पर निर्भर करता है," गोनू झाने कहा।

"क्या मतलब?" दूसरे मित्रने पूछा।

"यही कि कभी घरमें घी रहता है, तो मैदा नहीं, मैदा रहता है, तो चीनी नहीं और जब तीनों सामान रहते हैं, तो मैं नहीं! हुई न संयोगकी बात?" गोनू झाने कहा। •

खेल-कूद

फुटबाल की कहानी

(परागके पिछले अंकोंमें तुमने फुटबालके जन्मकी कहानी, नियम, तरीके और खिलाड़ियोंके कौशलके बारेमें पढ़ा था। अब इस अंतिम किस्तमें पढ़ो 'संतोष ट्राफी प्रतियोगिता' के बारेमें।)

(५)

हां, तो लो सुनो संतोष ट्राफीकी कहानी।

करीब तीस साल पहले, हमारे देशने फुटबालमें इतनी ज्यादा प्रगति कर ली थी कि यह जरूरी समझा गया कि सारे देशमें खेले जाने वाले इस खेलकी देखभाल एक केंद्रीय संस्था द्वारा हो। भारतीय हाकी संघ और क्रिकेट संघकी तरह, भारतीय फुटबाल संस्थाको भी फुटबालकी सब राज्यीय और स्थानीय संस्थाओंका इंतजाम करने देनेका प्रस्ताव रखा गया। पर, यह प्रस्ताव आसानीसे पास न हो सका और अगले

हरिमोहन

कई साल तक यह मामला खटाईमें पड़ा रहा।

आखिरकार, २७ मार्च १९३७ को दिल्लीमें सारे देशकी फुटबाल संस्थाओंकी देखभाल करने वाली अकेली राष्ट्रीय संस्था—अखिल भारतीय फुटबाल संघका जन्म हुआ। संघने भारतीय फुटबाल संस्थाके अध्यक्ष संतोषके महाराजाके नामपर एक ट्राफी अ. भा. फुटबाल संघको भेंट की और कहा कि उस ट्राफीको अंतर-राज्यीय फुटबाल प्रतियोगितामें पहले नंबरपर आने वाले राज्यको हर साल दिया जाए।

फुटबाल संबंधी सामान्य ज्ञान

सवाल : १९६४ के ओलिम्पिक खेलोंमें भारतका प्रदर्शन कैसा रहा था?

जवाब : दुर्भाग्यसे १९६४ के ओलिम्पिक खेलोंमें भारत प्रारंभिक मैचोंमें ही हार जानेके कारण खेलोंमें भाग ही नहीं ले पाया था।

सवाल : अंतरराष्ट्रीय क्षेत्रमें हमारे फुटबाल खिलाड़ियोंने सबसे अच्छा खेल कब खेला था?

जवाब : जकार्तामें हुए एशियाई खेलोंमें। उस खेलको भारतके अंतरराष्ट्रीय फुटबाल जीवनका सबसे ओजस्वी और अविस्मरणीय प्रदर्शन कहा जा सकता है। इंडोनेशियाके खिलाफ हुए फाइनलमें, कुछ गलतफहमियोंके कारण वातावरण अत्यंत दूषित हो गया था। जब फाइनल मैच खेलनेके लिए चुन्नी गोस्वामीके नेतृत्वमें भारतीय टीम मैदानमें उतरी, तो एक ओर एक लाखसे अधिक दर्शक, जो इंडोनेशियाके थे, भारत-विरोधी नारे लगा रहे थे, और दूसरी ओर कृतसंकल्प इंडोनेशियाई खिलाड़ी भी भारतको हरानेके लिए पूरा जोर लगा रहे थे। पर, भारतने इंडोनेशियाई खिलाड़ियोंपर २–१ से सनसनीखेज विजय प्राप्त कर भारतीय फुटबालको एक नई गरिमा प्रदान की।

सवाल : अर्जुन-पुरस्कार पाने वाले भारतीय फुटबाल खिलाड़ियोंके नाम बताइए।

जवाब : पी. के. बनर्जी और बालाराम।

सवाल : फुटबालकी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओंमें विजय पानेके लिए हमें क्या करना होगा?

जवाब : विदेशी टीमोंका खेल हमसे ज्यादा वैज्ञानिक और आक्रामक है। उन्हें मात देनेके लिए हमें भी 'तीन-बैक' या '४–२–४' की खेल-पद्धतियोंको अपनाना होगा। सभी खिलाड़ियोंके लिए बूट पहनकर और १० मिनिट तक खेलना भी जरूरी होना चाहिए।

सवाल : अमरीकी फुटबाल, 'एसोसिएशन फुटबाल' से भिन्न है क्या?

जवाब : हां, अमरीकी फुटबाल मारधाड़का खेल है। उसमें फुटबालसे ज्यादा खिलाड़ियोंको मारा जाता है।

१९५८ तक इस प्रतियोगिताको क्षेत्रीय आधारपर आयोजित किया जाता रहा था, पर इसके बाद इस प्रतियोगिताके मैच 'लीग-कम-नाक आउट' आधारपर होने लगे। हर साल २० के करीब टीमें इस प्रतियोगितामें भाग लेती हैं।

संतोष ट्राफी सबसे ज्यादा बार बंगालने जीती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि बंगालके खिलाड़ी हमेशासे फुटबालमें दूसरे राज्योंके खिलाड़ियोंसे आगे रहे हैं। बंगालके अलावा बम्बई, मैसूर, दिल्ली और हैदराबादकी टीमें भी इस प्रतियोगितामें सबसे ऊंचा स्थान पा चुकी हैं।

यूं तो १९२४ से ही हमारे देशके खिलाड़ियोंने विदेशोंके अच्छेसे अच्छे खिलाड़ियोंसे टक्कर लेनी शुरू कर दी थी, पर दूसरे देशोंके खिलाड़ियोंके मुकाबलेमें हमारे देशके खिलाड़ी कहां हैं, इसका अनुमान हमें पहली बार तब हुआ, जब १९४८ में पहली बार भारतने अपनी फुटबाल टीम लंदनमें आयोजित ओलिम्पिक खेलोंमें भाग लेनेको भेजी। वहां पहले ही मैचमें फ्रांसने हमें २–१ से हरा दिया। १९५२ में ओलिम्पिक खेलोंमें हम फिर हारे। इस बार यूगोस्लावियाके हाथों १०–१ से। पर, आरंभकी इन करारी हारोंसे हमारे खिलाड़ी हताश नहीं हुए और १९५६ के ओलिम्पिक खेलोंमें उन्होंने अपने शानदार और कमालके खेलसे सबको चकित कर दिया। भारतने इस बार फुटबाल प्रतियोगितामें चौथा स्थान पाया।

क्वार्टर-फाइनलमें आस्ट्रेलियाके खिलाफ खेले गए मैचमें भारतके सेन्टर-फारवर्ड डिसूजाने आस्ट्रेलियापर एकके बाद एक, लगातार ३ गोल किए थे। ऐसा कमाल बहुत कम खिलाड़ी दिखा पाते हैं। इस मैचमें भारतने आस्ट्रेलियाकी शक्तिशाली टीमको ४–२ से हराया, पर सेमी फाइनलमें वह यूगोस्लावियासे ४–१ से हार गया। तीसरे स्थानके लिए मैचमें भारत बल्गेरिया से ३–० से हारा।

१९६० में ओलिम्पिक खेलोंमें भी भारत बुरा नहीं खेला। हालांकि पहले मैचमें वह हंगरी से १–२ से हारा, पर फ्रांससे हुए मैचमें वह १–१ से बराबर रहा। तीसरे मैचमें वह पेरूकी तगड़ी टीमसे ३–० से पराजित हुआ।

१९५१ के एशियाई खेलोंमें भारतने इंडोनेशिया, अफगानिस्तान और ईरानको क्रमशः ३, ३, और १ से हराकर सोनेका तमगा जीता था। पर, मनीलाके एशियाई खेलोंमें भारत कुछ नहीं कर पाया। हां, जब १९५३-५४ में 'कोलम्बो कप' के लिए भारत, बर्मा, पाकिस्तान और लंकाके बीच एशियाई क्वाड्रेन्गुलर प्रतियोगिताएं आरंभ हुईं, तो भारतने हर बार कप जीता।

फुटबाल हमारे देशका सबसे अधिक लोकप्रिय और सबसे ज्यादा खेला जाने वाला खेल है। कम खर्चीला होनेकी वजहसे इसकी लोकप्रियता दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। (समाप्त)

(फुटबालकी कहानी बस यहीं समाप्त होती है; अब अगले अंकसे काफी लोकप्रिय खेल 'लान टेनिसकी कहानी' शुरू होगी।)

वे बचपन के दिन

छह दिन पहले लिटिलटन, कोलोरेडो से मेरे बड़े भाईका एक पत्र आया था, उसे पढ़कर बचपनकी एक घटना याद आ गई। उस दिन झगड़ा हो जानेपर रूठकर पिछवाड़ेके बगीचेमें भाग गई थी। वहां जुगनुओंको आंख-मिचौली खेलते देख, क्रोध भूल जुगनू पकड़ने लगी। बादमें मां मुझे खोजती हुई वहां आईं। वह गुस्सेसे कुछ कह सकें, इससे पहले ही मैंने वह जुगनू भरा रूमाल उनकी ओर बढ़ा दिया, और गीत भरे स्वरमें बोली—

बांध अपने सफेद रूमालमें
मैंने जुगनूको जेल दी,
और जुगनूने
(मानो उत्तरमें)
मेरी जेलमें
रोशनी भर दी ...

"किसी बेजबानको कष्ट देना अच्छा नहीं होता, बेटी," मांने कहा और रूमालके किनारे खोल दिए। आंखोंके आगे जैसे बीसियों तारे पल भरको बिखर बिखरकर, झुरमुटोंमें खो गए।

कभी सोचती हूं—'काश! मेरे वे बचपनके दिन, आजके सभी बच्चोंके जीवनमें लौट सकें।'

—सोमा वीरा

बंगला कहानी

नोटिस

www.kissekahani.com

एककौड़ीकी कोशिश यही रहती है कि वह वकीलके साये तकसे बचे रहें, क्योंकि एक बार उनका पाला किसी वकीलसे पड़ गया था, जब वह अदालतमें गवाही देने गए थे। लोग कहते हैं, वकीलके सवालोंसे परेशान होकर वह कचहरी में ही रोने लग गए थे, और ऐसे घबड़ाए थे कि कोशिश करनेपर भी बाप तकका नाम याद नहीं कर पाए। यह बहुत पहलेकी बात है। इस बार वह फिर एक वकीलके पचड़ेमें फंस गए हैं।

एककौड़ी बाबूका मकान लबे-सड़क है। उस दिन वह बाजारसे बड़े बड़े केले लेकर आए थे। छोटे बेटेने चुपके चुपके दो केलोंका भोग लगाया और पकड़े जानेके डरसे छिलके फेंक दिए सामनेके फुटपाथपर। उधरसे ऊंची एड़ीके सैंडिल पहने एक मेमसाहब निकलीं। उन्होंने जैसे ही केलेके छिलकेपर पांव रखा कि छिटककर पांच हाथ दूर चारों खाने चित नजर आईं। गाड़ी, मोटर सभी ठहर गए, तीनकौड़ीके मकानकी छतसे थोड़ा चूना भी टूट गिरा। एकबारगी हो-हल्ला मच गया। दस-बारह लोगोंने मेमसाहबको बड़ी मुश्किलसे किसी प्रकार खींच-तानकर उठाया। वह तो सीधी हो गईं, लेकिन उनकी कमर सीधी न हो सकी। टैक्सी भला कहां आसानीसे मिलती। काफी देर बाद टुन-टुन करती एक रिक्शा आई। रिक्शावालेसे कहा गया, तो उसने पहले तो मेमसाहबको एड़ीसे लेकर चोटी तक गौरसे देखा, उसके बाद बोला, "रिक्शा है, साहब, टक तो नहीं!" और वह रिक्शाकी घंटी टुनटुनाता आगे बढ़ गया। जिस-तिस प्रकार एक भैंसा गाड़ीवालेको राजीकर मेमसाहबको उस पर लादा गया।

अगले दिन दस बजे एककौड़ी बाबूके नाम एक बड़े वकीलका नोटिस आया। उसमें लिखा था: 'इसके द्वारा आपको सूचना दी जाती है कि पिछली १३ अप्रैलको दस बजे आपके मकानके सामने सड़कपर केलेके छिलके पड़े थे। इस वजहसे फिसल जानेसे मेरी मुवक्किल मिस फेदरवेट गिर पड़ीं और उनकी कमरकी हड्डी टूट गई है। डाक्टरोंका कहना है कि एक खच्चरके शरीरसे हड्डी लेकर मेमसाहबके लगाई जाएगी। उस हड्डीका मूल्य पांच सौ रुपये होता है। इसलिए आप आजसे सात दिनके अंदर इतने रुपये इस ठिकानेपर जमा करा दें, वरना आपपर फौजदारीका मुकदमा चलाया जाएगा।'

गजब हो गया! एककौड़ी बाबू पत्र पढ़ते ही माथा पकड़कर बैठ गए। अब कहांसे जुटाएं वह पांच सौ रुपये! इधर समय भी सिर्फ सात दिन का है। उसके बाद अदालत, फिर वकीलकी जिरह। उनकी भूख-प्यास-नींद सभी गायब हो गई। शरीर सूखकर आधा रह गया, किंतु कोई कूल-किनारा दिखता नजर नहीं आया।

सात दिन बीत गए। उन्होंने घरसे बाहर निकलना कतई बंद कर दिया। सारा दिन घरका सदर दरवाजा बंद रहता। लोग पुकारनेपर भी उनसे न मिल पाते। एककौड़ीका गुड़का धंधा था, वह भी बिल्कुल ठप्प पड़ गया। इससे उनकी पत्नी परेशान हो उठीं, किंतु एककौड़ी बाबू-को तो जैसे सांप सूंघ गया हो।

उस दिन दोपहरके समय एककौड़ी बाहर-का दरवाजा बंद करके सो रहे थे, तभी किसीने दरवाजेपर कुंडी झनझनाई। छोटे बेटे लिट्टूने दरवाजा खोलकर देखा, तो वहां अदालतका चपरासी खड़ा था—पीतलकी चपरास लगाए।

"एककौड़ी बाबू हैं?"

एककौड़ी हड़बड़ाकर उठे, एकबार देखा और फिर से चादर तान सो गए। साथ ही साथ नाकसे खुर्राटे भी निकलाने लगे।

चपरासीने आवाज लगाई, "आपका नाम एककौड़ी घोष है?"

एककौड़ी गहरी नींद सो रहे थे, सोते ही रहे!

"ओ महाशय, सुनते हैं? आप ही एककौड़ी घोष —वल्द पीतांबर घोष हैं?"

अब एककौड़ीकी नाक इतने जोरसे बजन लगी कि रास्ता चलते लोग ठहर गए।

चपरासी आसानीसे छोड़ने वालोंमेंसे नहीं था। बाहर बरामदेमें डटकर बैठ गया।

डेढ़ घंटा बीता, शाम होनेको आई। लिट्टू-ने आकर पुकारा, "बापू, ओ बापू, आज उठोगे नहीं क्या?"

एककौड़ीने सिर उठाकर चुपके चुपके पूछा, "चपरासी चला गया क्या?"

बाहरसे जवाब आया, "जी नहीं, मैं अभी नहीं गया हूं। आप ही एककौड़ी घोष हैं न?"

एककौड़ीने चारों ओर देखा, समझ गए कि आसानीसे पीछा छूटने वाला नहीं है, अतएव गंभीर स्वरमें बोले, "नहीं!"

"लेकिन माँ, वह मेरी सारी पैरी की मिठाइयाँ लेना चाहता था !"

पैरी की मिठाइयों का अपना हिस्सा किसी को कभी देते हुए तो इसे देखिये ! बच्चा हो या बूढ़ा, पैरी की मज़ेदार पौष्टिक मिठाइयों की अच्छाई को सभी लाजवाब पाते हैं। मौका चाहे जैसा भी हो, पैरी की मिठाइयों का आनन्द आप बराबर ले सकेंगे। खुदरा लीजिये या सुन्दर छपे फैन्सी डिब्बों में। मिलकर खाइये। पैरी की मिठाइयों से ज़िन्दगी में चार चाँद लग जाते हैं !

Parry's

पैरीज़—उच्चकोटि की मिठाइयाँ बनानेवाले

क्या आपने आजमाया है : सुपर बटरस्काच • डेवन क्रीमी टाफी • हेल्थ फ्रुट्स • जिंजर कैप्स

पैरीज़ कानफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

JWT/PRS 3454A

"तो आपका नाम क्या है?"

"मोहिनी कांजीलाल।"

"पिताका नाम?"

"पीतांबर घोष।"

चपरासी हंसने लगा, "यह क्या, महाशय, नाम क्यों छिपा रहे हैं? आपके नाम एक अदालती नोटिस है।"

एककौड़ी अधमरेसे हो गए। गुस्सेसे चिल्लाकर, हाथ-पैर फैलाते हुए तेज स्वरमें बोले, "कैसे अजीब बूदम हो तुम? कह रहा हूं, मैं एककौड़ी नहीं हूं फिर भी नोटिस नोटिस किए जा रहे हो। मैं एककौड़ी नहीं हूं, कभी था भी नहीं, कभी होऊंगा भी नहीं! मेरे चौदह पुरखोंमें कोई एककौड़ी नहीं हुआ—मैं वसीयत लिख जाऊंगा, जिससे अगली चौदह पीढ़ियों तक कोई एककौड़ी नहीं हो सकेगा! खबरदार इससे आगे कुछ कहा तो. . .।" यह कहकर उन्होंने छोटी मेज उठाकर चपरासीको मारनेकी धमकी दी।

इसके बाद एककौड़ीके मकानके सदर दरवाजेपर हर समय ताला झूलता रहने लगा। ऊपर–नीचेके सभी दरवाजे-खिड़कियां हर समय बंद रहते। रातके समय बत्ती जलानेपर भी ब्लैक आउटका कानून लागू रहता। छोटी बच्चीकी उम्र अभी कम थी। एककौड़ीने अपनी पत्नीको कह रखा था—जब भी इसका रोना सुनूंगा, तो लौंडियाका गला ही दबाके रख दूंगा।

दो दिन बाद मकानके सामने कुछ लोगोंकी आवाजें सुनकर जब दोतल्लेसे एककौड़ीने खिड़कीकी फांकसे नीचे देखा, तो स्तब्ध रह गए। वही चपरासी आया था। साथमें दो चपरासी तथा एक बाबू—शायद नाजिर-वाजिर होगा—मौजूद थे। ताला बंद देखकर लगता था जैसे वे वापस लौटने वाले हों, लेकिन जहां बाघका डर वहीं संदेहका घर होता है। ऐन उसी मौकेपर आ टपके जमाई महाशय।

बाबूने पूछा, "यह किसका मकान है?"

जमाई बोले, "एककौड़ी घोषका!"

"ताला क्यों पड़ा है?"

"पता नहीं। लगता है घूमने-घामने गए हैं। अच्छा, मैं देखता हूं।—लिट्टू! ओ लिट्टू!"

लिट्टू एककौड़ीका छोटा लड़का, नीचे ही कहीं था, भागता हुआ आया। पत्नीने भी जमाईकी आवाज सुन खिड़की खोली। दरवाजा खोला गया। जमाईके साथ अन्य लोग भी घुस पड़े। जमाईके ऊपर आते ही ससुरने दांत-मुंह बिचकाकर कहा, "दो दिन तक और सब्र नहीं कर सके आप?"

मरता क्या न करता एककौड़ीको नीचे आना ही पड़ा। अदालतके बाबूने पूछा, "आप एककौड़ी घोष हैं?"

"नहीं?"

"आपका नाम?"

"मेरा नाम नहीं है।"

"देखिए, आपने हम लोगोंको बहुत सताया है, हमारे चपरासीको मेज उठाकर मारनेकी धमकी दी। इस समय भी अगर आपने ठीक ठीक जवाब नहीं दिया, तो अपको अदालत जाना पड़ेगा।"

अदालतका नाम सुनते ही एककौड़ीका कलेजा धड़धड़ करने लगा। किंतु उस दिन चपरासीको जो उन्होंने नाम बताया था वह उन्हें याद नहीं आ रहा था। कुछ देर सोचकर बोले, "मेरा नाम ननीगोपाल चाकलादार है।"

उस दिन वाला चपरासी हंसकर बोला, "मालूम होता है कि आपका नाम रोज बदलता रहता है? मोहिनीसे ननी और कांजीलालसे चाकलादार?"

एककौड़ी गुस्सेसे बोले, "क्या किसीके दो नाम नहीं होते हैं? मेरे भी दो नाम हैं–एक पिता जीका दिया हुआ दूसरा मांका।"

अदालतके बाबूने कहा, "तो फिर आप एककौड़ी नहीं हैं, न!"

"कितनी बार कहूं, महाशय! एककौड़ी दोकौड़ी, सातकौड़ी, नौकौड़ी तो दूर, मैं हजारकौड़ी या लाखकौड़ी भी नहीं हूं!"

तभी 'एककौड़ी हैं क्या?' कहते कहते एक महाशय घरमें घुस आए। यह एककौड़ीके घनिष्ठ मित्र महितोष बाबू थे। बहुत दिन बाद आए थे। "क्या है, एककौड़ी? यह मामला क्या है? ये सब कौन हैं?"

अब तो एककौड़ीका बेड़ा ही गर्क हो गया! फिर भी जिस प्रकार डूबतेको तिनकेका सहारा मिल जाता है, उसी प्रकार वह बोले, "मैं आपको पहचान नहीं पाया! आप निश्चय ही भूलकर

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

कहानी

एक खिलौने की बात

सभी बच्चे खिलौने पसंद करते हैं। छह सालके नन्हे चंदनको भी खिलौने बहुत पसंद थे।

उसके पापा हर दूसरे-तीसरे दिन उसके लिए कोई न कोई नया खिलौना जरूर लाते थे। इस तरह चंदनके पास बहुत सारे खिलौने इकट्ठे हो गए थे।

उसकी छोटी-सी लकड़ीकी अलमारीके एक खानेमें रेशमकी गुड़िया, चीनीका गुड्डा, टिनका हाथी, लकड़ीका टट्टू, कपड़ेका घोड़ा और उसपर बैठा बैठा मूंछें ऐंठता कागजका घुड़सवार—रखे थे। दूसरे खानेमें थे—टिनकी मोटर, मिट्टीके खिलौने, जर्सी और फुटबाल। रबड़के खिलौने—बैंड बजाता मढक, ढोल बजाता भालू और नाचती बंदरिया अलमारीके ऊपरवाले खानेमें रखे रहते थे।

इसी तरह चंदनकी मेजपर एक तरफ बगुले महाशय सफेद कपड़े पहने इस तरह खड़े थे जैसे कोई पहुंचे हुए पंडित हों, और दूसरी तरफ काले रंगका कौवा बिलकुल नाई बना खड़ा था। ऐसा लगता था कि बगुला पंडित और कौवा नाई, रेशमकी गुड़िया और चीनीके गुड्डेकी शादीका प्रस्ताव लेकर, चंदनसे राय लेनेके लिए उसकी मजपर खड़े हैं।

इन खिलौनोंमें जो खिलौना चंदनको सबसे ज्यादा पसंद था, वह थी एक रेशमी बालोंवाली रेशमकी बिल्ली। यह बिल्ली चंदनके पापा थोड़े दिन पहले ही लाए थे। जब वह बिल्लीकी पीठपर लगे एक बटनको दबाता, तो बिल्ली गाती—'म्याऊं, म्याऊं, इंगलिश बिस्कुट खाऊं!' और इसके साथ ही बिल्लीका मुंह खुल जाता। चंदन बिल्लीके मुंहमें एक बिस्कुट डाल देता। वह बिल्लीको प्यारसे पूसी कहता और उसके साथ खेलकर बहुत खुश होता।

धीरे धीरे दिन गुजरते गए। चंदनके पापा उसके लिए नित नए खिलौने लाते रहे और ये नए नए खिलौने चंदनका दिल मोहते रहे, उसका दिल बहलाते रहे।

उसके खिलौनोंकी तादाद तेजीसे बढ़ रही थी। अब ऐसा लगता था कि वह पूसीको भूल गया है क्योंकि उसने पूसीके साथ खेलना अब छोड़ दिया था। उसका ध्यान पूसीसे हट गया था।

अब पूसी चंदनकी मेजपर उदास पड़ी रहती थी। उसके शरीरपर कई जगह धूल जम गई थी। उसके दोनों कान, जो हमेशा खड़े रहते थे, अब उसके चेहरेपर लटक आए थे। बटनकी बनी हुई काली चमकीली आंखें, धागोंके साथ उसके गालोंपर झूल रही थीं। ऐसा लगता था, जैसे पूसी चंदनकी लापरवाहीपर रो रही हो।

एक दिन जब चंदन स्कूल गया हुआ था, उसकी मम्मीने ऐसे खिलौने, जो टूट-फूट गए थे

या जिनकी हालत खराब हो गई थी, इकट्ठे किए। जब उनकी नजर मेजपर रखी पूसीपर गई, तो उन्होंने उसे भी टूटे-फूटे खिलौनोंमें शामिल कर लिया। वह खूब जानती थीं कि यह चंदन-का प्रिय खिलौना है। लेकिन उन्होंने सोचा, अब उसकी हालत भी तो बहुत खराब हो गई है। और फिर चंदन इससे जी भरकर खेल भी तो चुका है। वह इस रद्दी खिलौनेको रखकर अब क्या क्या करेगा?

चंदनकी मम्मीने ये सब खिलौने एक बड़े डिब्बेमें रखे और उन्हें गरीब व बीमार बच्चोंके अस्पतालमें भेज दिया।

जब चंदन स्कूलसे लौटा, तो खेल ही खेलमें अचानक उसे पूसीकी याद आ गई। उसने मेजकी तरफ देखा, तो उसका दिल धक्कसे रह गया। पूसी मेजपर नहीं थी। उसने मेजके नीचे टटोला, अपनी अलमारीमें तलाश किया, घरका एक एक कोना छान मारा, लेकिन पूसीका कहीं भी पता नहीं था।

आखिर परेशान होकर चंदन अपनी मम्मीके पास गया और उनसे पूछा, "मम्मी, मेरी पूसी कहां है?"

मम्मी खामोश रहीं। उन्हें चुप देखकर चंदन पापाके पास गया और उनसे बोला—"पापा, आपने कहीं मेरी पूसीको देखा है? वह मेरी मेजपर रखी थी।"

चंदनकी आंखोंमें आंसू थे। मम्मी और पापाने परेशान निगाहोंसे एक दूसरेको देखा। फिर मम्मी बोलीं—"हां, चंदन, हमने तुम्हारी पूसी-को अस्पतालके गरीब और बीमार बच्चोंके लिए भेज दिया है। हमने वहां तुम्हारे और भी कई टूटे-फूटे खिलौने भेजे हैं। हम पूसीकी जगह तुम्हें और कोई बढ़िया खिलौना मंगा देंगे। और फिर तुम्हारी पूसीकी हालत भी तो खराब हो . . ."

अभी मम्मी पूरी बात भी नहीं कह सकी थीं कि चंदनके आंसू तेजीसे बहने लगे। वह दोनों हाथोंसे मुंह छिपाकर नीचे बैठ गया और सिस-कियां लेने लगा।

पापा और मम्मीने उसे चुप करानेकी जितनी कोशिश की, वह पूसीको याद करके उतना ही ज्यादा रोने लगा। उसे पूसीके अलावा अपने और किसी खिलौनेकी फिक्र नहीं थी।

वह पूसीके लिए जिद करता रहा। पूसीकी जगह नया खिलौना ला देनेकी बात भी उसे मंजूर नहीं थी। अगर पूसी मैली-कुचैली थी या उसकी हालत बिगड़ गई थी, तो क्या हुआ। तब भी चंदनको तो वह प्यारी थी। वह एक ही तो उसका प्यारा खिलौना था।

उस रात चंदनने न कुछ खाया न पिया। वह चुपचाप अपने बिस्तरपर जाकर सो गया।

अगले दिन सवेरे जब वह सोकर उठा, तो उसकी आंखें बोझिल थीं और उसके चेहरेपर आंसुओंके निशान थे। ऐसा लगता था कि वह

सीखने में देर क्या सबेर क्या!

एक नन्हे बालक का कपड़े पहनना सीखना उसके युवा होने का प्रमाण है। आप उसे स्वावलम्बी बनना सिखाकर शक्तिशाली बनाते हैं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें—उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखावें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मैनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बेग नं. १००३१, बम्बई १.

P. 10

मुफ्त! "दांतों और मसूढ़ों की रक्षा" संबंधी रंगीन पुस्तिका

यह पुस्तिका हिंदी और अंग्रेजी में मिलती है। इसे मंगवाने के लिए १० पैसा के टिकट (डाक खर्च के वास्ते) इस पते पर भेजिए: मैनर्स डेण्टल एडवाइज़री ब्यूरो, पोस्ट बेग नं. १००३१, बम्बई-१

नाम : _____

पता : _____

भाषा : _____

रात भर सोया नहीं है, और रोता रहा है ।

मम्मीसे चंदनकी यह हालत नहीं देखी गई । अब उसको खुश करनेका सिर्फ एक ही तरीका था । उन्होंने सोचा—'पूसीको अस्पतालसे वापस मंगवा लिया जाए ।'

मम्मी चंदनको अपने साथ लेकर बच्चोंके अस्पताल गईं । अस्पतालके एक बड़े कमरेमें, दरवाजेके पास, सफेद कपड़े पहने एक नर्स बैठी थी । उसके सामने टूटे-फूटे खिलौनोंका एक बड़ा ढेर लगा हुआ था । सामने कोनेमें एक दूसरी नर्स टूटे-फूटे खिलौनोंको, कैंची, सुई, धागे और गोंदकी मददसे, ठीक कर रही थी । मम्मीने उसे बतलाया कि चंदनकी पूसीको गलतीसे यहां भेज दिया गया है । चंदन उसके लिए रात भर रोता रहा है ।

नर्स कुछ देर सोचती रही । फिर वह चंदन और उसकी मम्मीको बच्चोंके एक बड़े कमरेमें ले गई । वहां बहुतसे बच्चे थे । कुछ बीमार बच्चे बिस्तरोंपर लेटे हुए थे । उसी कमरेमें एक तरफ कुछ बच्चे किसी नए खिलौनेसे खेल रहे थे । उसी खिलौनेकी तरफ इशारा करते हुए नर्सने कहा—"देखो, चंदन, वही है न तुम्हारी पूसी? जाओ, अपने हाथों से उठा लो ।"

चंदनने देखा कई बच्चे पूसीसे खेल रहे थे । एक बच्चा पूसीकी पीठपर लगा बटन दबा रहा था । पूसी गा रही थी—'म्याऊं म्याऊं, इंगलिश बिस्कुट खाऊं!' उसका यह गीत सुनकर बच्चे दौड़ दौड़कर कमरेकी नर्ससे बिस्कुट लाकर पूसीके मुंहमें डाल रहे थे । वे बच्चे, जो बीमारी की वजहसे बिस्तरसे उठ नहीं सकते थे, पूसीका गीत सुनकर अपने बिस्तरोंपर तालियां बजा रहे थे । कुछ बच्चे पूसीके गानेकी नकल भी कर रहे थे । सभी बच्चे बहुत खुश थे ।

जब चंदन पूसीको लेने आगे बढ़ा, तो वह उसे देखकर हैरान रह गया । वैसे यह उसकी ही पूसी थी । लेकिन अब वह पहचानी नहीं जाती थी । पूसीकी हालत ठीक कर दी गई थी । अब उसका रूप ही बदल गया था । उसकी धूल भरी मखमली पोशाक अब साफ और चमकदार थी । उसकी चमकीली आंखें, जो उसके गालों-पर ढुलक आई थीं, अब अपनी जगहपर थीं । कान सीधे खड़े थे । रोती पूसीका चेहरा मुस्करा-हटमें बदल गया था ।

चंदनको हैरान देखकर नर्स बोली—"चंदन, तुम्हें खुश देखकर मुझे भी बड़ी खुशी हो रही है । तुम्हारे फूलसे चेहरेको देखकर अस्पतालके बच्चोंको भी पूसीके जानेका दुःख नहीं होगा ।"

चंदन नर्सकी बात सुनता रहा । उसने सोचा—'सभी बच्चे पूसीसे खेलकर कितने खुश हो रहे हैं । और फिर नर्सने तो पूसीकी हालत ही बदल दी है! वह पूसीको इतनी अच्छी तरहसे नहीं रख सकता । जिस खिलौनेको वह संभाल-कर नहीं रख सकता, उसे वह वापस ले जाए या नहीं । पूसी कहीं भी रहे, वह तो बस पूसीको खुश देखना चाहता है. . . और फिर वह तो पूसीसे अकेला ही खेलता था । यहां पूसीको खेलनेके लिए अनेक बच्चे मिलेंगे । इस तरह वह यहां ज्यादा खुश रहेगी । अगर वह इसे यहांसे ले भी गया, तो इसकी हालत फिरसे खराब हो जाएगी । यह सिर्फ एक खिलौने ही की तो बात है । वह इस एक खिलौनेको ले जाकर क्या करेगा? उसके पास तो कई खिलौने हैं । वह इसे नहीं ले जाएगा ।'

यह सोचकर चंदन मम्मीकी तरफ पलटा । मम्मीने चंदनकी आंखोंमें सवालिया निगाहोंसे झांका । एकाएक चंदन बोल उठा—"नहीं नहीं, मम्मी, मैं पूसीको यहांसे नहीं ले जाऊंगा । वह यहां ज्यादा खुश है ।"

मम्मीने उसको गलेसे लगा लिया और बोलीं—"मेरा चंदन कितना समझदार है! तभी तो इतने बच्चोंकी खुशी छीनकर नहीं ले जाना चाहता ।"

तभी चंदनने नर्ससे कहा—"आप पूसीको यहीं रहने दीजिए । आपने उसे बिल्कुल नया बना दिया है । वह यहां ठीक हालतमें रहेगी । और फिर यहां उससे ऐसे बहुतसे भाई-बहन भी तो खेल सकेंगे, जिनके पास खेलनेको खिलौने नहीं हैं । नहीं, मैं पूसीको नहीं ले जाऊंगा ।"

इसके साथ ही भावावेशमें चंदनने पूसीको उठा लिया । थोड़ी देर तक गौरसे देखनेके बाद उसने पूसीका दो बार गीत सुना और अपने हाथ-से उसके मुंहमें एकके बाद एक अनेक बिस्कुट डाले । फिर उसके माथेको चूमा और वापस वहीं रख दिया । अब चंदनका चेहरा उदास नहीं था । वह एक फूलकी तरह मुस्करा रहा था । उसने अपनी मम्मीका हाथ पकड़ा, और नर्ससे यह कहता हुआ अस्पतालसे बाहर आ गया कि वह वहां अपने और भी खिलौने भेजेगा । ●

मोटूराम लपकते आए,
नोट टेंट से खोले;
"चांद लोकका टिकट चाहिए,"
मुंह मटका कर बोले ।

"भारी हूं, आभारी हूंगा,
बहुत गया हूं ऊब;
धरतीपर चलना दूभर है,
वहां उछलते खूब!"

टिकट बांटने वाला बोला,
"भोजन वहां न मिलता,
फिर मत कहना लंघन हों तो,
हाथ नहीं है हिलता!"

मोटूराम निकल लाइन से,
झटपट बाहर आए ।
बच्चों को तब चैन मिल सकी,
अब तक धक्के खाए ।

मोटू बोले, "लड्डू छोड़ूं,
जिन्हें गजानन खाते ।
माखन-मिसरी के खाने को,
माधव दौड़े आते ।"

बबलू बोला, "चलो वजन तो
अपने आप हुआ कम ।
राकेट ज्यादा तेज उड़ेगा,
खतरा रहता हरदम!"

कहा मदन ने, "मोटूजी के
अपने राम अलग हैं ।
दास मलूका के अजगर ये,
मतलब के चौकस हैं ।

"चंद्रलोकमें बच्चों की यह
टोली अब जाएगी ।
क्रीकेट हमें खेलने जाना,
बाल सरसराएगी ।"

कंडक्टर ने रोब दिखाया,
कहा, "सुबह या शाम—
नहीं वहां होती है, बच्चो!
दिन भर तपता घाम ।

"और अचानक ठंडी ठंडी,
हो जाती है रात;
जो कि चला करती हफ्तों तक,
होता नहीं प्रभात ।

"ऊंची-नीची भूमि वहां है,
हवा नहीं मिलती है ।
प्राणी की औकात कहां,
जब घास नहीं मिलती है ।"

टिकू बोला, "हम तत्पर हैं,
हमें न कुछ भी डर है ।
जो भी है, जैसा भी है, पर
वह मामा का घर है ।

"चंद्रलोक से अन्य ग्रहों तक,
यात्रा करना हमको ।
हम सैलानी चलते रहते,
नहीं ठहरना हमको ।"

हर्षाए जब लोग वहां पर,
कुछ को हुआ अचंभा!
मोटूराम बिलैया जैसे,
लगे नोचने खंभा!

रवीन्द्र की स्मृति में प्रकाशित डाक-टिकट

गजराज जैन

महापुरुषोंका सभी देशोंमें समान रूपसे आदर होता है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी ऐसे ही जगत् प्रसिद्ध महापुरुष थे। वह संसारका सबसे बड़ा 'नोबल पुरस्कार' पाने वाले सबसे पहले भारतीय थे। उनको यह पुरस्कार सन् १९१३ में मिला था। परंतु एक बात शायद हममें से बहुतसे नहीं जानते होंगे कि वह ही सबसे पहले भारतीय महापुरुष हैं जिनकी स्मृतिमें विदेशोंमें डाक टिकट निकाले गए। रवीन्द्र जयंतीके अवसरपर 'पराग'के पाठकोंको रवि ठाकुरकी स्मृतिमें प्रकाशित टिकटोंकी जानकारी दी जा रही है।

इन पांच टिकटोंमेंसे ऊपरके तीनों टिकट विदेशी हैं, जो रवीन्द्रनाथकी जन्म शताब्दीके अवसरपर सन् १९६१ में निकाले गए थे। इनमेंसे पहला टिकट अर्जेण्टाइनाका है, जो १३ मई १९६१ को निकाला गया था। बैंगनी रंगमें छपे इस टिकटका मूल्य दो पेसोस था। दूसरा टिकट ब्राजील द्वारा २८ जुलाई १९६१ को निकाला गया था। इसका रंग गुलाबी और मूल्य १० क्रुजिरियो था। दक्षिणी अमेरिकाके इन दोनों देशोंके अलावा इस अवसरपर तीसरा टिकट रूस द्वारा ८ मई १९६१ को निकाला गया। काले, खाकी और बैंगनी रंगमें छपे इस तिरंगे टिकटका मूल्य ६ कोपेक था।

नीचेके दोनों टिकट भारतीय हैं। इनमेंसे पहला टिकट १ अक्तूबर १९५२ को संतकवि मालाके अंतर्गत निकाला गया था। गहरे भूरे रंगमें छपे इस टिकटका मूल्य १२ आने था। दूसरा भारतीय टिकट रवीन्द्रनाथकी जन्म-शताब्दीके अवसरपर ७ मई १९६१ को निकाला गया था। केसरिया रंगमें छपे इस टिकटका मूल्य १५ न. पै. था।

टिनोपाल
से सबसे अधिक सफ़ेदी आती है।

आखिरी बार कपड़े खँगालते समय बस ज़रा-सा टिनोपाल मिलाइए; फिर देखिए, आपके सफ़ेद कपड़ों में कैसी चमकदार सफ़ेदी आ जाती है! शर्ट्स, साड़ियाँ, तौलिये, चद्दरें यानी सभी कपड़े और भी अधिक सफ़ेद हो उठते हैं। और इस अधिक सफ़ेदी के लिए आपका खर्च? प्रति कपड़ा पूरा एक पैसा भी नहीं। एक चौथाई छोटा चम्मचभर टिनोपाल बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करने के लिए काफ़ी है।

वैज्ञानिक विधि से बनाया गया व्हाइटनर, टिनोपाल हमेशा इस्तेमाल कीजिए। यह वस्त्रों को किसी प्रकार का नुक़सान नहीं पहुँचाता।

टिनोपाल अब मुहरबन्द एल्युमिनियम फॉइल पैकेट में भी मिलता है।

एक पैकेट बाल्टी भरे कपड़ों को अधिक सफ़ेद करता है। इस्तेमाल करने में आसान, इस पैकेट से न कोई फ़ज़ूलख़र्ची होती है, न कोई झंझट।

टिनोपाल जे. आर. गायगी, एस. ए. बाल स्विट्ज़रलैंड का रजिस्टर्ड ट्रेडमार्क है।
सुईड गायगी लिमिटेड, पो. ऑ. बॉक्स १८२, बम्बई-१ बी आर

Shilpi SG 223 A Hin.

(इस स्तंभमें बच्चोंकी नव प्रकाशित पुस्तकोंका परिचय दिया जाता है, जिससे बच्चे उन्हें पढ़ें और अपनी ज्ञानकी प्यास बुझाएं। परिचयके लिए पुस्तकोंकी दो दो प्रतियां भेजी जानी चाहिएं। —संपादक)

● लालबहादुर शास्त्री (पृष्ठ संख्या ५०); लेखिका : सौ. निर्मला किराणे; मूल्य : एक रुपया; प्रकाशक : गो. म. किराणे, सी-२३, अल्ट्रा सोसायटी, माहीम, बम्बई– १६।

एक साधारण परिवारमें जन्म लेकर भी कोई अपनी लगन, मेहनत, सादगी, त्याग और सेवासे भारत जैसे महादेशका प्रधान मंत्री बन सकता है, यह स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्रीने सिद्ध कर दिखाया था। वह इतने बड़े पद तक कैसे पहुंचे? लोगोंमें इतनी जल्दी इतने लोकप्रिय क्यों हो उठे? संसारके बड़े बड़े नेताओंके विश्वासपात्र बननेके लिए ऐसा उन्होंने क्या कर डाला? केवल १८ महीनेके अपने शासन-कालमें इस दुबली-पतली देह और नन्हे कदके आदमीने ऐसा क्या कर दिखाया कि जनताके हृदयमें वह सदाके लिए समा गए? इसी प्रकारके अनेक प्रश्नोंके उत्तर बालकोंके लिए लिखी गई उनकी इस जीवनीमें मिलेंगे।

लेखिका यद्यपि मराठी भाषा-भाषी हैं लेकिन फिर भी उन्होंने भाषा और शैलीको सरल व सुबोध रखनेका प्रयत्न किया है। बच्चोंके लिए लिखी गई लालबहादुर शास्त्रीकी यह छोटी-सी जीवनी एक अच्छा प्रयास है।

पुस्तककी साज-सज्जा, छपाई-सफाई अच्छी है। जगह जगह फोटो भी दिए गए हैं, जिससे पुस्तककी उपयोगिता बढ़ गई है। मूल्य उचित है।

● देशकी मशालें (पृष्ठ संख्या ६७); लेखिका : प्रेमलता अग्रवाल; मूल्य : १८० पैसे; प्रकाशक : शकुन प्रकाशन, ३६२५ सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली।

प्रस्तुत पुस्तक 'देशकी मशालें' में १२ ऐसी भारतीय महिलाओंकी जीवन-गाथाएं दी गई हैं जिन्होंने अपने देश, धर्म अथवा कर्तव्यके लिए सब कुछ निछावर कर दिया था। इनमें कुछ महिलाएं पौराणिक युगकी हैं, तो कुछ शुद्ध ऐतिहासिक हैं और तीन ऐसी हैं जिनका संबंध वर्तमान युगसे है—उनके नाम हैं कस्तूरबा, सरोजिनी नायडू और इन्दिरा गांधी। शेषमें सीता, सरस्वती, सावित्री, अपाला, पद्मिनी, अहिल्याबाई, देवलदेवी, मीराबाई और लक्ष्मीबाईका नाम आता है।

सभी जीवनियां रोचक हैं। यों लेखिकाने इसे विशेषकर बालिकाओंके लिए लिखा है, लेकिन बालकोंके लिए भी ये कम उपयोगी और प्रेरक नहीं हैं।

पुस्तकमें प्रसंगानुसार चित्र भी दिए गए हैं। छपाई, सफाई अच्छी है और मूल्य भी अधिक नहीं मालूम होता।

● हर दिन एक कहानी (पृष्ठ संख्या ६४); लेखक : रामकुमार 'भ्रमर'; मूल्य दिया नहीं; प्रकाशक : शिक्षण संस्थान, १२–बी प्रह्लाद मार्केट, नई दिल्ली–५।

इस पुस्तकमें कथाकार श्रीरामकुमार 'भ्रमर'की खास तौरसे बच्चोंके लिए लिखी गई सात कहानियां संग्रहीत हैं। मनोरंजनके साथ साथ कुछ सिखाना इन कहानियोंका उद्देश्य है। कहानियोंके शीर्षक हैं— वीर बालक राजा, पोला बांस, कर्जकी अदायगी, सोनेका गिलास, जैसी करनी वैसी भरनी, अपना अपना धर्म और शैतानीका परिणाम।

इन सातों कहानियोंको बच्चे नानीसे सात दिनों तक सुनते हैं। इसलिए पुस्तकका नाम 'हर दिन एक कहानी' रखा गया है।

सभी कहानियां रोचक हैं। कर्जकी अदायगी और सोनेका गिलास 'पराग' के पिछले अंकोंमें छपकर पाठकोंमें खूब लोकप्रिय हो चुकी हैं।

सभी कहानियोंकी भाषा और शैली सरल और सुबोध है। छपाई-सफाई अच्छी है।

—लक्ष्मीचंद्र गुप्त

● मिलिन्द (बाल-उपन्यास मासिक); लेखक : रत्नप्रकाश शील; प्रकाशक : मिलिन्द, ३७४६ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली– ६।

किसी शहरमें एक गरीब किसान रहता था। उसके चार बच्चे थे। मिलिन्द सबसे बड़ा था। वह चतुर और बहादुर भी था। उससे छोटा था मनोज—मोटा और आलसी। तीसरी थी मंजू—गुड़ियों जैसी प्यारी और चौथा था मुन्ना—एकदम नटखट और शैतान।

इन्हीं चार बच्चोंके साहसपूर्ण, रोमांचक कारनामे हर महीने मिलिन्द मासिकमें उपन्यास बनकर छपते हैं। बच्चोंके एक दोस्त हैं—जादूगर बिनबिल्ला। बच्चे उसे बाबा कहते हैं। हमारे सामने इस समय इस उपन्यासमालाका पहला, दूसरा, तीसरा और चौथा भाग है।

पहले भागमें जीव-जंतुओंके विकासकी कथा है। दूसरे भागमें चारों बच्चे स्काउटिंग सीखते हैं और अनेक जासूसी भरे कार्य करते हैं। तीसरे भागमें समुद्री जंतुओंकी कहानी है और चौथा भाग है देश रक्षाके लिए तत्पर चारों बालकोंके साहसकी कथाका।

'मिलिन्द' का प्रकाशन हिन्दीमें एक मौलिक प्रयास है।

बहुतसे चित्रोंका समावेश जहां इन उपन्यासोंकी सुंदरता बढ़ाता है, वहां वे चित्र मूल कथासे किसी प्रकार संबंधित न होनेके कारण खटकते भी हैं। सभी उपन्यास एक ही लेखकके न होकर यदि हर बार अलग अलग लेखकों से ऐसे प्रयास कराए जाएं, तो उपन्यासोंमें नवीनता और ताजगी ज्यादा आएगी।

—हरिकृष्ण देवसरे

घुड़दौड़ का खेल

— अरुणकुमार

बच्चो, तुमने मेलों-तमाशोंमें लकड़ीके घोड़ों का बना हुआ एक चक्कर तो देखा होगा। इसे अंगरेजीमें 'मेरी-गो-राउंड' कहते हैं और हिन्दीमें कह लो 'घोड़ोंका चक्कर'। जो भी हो, इसके काठके घोड़ोंपर एक एक बच्चा बैठ जाता है। चक्करको चलाने वाला उस बच्चेसे दस पैसे वसूल करता है और जब सब घोड़ोंपर बच्चे सवार हो जाते हैं, तो वह उसे चलाना शुरू करता है। तब लगता है कि काठके घोड़ेपर जादूके देशमें उड़े जा रहे हैं।

यह खेल भी ऐसा ही है। सामनेके पृष्ठपर दो चित्र दिए हुए हैं, उन्हें काट लो। दोनोंको पोस्ट-कार्ड जैसे मोटे गत्तेपर चिपकाओ और सूखनेके लिए किताबोंके नीचे दबा दो। बारह घंटे बाद निकालो और घोड़ोंवाले चित्रको उसकी बाहरी रेखाओंपर काट डालो, जब कि 'अ' केन्द्रवाले चित्रको बाहरी रेखाओंपर काटनेकी आवश्यकता नहीं है। इसे गत्तेके चौकोर टुकड़ेपर चिपका रहने दो। चाहो तो उसके किनारोंको रंगीन कर दो, जिससे देखनेमें सुंदर लगे।

घोड़ोंवाले चित्रको उसकी बाहरी रेखाओं पर ही काटना होगा। इसके बाद गोलेकी गोलाई (परिधि) पर हल्का-सा ब्लेड इस तरह फेरना होगा, जिससे घोड़े कटकर अलग न गिर पड़ें। अब तुम घोड़ोंको आकृति नं. १ की तरह नीचेकी ओर मोड़ दो। अब इसके केन्द्र-बिन्दुपर एक नोकदार पेंसिल (नई-पूरी-सालिम) फंसाओ, जिससे वह नीचे एक इंच निकली रहे। गोलेके कागजका कुछ भाग भी पेंसिलके साथ नीचेकी ओर चला जाएगा। उसे गोंदवाली टेप या पट्टी-से चारों ओरसे पेंसिलके साथ चिपका दो।

तुम्हारा खेल तैयार हो गया। अब २५ रंग-बिरंगे बटन लो और अपने साथियोंको खेलनेके लिए बुला लो। वैसे अपने अलावा सात अन्य साथी तुम बुला सकते हो। नंबर १ के त्रिकोण पर एक बटन रखो, नंबर २ पर दो बटन, नंबर ३ पर तीन बटन। अब आकृति नंबर दोकी तरह 'अ' केन्द्र पर पेंसिलकी नोक रखो। आंखें बंद करलो और घोड़ोंके नामसे मन ही मन घोड़ा चुनकर अपने साथियोंको बता दो। अब धीरे धीरे पेंसिल घुमाओ और आधी मिनिट तक घुमाकर हाथ रोक दो, आंखें खोल दो। देखो तुम्हारा चुना हुआ घोड़ा किसी त्रिकोणको छू रहा है या नहीं। जिस त्रिकोण को छू रहा हो उसके बटन तुमने जीत लिए।

इसी तरह दूसरा, तीसरा, चौथा खिलाड़ी करे, जब तक कि पूरे २५ बटन खत्म न हो जाएं। अब देखो कि किस खिलाड़ीने सबसे ज्यादा बटन जीते हैं। उसीने खेल जीता।

यह ध्यान रखो कि यह रेस नहीं है। जिसने सबसे ज्यादा बटन जीते हैं वह विजेता जरूर कहलाएगा, लेकिन तुम्हारे बटन उसे वापस करने होंगे, जिससे दूसरी बाजी खेली जा सके।

यह खेल तुम्हारे मित्र बहुत पसंद करेंगे। ●

आकृति नं. १

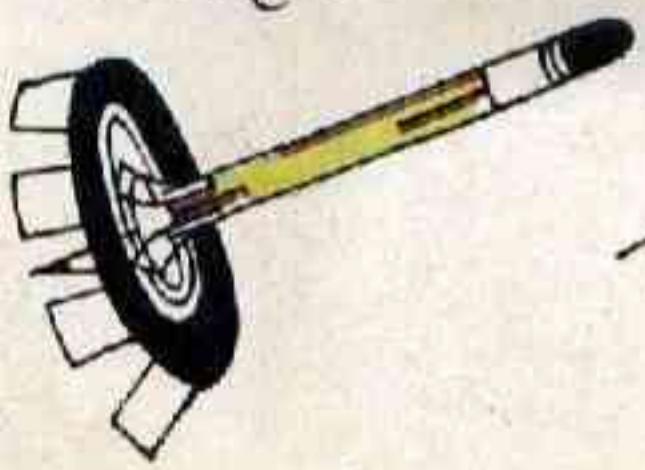

आकृति नं. २

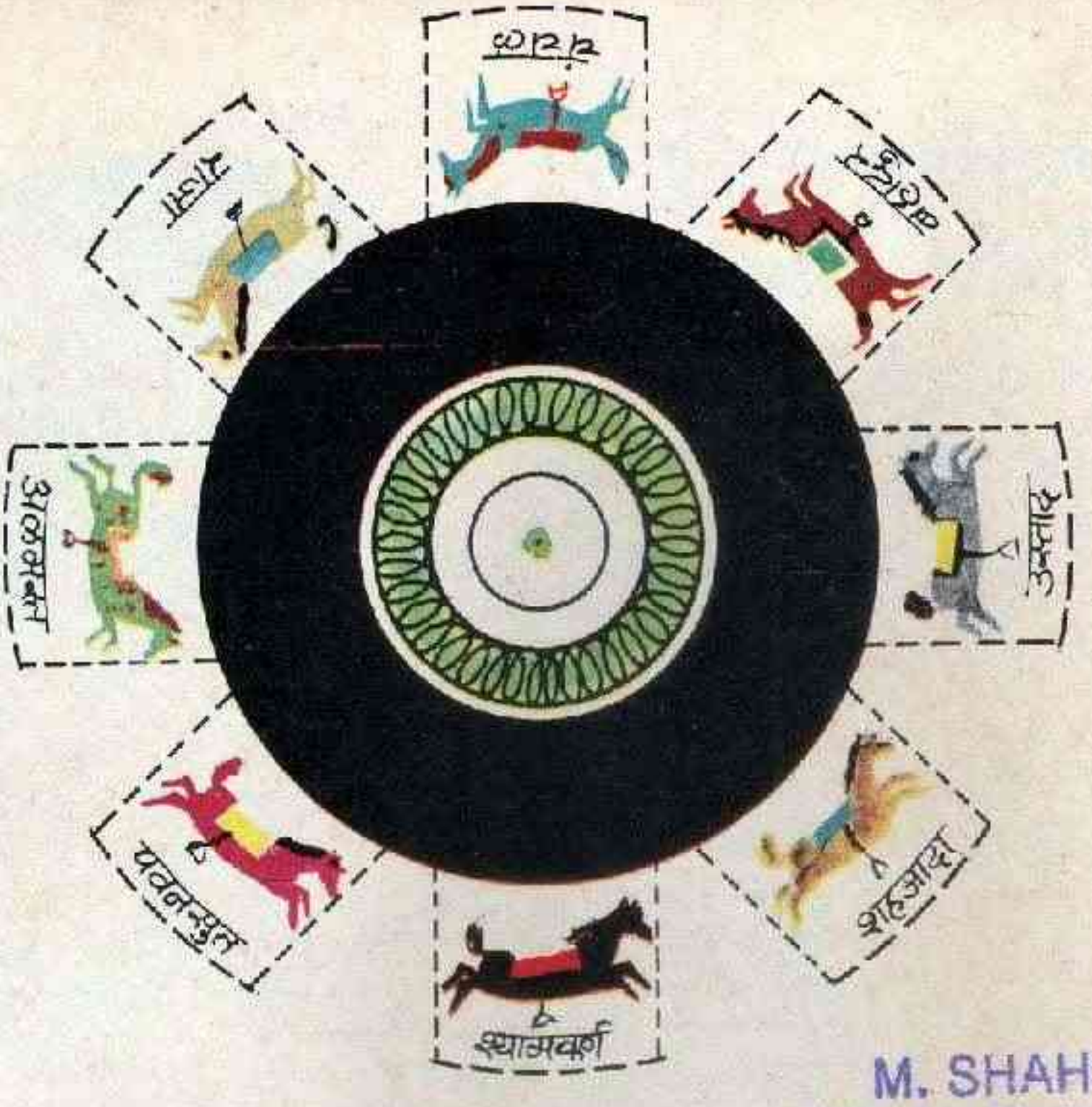

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

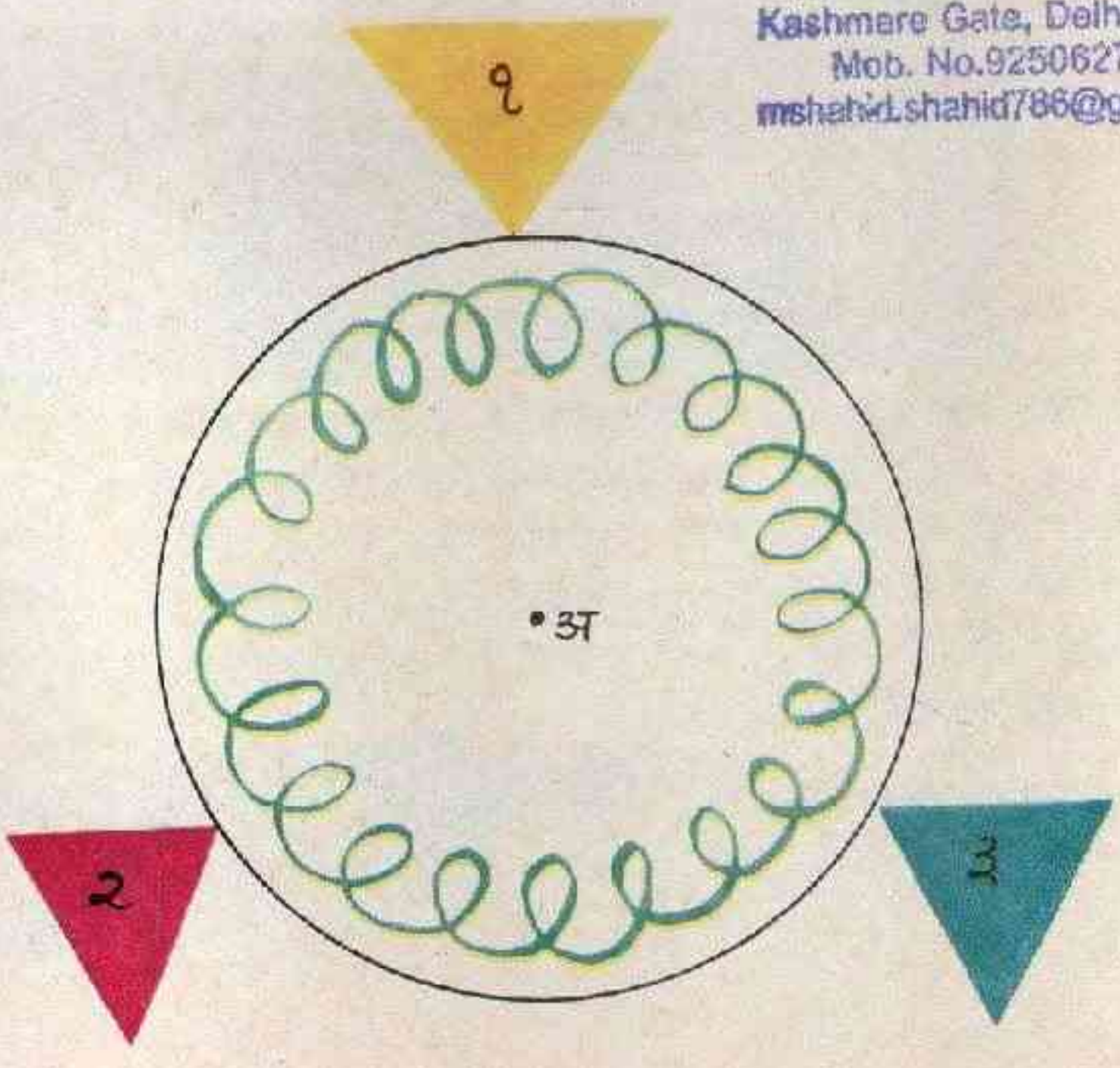

पेप्सोडेण्ट में मिले इरियम प्लस से दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं

यह देखिए किस तरह : केवल पेप्सोडेण्ट में ही वैज्ञानिक विधि से तैयार किया हुआ तत्त्व इरियम प्लस होता है जिसके कारण चमत्कारी झाग बनता है। यह घना, चमत्कारी झाग मुँह के सभी हिस्सों में पहुँच कर अच्छी तरह सफ़ाई करता है। इसमें दाँतों की स्वाभाविक सफ़ेदी प्रकट करने की विशेषता है जिसके कारण दाँत मोतियों की तरह चमक उठते हैं—ऐसे साफ़ और सफ़ेद जैसे कि पेप्सोडेण्ट से ही हो सकते हैं। साथ ही, इससे मुँह में पेपरमिण्ट की सी ठंडक और ताज़गी महसूस होती है।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड
का
एक उत्कृष्ट उत्पादन

JWT.HDL 1633

नोटिस (पृष्ठ ४३ से आगे)

रहे हैं, मैं एककौड़ी नहीं हूं।"

"क्या कहता है? तुझे नहीं पहचानूंगा? तू तो मेरा वह ही एककौड़ी है, दस वर्षमें बिलकुल भी तो नहीं बदला है। वही दुबला-पतला. . ."

अदालतका बाबू बोला, "अच्छा, मेरे पास समय नहीं है। आप एककौड़ी घोष नहीं हैं न?"

"हां, मैं नहीं हूं।"

"अच्छा, तो मैं चलता हूं।"

महितोष बाबू बोले, "मामला क्या है, कुछ जान सकता हूं मैं?"

बाबू बोला, "यह भी क्या कोई पूछनेकी बात है। मामला बहुत सीधा-सादा है। महिचंद्र नामका एक व्यक्ति दस हजार रुपये छोड़कर मरा है। उसकी वसीयतमें लिखा है कि उसकी सारी सम्पत्तिका मालिक एककौड़ी घोष वल्द पीतांबर घोष, साकिन—उत्तर कुंजदत्त स्ट्रीट, कलकत्ता है। उसी नोटिसको जारी करनेके लिए हम आज एक महीनेसे आ-जा रहे हैं। दो बार इन्होंने मेरे चपरासीको खदेड़ दिया। एक-बार तो मेज लेकर मारने दौड़े। सब कुछ मिल रहा है, बस एककौड़ी नहीं मिल रहा है। जाने दो, इस बार रिपोर्ट दे देंगे कि बहुत खोज-बीन करनेपर मालूम हुआ कि इस ठिकानेपर कोई एककौड़ी नहीं रहता है।"

महितोषबाबू बोले, "रकमका क्या होगा?"

"सरकारी फंडमें जमा हो जाएगी।"

एककौड़ीके सिरपर मानों आसमान टूट पड़ा। सत्यानाश! खुद ही अपने हाथों अपने पैरोंमें कुल्हाड़ी मार ली।

अब एककौड़ी अदालतके बाबूके दोनों हाथ पकड़कर जोरसे रो पड़े—"दुहाई, महाशय, मेरा सर्वनाश न करना! मैं ही एककौड़ी घोष हूं, बाल-बच्चे लेकर संसार चला रहा हूं। मैं समझ नहीं सका था। मैं समझा था वही मेमसाहब. . ."

अदालतका बाबू डांटकर बोला, "यह क्या, महाशय, आपने दो हजार बार बोला, आप एक-कौड़ी नहीं हैं! अब रुपयेकी बात सुनते ही आप एककौड़ी घोष हो गए! आपको फौजदारी सिपुर्द किया जाएगा। सात साल जेलकी रोटियां तोड़नी पड़ेंगी, सात साल!"

एककौड़ीका रोना और बढ़ गया। महितोष-को पकड़कर बोले, "महितोष भाई, तुम मेरी सिफारिश करो!"

महितोष बोले, "सरकारी रिपोर्टमें जब प्रमाण हो गया कि तुम एककौड़ी नहीं हो, तब तुम्हें एककौड़ी बताकर क्या जेल जाऊं!"

सब लोग चले गए। एककौड़ी खड़े खड़े अपना सिर पीटते रह गए।

●

उस दिन सवेरे दस भी नहीं बजे थे। अदालत-के सामने खूब भीड़ थी। काफी ठेलमठेल करके अंदर जाकर देखनेमें आया कि वहां कुछ अजीब ही तमाशा है। एककौड़ी हाथ जोड़े है। उसके पीछे एक हाथका घूंघट काढ़े उसकी पत्नी खड़ी है। और उसके पीछे कतार बांधे तीन बेटे जीटू, सीटू और लिट्टू और तीन लड़कियां आलोकवासिनी, दोलोकवासिनी और भूलोकवासिनी आंखोंमें आंसू भरे उदास चेहरे लिए खड़ी हैं। उनके पीछे दो गाएं, एक कुत्ता और पांच-छह-बच्चोंके साथ एक बिल्ली मौजूद हैं।

एककौड़ी चिल्ला चिल्लाकर बोल रहा है—"माई-बाप, हुजूर, मैं ही एककौड़ी घोष हूं। मेरे पीछे मेरा परिवार है। मैं एककौड़ी हूं और वह भी जीवित। इसका प्रमाण—यह मेरी पत्नी और मेरे बेटा-बेटी जो मुझे पिताजी कहते हैं। यह कुत्ता जो मुझे देखते ही अपनी दुम हिलाता है। यह बिल्लीका परिवार, जो मुझे देखकर म्याऊं म्याऊं करने लगता है। हुजूर, खुद ही देख लें . . . इसमें जरा भी झूठ हो, तो जो चोरकी सजा वह मेरी सजा।"

आखिरमें हाकिमके मनमें दया जागी। प्रमाणोंपर विचार करके उसने वसीयतके मुताबिक महिचंद्र घोषकी सम्पत्ति एककौड़ी घोषको देनेका हुक्म सुना दिया।

खबर मिली है कि एककौड़ी घोषने उसी दिन मिस फेदरवेटका मकान ढूंढ़कर उनका पूरा रुपया चुका दिया। किंतु मिस फेदरवेटकी कमर सीधी नहीं होनी थी, सो नहीं हुई! ●

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई अंकोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है, जितना समझा जाता है। इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनकी महावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

कूड़ेराम

गंदे दांत, हाथ हैं मैले,
चढ़ी हुई पैरों पर धूल;
बढ़े हुए नाखून, बाल भी,
कुरसी पर जाता है झूल।

मैया, भैया और गुरूजी,
सब की बातें जाता भूल।
जहां लिखा है 'फूल न तोड़ो',
वहीं नोच लेता है फूल।

जो ऐसे करता है काम,
वह लड़का है कूड़ेराम!

शोभाराम

दांत दूध-से, हाथ फूल-से,
धुले-संवारे जिस के बाल;
कटे हुए नाखून हमेशा,
हर दम चलता सीधी चाल।

बड़े-बड़ों की बातें सुनकर,
नहीं बजाता अपने गाल।
पढ़ने में जो चतुर, खेल में
दिखलाता है नए कमाल।

जिस का सब लेते हैं नाम,
सब का प्यारा शोभाराम!

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

तीन गप्पी

अंधा, बहरा, लंगड़ा मिल कर,
लगे हांकने गप बढ़ बढ़ कर ।

अंधा बोला, "उस पर्वत पर,
एक चढ़ रही चींटी सर सर!"

बहरा बोला, "सच है, भाई,
पड़ती है आवाज सुनाई!"

लंगड़े ने तब कहा अकड़ कर,
"ले आऊं क्या उसे पकड़ कर!"

—नारायणप्रसाद अग्रवाल

www.kissekahani.com

कलकत्ते की सैर

कलकत्ते से गाड़ी आई,
टाफी - बिस्कुट - केले लाई ।

गाड़ी बोली : सी सी सी,
दौड़ो, उसने सीटी दी ।

"चैकर बाबू, हम भी आए ।
आधे आधे टिकट कटाए ।

गाड़ी पर तुम हमें बिठाओ ।
कलकत्ते की सैर कराओ ।"

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

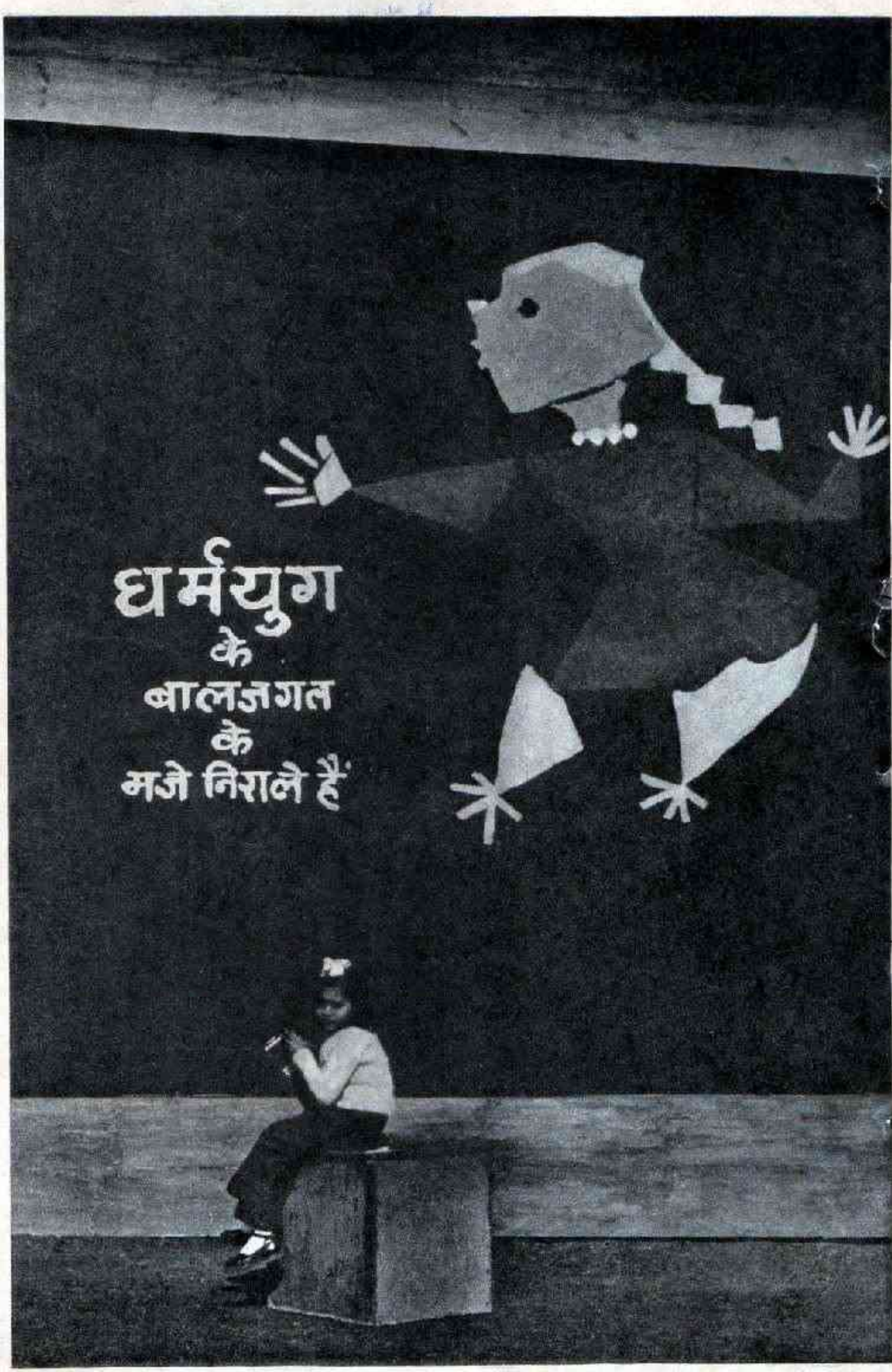
धर्मयुग
के
बालजगत
के
मजे निराले हैं

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४९

बच्चो, नीचेका चित्र है न मजेदार! काश, यह रंगीन होता, तो क्या कहना था! चलो, तुम ही रंग भरकर इसे हमारे पास २० मई तक भेज दो। हां, अगर तुम्हारा खयाल हो कि चित्र की पृष्ठभूमिको तुम अपनी कल्पनासे और ज्यादा उभार सकते हो, तो रंगों द्वारा उसे चित्रित करनेकी तुम्हें स्वतंत्रता है। सबसे अच्छे रंग भरने वाले तीन प्रतियोगियों को एकसे सुंदर इनाम मिलेंगे और उनमेंसे दोके चित्रोंको छापा भी जाएगा। लेकिन रंग भरने वालोंकी उम्र १६ सालसे अधिक नहीं होनी चाहिए और उन्हें 'वाटर कलर'ही उपयोगमें लाने चाहिएं। चित्रके नीचे-वाला कूपन भरकर भेजना जरूरी है। पूर्तियां भेजनेका पता: संपादक 'पराग' (रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४९), पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

यहां से काटो

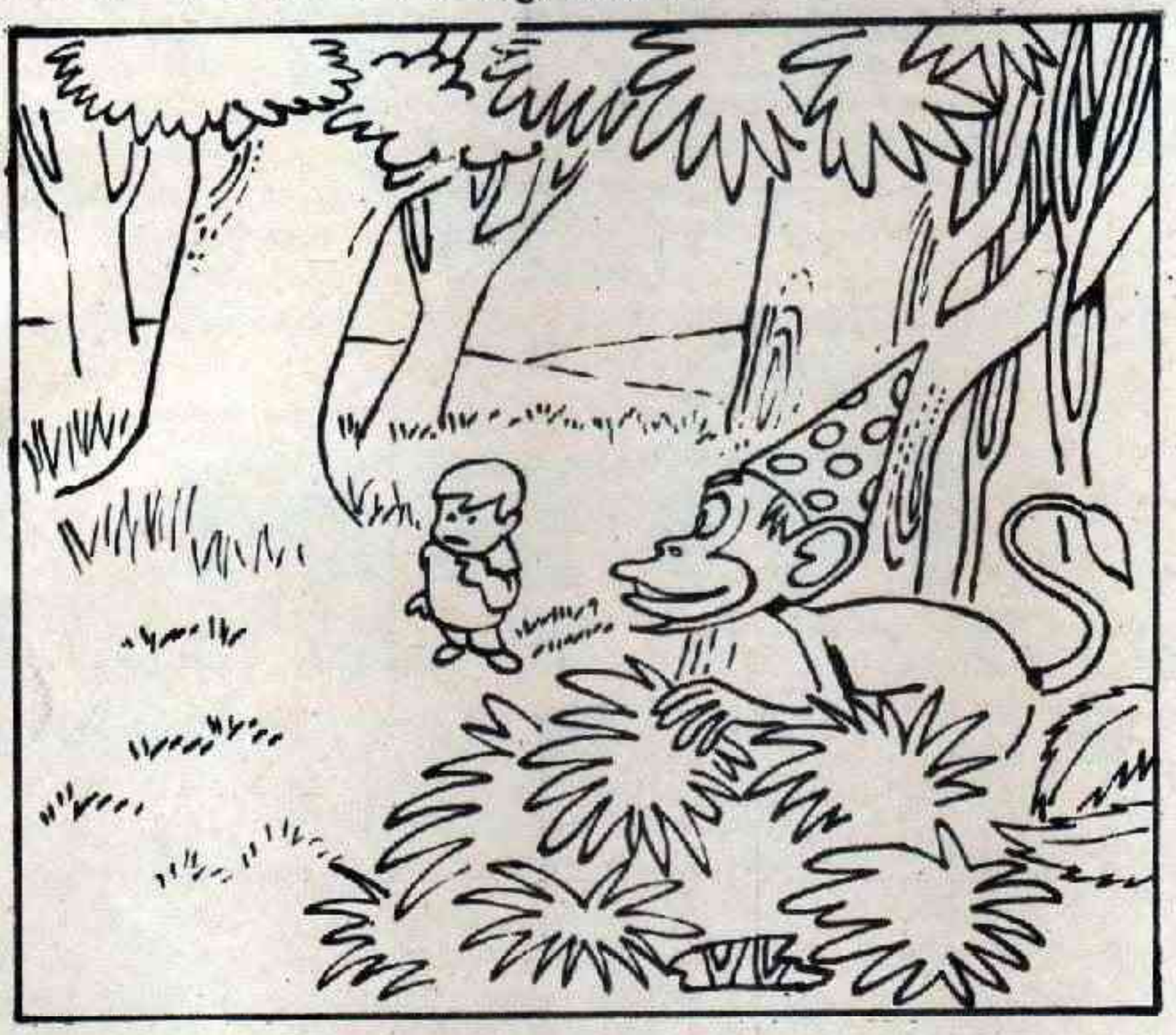

यहां से काटो

यहां से काटो

कूपन

'पराग' रंग भरो प्रतियोगिता-४९

नाम और उम्र ----------

पूरा पता ----------

यहां से काटो

नया ! धारीदार टूथपेस्ट !

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

कीटाणु-रोधक लाल धारियों वाला

सिग्नल

आप के सारे मुँह को साफ़ रखता है !

❶ दाँत साफ़ करता है ❷ सांस को ताज़ा रखता है

❋ लाल धारियों में हैक्साक्लोरोफ़ीन है।

दांतों को स्वस्थ, साफ़ रखने के लिए एक अपूर्व नई सूझ...कीटाणु-रोधक लाल धारियोंवाला सिग्नल टूथपेस्ट आप के सारे मुंह को साफ़ रखता है।

इधर सिग्नल आप के दांत साफ़ करता है, उधर लाल धारियों में मिला हैक्साक्लोरोफ़ीन आप के सांस में ताज़गी ले आता है...क्योंकि हैक्साक्लोरोफ़ीन एक ऐसा संरक्षक तत्व है, जो दुर्गंधकारक कीटाणुओं को फ़ौरन नष्ट कर देता है। और यूं सिग्नल से आप का सारा मुंह साफ़ रहता है। लाल धारियों, बुलबुलों भरे झाग, स्पिअरमिंट के ताज़ा स्वाद और सारे मुंह में, जी हां सारे मुंह में, सफ़ाई के अनोखे अनुभव के कारण सिग्नल आप के सारे परिवार के मन भा जाएगा। आज ही सिग्नल खरीदिये।

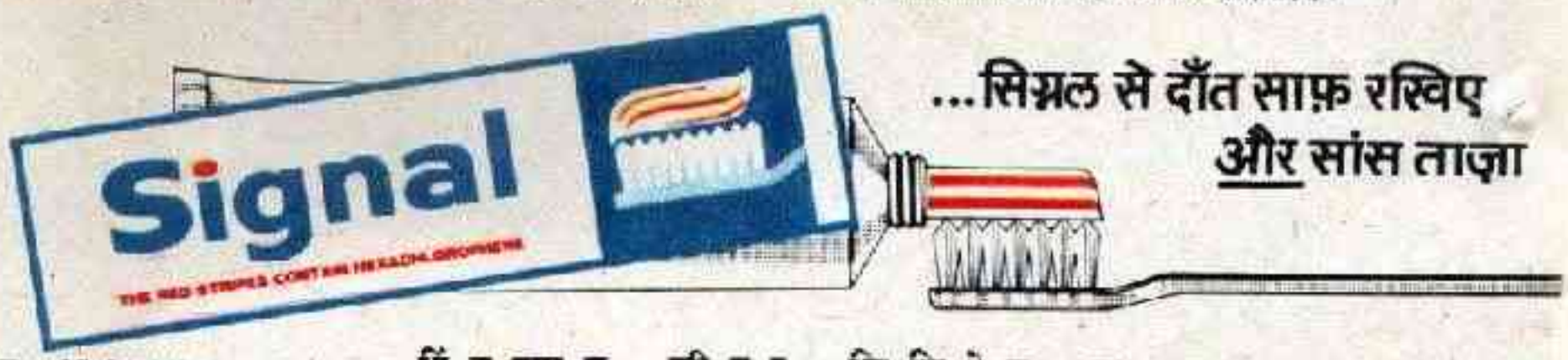

...सिग्नल से दाँत साफ़ रखिए
और सांस ताज़ा

लिटास—SG. 3A-140 HI

हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पादन

रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४६ का परिणाम

'पराग'की रंग भरो प्रतियोगिता नं. ४६ में जिन तीन चित्रोंको पुरस्कार योग्य चुना गया, उनमेंसे दोको यहां प्रकाशित किया जा रहा है। पुरस्कार विजेताओंके नाम और पते इस प्रकार हैं :

● **सुधा गुप्ता, द्वारा श्री एल.सी. गुप्ता, मकान नं. १५७७, नाई वाला गली नं. ३०, करोलबाग, नई दिल्ली–५।**

● **प्रेमचंद्र वैश्य, द्वारा श्री कालीचरन, ४८-७, गोपालभवन, लाठी मोहाल, कानपुर–१।**

● **सिबरतउल्ला अंसारी, द्वारा श्री हयातुल्ला अंसारी एम. एल. सी, ५२, रायल होटल, लखनऊ–१।**

खुशीकी बात है कि इस बार प्रतियोगियोंने जो चित्र भेजे उनके रंगोंके चुनावमें काफी सावधानी बरती। पहला पुरस्कृत चित्र है कुमारी सुधा गुप्ताका। इसमें मूलचित्रमें दिए वातावरणमें और ज्यादा सजीवता लाने के लिए प्रतियोगीने कल्पनासे अच्छा काम लिया है—जैसे पेड़के तनेमें कोटर और चिड़ियाका चित्रण। रंगोंका चुनाव भी चित्रकी पृष्ठभूमिके काफी अनुकूल है।

इसी प्रकार दूसरा पुरस्कृत चित्र है प्रेमचंद वैश्य का। इसमें संध्याके वातावरणमें मेल खाते रंगोंसे चित्र में उभार आ गया है। सादगीमें भी सौंदर्य होता है, यह चित्र इसका सफल नमूना है।

प्रयास करने वाले दूसरे बच्चोंमेंसे रामस्वरूप मुन्ना, कानपुर; मीना श्रीवास्तव, लखनऊ; नवीनानंद नौटियाल, देहरादून; पंकजकुमार गोस्वामी, बीकानेर; महेशानंद शर्मा, पचमढ़ी; शांति चतुर्वेदी, इलाहाबाद; विजयलक्ष्मी शर्मा, जम्मू; स्वराजकुमार, मथुरा; राकेश साहनी, नई दिल्ली; पुष्पारानी, झांसी; वेदप्रकाश, दिल्ली; सुरजाराम रैगर, चुरू; सत्यनारायण गुप्ता, गुहाला (राजस्थान); गोपाल, जोधपुर; अरुणा गोस्वामी, बीकानेर; प्रवीणकुमार, सवाई माधोपुर; दिनेशकुमार सिंह, गुना; अमेशकुमार, हैदराबाद; विभय भटनागर, बीकानेर; रश्मी सक्सैना, मुरादाबाद; आशालता गंगवार, फतेहगढ़ तथा मनमोहनसिंह नेगी, कानपुरके प्रयास अच्छे रहे। ●

M. SHAHID
H. No.813, Chotta Bazar,
Kashmere Gate, Delhi-110006
Mob. No.9250627395
mshahid.shahid786@gmail.com

आपका टिकट ?

आपका टिकट चेक करने के लिए आगे बढ़ा हुआ यह जाना पहचाना हाथ, और टिकट, टिकट, टिकट की आवाज़ें। ये आवाज़ें बिना टिकट चलनेवालों को भली नहीं लगतीं। ये भले आदमी उस जगह को घेर लेते हैं जो सच पूछिए तो आपकी है। ये मुफ्त का मज़ा लेने वाले लोग रेलों और राष्ट्र की कड़ी मेहनत का हक मार लेते हैं। इन्हें पकड़ना आसान है अगर आप सब, जो कानून के पाबन्द हैं, डिब्बों में और खास कर स्टेशन से बाहर निकलते समय अपने टिकटों और सीज़न टिकटों को दिखाने के लिए तैयार रखें।

पश्चिम रेलवे

इंद्रजाल कॉमिक्स

टाइम्स आफ इंडिया प्रकाशन

मूल्य: ६० पैसे

रोमांचकारी साहस

महाबली वेताल अकेला ही दढ़ियल दादा और उसके दल का मुकाबला करता है। उनमें जमकर भयंकर युद्ध होता है! अंत में महाबली वेताल को शस्त्रविहीन होना पड़ता है और जब दढ़ियल दादा तलवार उठाकर उस पर झपटता है, तब रानी नटाला की सांस जहां की तहां रुक जाती है! फिर क्या होता है, इसके लिए पढ़िए "इंद्रजाल कामिक्स" का अप्रैल अंक, जिसकी बिक्री अब शुरू हो गयी है।

सभी न्यूज-एजेन्टों और पुस्तक-विक्रेताओं से हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, तमिल और बंगाली में प्राप्य।

बेनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, स्वत्वाधिकारी के लिए प्यारेलाल साह द्वारा टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रेस बम्बई में मुद्रित और प्रकाशित तथा आनंदप्रकाश जैन द्वारा संपादित; पो. आ. बाक्स २०७, दिल्ली ऑफिस ७, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली–१; कलकत्ता ऑफिस : १३/१ और १३/२, गवर्नमेण्ट प्लेस ईस्ट लन्दन ऑफिस : ३, अल्बे मार्ले स्ट्रीट, डब्ल्यू १

REGD. No. MH 468

मज़बूत
दाँत
मधुर
मुस्कान

बिनाका फ़्लोराइड

टूथपेस्ट का
चमत्कार

कई देशों में स्वास्थ्य के
सरकारी रक्षक जनता के
पीने के पानी को "फ़्लोरिनेट"
करते हैं। इससे दाँत मज़बूत
बनते हैं और सड़न से
सुरक्षित रहते हैं।
दाँतों की ऐसी रक्षा पहली बार
भारत में सीबा की एक
वैज्ञानिक दाँतों की मन्जन से
की जा सकती है।

C I B A